

मूल्य : दो रुपये (२००)  
 प्रथम संस्करण : जुलाई १९२७  
 आवरण : नरेन्द्र श्रीवास्तव  
 प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली  
 मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली



## शेक्सपियर

विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० में स्ट्रैटफोर्ड-अन-एवोन नामक स्थान में हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय में बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नहीं किया। १५८२ ई० में शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बड़ी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नहीं था। महारानी एलिजाबेथ के शासनकाल में १५८७ ई० में शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक कम्पनियों में काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्रायः समकालीन यह कवि यही आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाये। १६१२ ई० में उसने लिखना छोड़ दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० में उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य में अपना सानी सहज ही नहीं पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्रायः हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे हैं, कविताएँ अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं—जूलियस सीजर, अर्थेलो, मैकबैथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दु.खान्त), ग्रीष्म-मध्यरात्रि का स्वप्न, वेनिस का सौदागर, वारहवी रात, तिल का ताड़ (मच एंडू अब्राउट नथिंग), शीतकाल की कथा, तूफान (सुखान्त) । इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक हैं तथा प्रहसन भी हैं । प्रायः उसके सभी नाटक प्रसिद्ध हैं ।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओं को बड़े ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है । उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते हैं । जिस भाषा में शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद नहीं है वह भाषाओं में कभी नहीं गिनी जा सकती ।

# भूमिका

जूलियस सीजर एक दुःखात नाटक है। शेक्सपियर ने इसे अपने साहित्यिक जीवन के तीसरे काल सन् १६०१ से १६०४ ई० के बीच लिखा था जबकि उसमें निराशा, वेदना और तिक्तता अधिक मिलती है।

कथा का स्रोत सर टॉमस नार्थ द्वारा अनूदित 'प्लूटार्क की सीजर, ब्रूटस तथा एन्टोनी की जीवनियाँ' नामक पुस्तक से लिया गया है। प्लूटार्क ईसवी पहली शती का यूनानी लेखक था। उसने अनेक प्रसिद्ध ग्रीस तथा रोम निवासियों के जीवन-चरित्र लिखे थे। सर टॉमस ने प्लूटार्क की ग्रीक भाषा की रचना के एक फ्रेच अनुवाद से अनुवाद किया था। फ्रेच अनुवादक का नाम जेक्विस् अमयोत् था। वह ऑक्जियर का पादरी था। इसी स्रोत से कथाएँ लेकर शेक्सपियर ने अपने तीन नाटक लिखे हैं—जूलियस सीजर, एन्टोनी एण्ड क्लियो-पैट्रा तथा कोरियोलैन्स। १५७८ ई० में अनूदित 'गृहयुद्ध' नाटक एपियन के इतिहास से भी जूलियस सीजर में मदद ली गई है। कुछ लोगो का मत है शेक्सपियर से पूर्व स्टॉलिंग ने अगरेजी में जूलियस सीजर कथानक पर नाटक लिखा था।

जूलियस में मध्यकालीन विश्वासो के अनुकूल भूत-प्रेतो में भी विश्वास प्राप्त होता है। शेक्सपियर में भूत तो अन्यत्र भी आते हैं।

मूलतः यह एक राजनैतिक नाटक है, जिसमें स्त्रीपात्रियों का विशेष महत्त्व नहीं है। किंतु फिर भी यह अपने बहुपात्रो

को लेकर भी एक आकर्षक नाटक है । इसमें राज्य, प्रजा और स्वतन्त्रता के प्रश्न पर गहरा विवेचन किया गया है । राजनीति में भी व्यक्तिविशेष का महत्त्व दिखाने में शेक्सपियर ने कमाल किया है ।

ब्रूटस का खलनायकत्व ऐसी कुशलता से चित्रित है कि उसे देखकर घृणा नहीं होती, किंतु वेदना से हमारा हृदय व्याकुल हो उठता है । सीज़र तो बीच में ही मर जाता है, किंतु लेखक ने अंत तक ऐसा चित्रण किया है कि मरने पर भी वही हमारी आँखों के सामने रहता है और इस प्रकार नायक की अनुपस्थिति में भी नायक अनुपस्थित-सा नहीं दिखाई देता । यह इस नाटक की विचित्र सफलता है ।

जूलियस सीज़र मनुष्यों के स्वार्थी और आवेशों का ही नहीं, न्याय और सापेक्षसत्यो का एक अत्यन्त आकर्षक प्रदर्शन है ।

—रांगेय राघव



# पात्र-परिचय

जूलियस सीज़र

श्राक्टेवियस सीज़र

माक्स ऐन्टोनियस

एम० एमीमलियस लैपीडस

सिसरो

पब्लियस

पौपोलियस लेना

सीज़र की मृत्यु के उपरान्त  
शक्ति ग्रहण करने वाले  
त्रिनायक

सिनेट के सदस्य

माक्स ब्रूटस

कैशस

कास्का

ट्रैबोनियस

लिगारियस

डेसियस ब्रूटस

मैटैलस सिम्बर

सिन्ना

जूलियस सीज़र  
के विरुद्ध  
पडयन्त्र रचने  
वाले

पलेवियस

मेरुलस

स्वीडस का

आटिसीडोरस

सिन्ना

न्यायकर्ता

काव्यशास्त्र का अध्यापक

: दूसरा एक कवि

लूसिलियस  
टिटीनियस  
मेसाला  
तरुण केटो  
वोल्मनियस  
भविष्यवक्ता

} ब्रूटस तथा कैशस  
के मित्र

वारा  
क्लीटस  
क्लाँडियस  
स्ट्रेटो  
लूशियस  
डार्डेनियस

} ब्रूटस के  
सेवक

पिन्डारस  
कैल्पूरनिया  
पोर्शिया

कैशस का सेवक  
सीजर की पत्नी  
ब्रूटस की पत्नी

[सिनेट के सदस्य, नागरिक, रक्षक, सेवक इत्यादि ।]







# पहला अंक

दृश्य १

[रोम की एक गली]

[प्लेवियस, मेरुलस तथा कुछ साधारण\* लोगो का प्रवेश]

प्लेवियस : चले जाओ ! काहिलो ! अपने-अपने घर जाओ । आज क्या कोई आम छुट्टी का दिन है कि तुम त्यौहार का-सा आनंद मना रहे हो ? क्या तुम यह नहीं जानते कि काम के दिन तुम जैसे कारीगरों को अपने पेशे के औजारों के बिना राहों पर नहीं घूमना चाहिये ? (एक से) ऐ, बोलो ! तुम क्या काम करते हो ?

एक साधारण : श्रीमान् प्रसन्न हों, मैं बढई हूँ ।

मेरुलस : बढई हो ! बताओ तब तुम्हारा चमड़े का लबादा और पैमाना कहाँ है ? आज तुम अपने अच्छे से अच्छे कपड़े क्यों पहने हुए हो ? (दूसरे से) ऐ तू बता ! तू क्या करता है ?

दूसरा साधारण : झूठ क्यों बोलूँ श्रीमान्, मैं अच्छे कारीगर के सामने, एक मामूली अदना चमार ही हूँ ।

मेरुलस : अरे करता क्या है वह सीधे-सीधे नहीं बताता ! इधर-उधर की बातें क्यों मारता है ? जल्दी बोल ।

दूसरा साधारण : श्रीमान् असली बात बताता हूँ । मैं तलों की मरम्मत किया करता हूँ । मुझे अपने पेशे में कोई बुराई दिखाई नहीं देती ।

---

\* रोम में दो तरह के लोग होते थे—एक नागरिक दूसरे साधारण प्रजा के लोग ।

मेरुलस : क्या कहा बदजुबान ! क्या पेशा बताया ? साफ-साफ क्यों नहीं बताता ?

दूसरा साधारण : श्रीमान् मुझ पर गुस्सा न हो । अगर आप नाराज होंगे तब भी मैं आपकी मरम्मत करके ठीक कर दूँगा ।

मेरुलस : क्या कहा ? इतनी हिम्मत ! आ मुझे ठीक कर ।

दूसरा साधारण : आपको नहीं श्रीमान् ! मेरा तो मतलब आपकी जूतियों से था ।

प्लेवियस : अच्छा । तब तुम मोची हो ?

दूसरा साधारण : हाँ श्रीमान् ! मेरी रोज़ी तो सुतारी से ही चलती है । न मैं किसी व्यापारी के मामले में पड़ता हूँ, न मुझे किसी औरत से ही काम पड़ता है, मेरी तो बस सुतारी है । झूठ क्यों बोलूँ श्रीमान् ! मैं तो जूतों की चीर-फाड़ करता हूँ । उन्हीं का इलाजी हूँ । जब वे खतरे में पड़ जाते हैं तब मैं उनका इलाज करता हूँ । जो भले आदमी चमचमाते जूते पहन कर निकलते हैं उनके पाँवों को घेर कर मेरी ही कारीगरी चलती है ।

प्लेवियस : फिर तुम अपनी दूकान पर नजर क्यों नहीं आते ? तुम सड़क पर इन लोगों के नेता बन कर क्यों घूम रहे हो ?

दूसरा साधारण : झूठ क्यों बोलूँ श्रीमान् ! मेरी मशा है कि इनके चल-चलकर जूते फट जायें और मुझे और घधा मिले । पर सच्चाई यह है कि हम सब सीजर को देखने के लिये, उनकी जीत पर आनंद मनाने के लिये आज त्यौहार मना रहे हैं ।

मेरुलस : किसके लिये आनंद ? वह कौन-सी विजय प्राप्त करके घर लौट रहा है ? अपने रथ के पहियों में बाँध कर वह कौन-से वदियों को ला रहा है ? अरे बेवकूफ़ो ! तुम जड़ हो ! तुम

पत्थर से भी गये-बीते हो ! महानगर रोम के कठोर हृदय क्रूर निवासियो ! पोम्पी की याद है ? कितनी बार तुम दीवालों, मकानों, मीनारों और चिमनियों पर चढ़कर अपने बच्चों को गोदियों में लेकर रोम की सडकों से महान् पोम्पी को निकलते देखने के लिये धैर्य और आशा को हृदय में धारण कर खड़े नहीं रहे हो ? सारे-सारे दिन तुमने उसकी प्रतीक्षा की थी ! और जब तुमने उसका रथ देखा तब क्या तुमने तुमुल जयध्वनि नहीं की ? तुम्हारे जय-निनाद से टाइबर नदी की लहरे थरती थी और प्रतिध्वनि उसके गहरे कगारों में बजा करती थी। और आज तुम अच्छे कपड़े पहन कर निकले हो ? आज तुम छुट्टी मना रहे हो ? और आज तुम उसी के पथ में फूल बिछाने को आतुर हो रहे जो पोम्पी के पुत्रों को पराजित करके आ रहा है ! चले जाओ ! भाग कर घर जाओ और घुटनों पर गिर कर देवताओं से अपने अपराध के लिये क्षमा याचना करो ताकि तुम्हारी कृतघ्नता का अवश्यम्भावी दण्ड कम से कम कुछ समय को टल जाये ।

फ्लेवियस : मेरे अच्छे दोस्तों ! जाओ ! तुम सब जाओ और अपने जैसे सब आदमियों को टाइबर नदी के तीर पर निमज्जित करो और वहाँ इस पाप के प्रायश्चित्त के लिये इतने आँसू बहाओ, इतने आँसू बहाओ कि नदी की धारा उमड़ कर किनारों को डुवा दे ।

[सब लोगों का प्रस्थान]

देखो ! उनकी निम्न प्रवृत्ति कितनी प्रभावित हुई ? सब चुपचाप चले गये ! उन पर अपराध की भावना छा गई ! तुम उस रास्ते से राजधानी को जाओ और मैं इधर से जाता हूँ ।

अगर कही तुम्हे सीज़र की मूर्तियों पर सजावट दिखाई दे तो उस सबको हटवाते जाना ।

मेरुस : क्या ऐसा करना हमारे लिये उचित होगा ? जानते हो न कि आज वैसे लुपरिकल का उत्सव भी है ?

प्लेवियस : होने भी दो ! सीज़र की मूर्तियों पर कही भी विजय-चिह्न बाकी नहीं रहने पावें ! मैं राहों से लोगो को हटाऊँगा और यदि तुम्हे कही भीड़ मिले तो तुम भी उसे बिखरा देना ! सीज़र के पक्षों में से यह उगते हुए पर अगर नुचते रहेंगे तभी ठीक रहेगा, वरना वह आकाश में इतना ऊँचा उठ जायगा, इतनी ऊँचाई पर उड़ेगा कि मनुष्य के दृष्टि-पथ से ओझल हो जायेगा और हमें सदा दासत्व के आतंक से ग्रस्त रहना पड़ेगा ।

[प्रस्थान]

## दृश्य २

[एक सार्वजनिक स्थान]

[तूर्यनाद । सीज़र और एन्टोनी (एन्टोनियस) का प्रवेश । दौड़ होने वाली है । कैल्पुनिया, पोर्शिया, डेसियस, ब्रूटस, कॅसस और कास्का तथा एक भीड़ का प्रवेश । भीड़ में एक भविष्यवक्ता भी है ।]

सीज़र : कैल्पुनिया !

कास्का : शान्ति ! शान्ति ! सीज़र बोलते हैं ।

[संगीत रुकता है ।]

सीज़र : कैल्पुनिया !

कैल्पुनिया : आज्ञा स्वामी !

सीज़र : जब एन्टोनियस दौड़ने को हो तो तुम उसके रास्ते में खड़ी हो जाना ! एन्टोनियस !

ऐन्टोनियस : सीजर ! मेरे स्वामी !

सीजर : ऐन्टोनियस ! दौड़ते समय तुम कैल्पूरनिया को छूना नहीं भूल जाना क्योंकि बड़ो का कहना है कि इस प्रकार की पवित्र दौड़ में यदि कोई बाँझ स्त्री छू ली जाये तो अवश्य ही उसका दोष हट जाता है ।

ऐन्टोनियस . मुझे याद रहेगा श्रीमान् सीजर ! जब सीजर कहता है कि ऐसा करो, तो उसे किया हुआ ही मान लेना चाहिये ।

सीजर : तो चलो । तैयार हो जाओ । कोई रस्म ऐसी न हो कि पूरी हुए बिना रह जाये ।

[संगीत प्रारम्भ होता है ।]

भविष्यवक्ता : सीजर !

सीजर : हमे कौन पुकार रहा है ?

कास्का : सारी ध्वनियाँ मौन धारण कर लो ! शांति ! शांति !

सीजर . उस भीड़ में से हमे किसने पुकारा ? वह आवाज इस सारे संगीत से भी मीठी है ! सीजर कह उसे पुकारने दो, सीजर सुनने को तैयार है ।

भविष्यवक्ता : १५ मार्च को सावधान रहिये !

सीजर : कौन है वह ?

ब्रूटस : एक भविष्यवक्ता आपको १५ मार्च को सावधान रहने को कहता है ।

सीजर : उसे हमारे सम्मुख प्रस्तुत करो ! हम उसे देखना चाहते हैं ।

कास्का . (भविष्यवक्ता से) भीड़ से छँटकर इधर आओ ! सीजर तुमको देखना चाहते हैं ।

[आता है ।]

सीजर : क्या कहते हो तुम ? फिर वताओ !

भविष्यवक्ता : १५ मार्च को सावधान रहना ।

सीजर : वह तो एक स्वप्नदर्शी है जिसे जाने क्या धुन लगी है ।

चलो ! उस पर ध्यान देना व्यर्थ है ।

[तुर्यनाद । ब्रूटस और कैशस के अतिरिक्त सबका प्रस्थान]

कैशस : क्या आप भी लुपरिकल की दौड़ देखने जा रहे हो ?

ब्रूटस : नहीं, मैं नहीं जा रहा ।

कैशस : चलिये न ? मैं विनती करता हूँ ।

ब्रूटस : मुझे खेलों में रुचि नहीं है । ऐन्टोनियस की स्फूर्ति और चपलता का मुझमें अभाव है । मैं तुम्हारे रास्ते में बाधा नहीं डालूंगा कैशस ! तुम जाओ, मैं चला जाऊंगा ।

कैशस : ब्रूटस ! मैं बहुत दिनों से देख रहा हूँ कि अब तुम्हारी आँखों में मेरे लिये वह प्रेम, वह स्नेह नहीं है, जैसा कि पहले था । तुम अपने उस मित्र से भी ऐसी रक्षता से मिलते हो, ऐसे अजनबी-से मिलते हो, जोकि तुमसे इतना प्रेम करता आया है ?

ब्रूटस : मुझे गलत न समझो कैशस ! यदि मेरा व्यवहार कुछ बदल गया है तो अपनी ही चिंताओं के कारण जोकि केवल मुझ तक ही सीमित है । कुछ समय से भावों का संघर्ष मेरे हृदय को मथ रहा है जो मैं किसी को बताना नहीं चाहता । हो सकता है उसी के कारण मेरे व्यवहार में परिवर्तन आ गया हो ! लेकिन इसलिये मेरे मित्रों को तो मुझसे उदासीन नहीं रहना चाहिये । और कैशस ! मेरे मित्रों में तुम सबसे पहले हो जो मेरे इतने निकट हो ! यदि मैं इस समय मित्रों के प्रति उदासीन-सा दिखता हूँ, तब भी उन्हें सोचना चाहिये कि ब्रूटस अपने ही भावों के द्वंद्व में उलझ कर मित्रों से अपने स्नेह को व्यक्त करना तक भूल गया है ।

कैशस : तब तो मैंने तुम्हारे भावों को समझने में भूल की है और इसी कारण से मैंने अपने वे विचार भी तुम्हारे सामने प्रगट नहीं किये जो वास्तव में बड़े ही महत्त्वपूर्ण, गंभीर और लाभदायक हैं। बताओ ब्रूटस ! क्या तुम अपने आपको देख सकते हो ?

ब्रूटस : नहीं कैशस ! आँख अपने आपको तब तक नहीं देख पाती जब तक वह अन्यत्र कोई प्रतिबिम्ब न देखे !

कैशस : यही बात है। तुम्हारे लिये यह सबसे बड़ी वेदना है कि तुम्हारी आँख को ऐसा दर्पण नहीं मिला जिसमें तुम अपना बिम्ब देख सकते, जिसमें तुम अपनी आँखों में छिपी योग्यता को पहचान पाते। उसके बिना तुम्हें अपने महत्त्व का अनुमान ही कैसे हो सकता है ? देवताओं के समान महान सीज़र के अतिरिक्त मैंने रोम के सभी पुरुषों को यह कहते सुना है कि इस कठोर और यातनामय युग में यदि ब्रूटस अपनी योग्यता को स्वयं देख पाता तो कितना अच्छा होता ?

ब्रूटस : कैशस ! तुम मुझे किन खतरों में ले जाना चाहते हो, क्योंकि तुम मुझमें वे बातें भी मुझसे ढूँढ लेने को कहते हो जो कि वास्तव में मुझमें हैं ही नहीं ?

कैशस : भद्र ब्रूटस ! तो सुनने के लिये तत्पर हो जाओ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम अपने बिम्ब को स्वयं ठीक से नहीं देख पाते, मैं ही तुम्हारे लिये दर्पण बनता हूँ ताकि तुम्हारे उन गुणों को प्रगट कर सकूँ जिन्हें स्वयं तुम भी नहीं जानते। किंतु मेरे प्रिय सज्जन ब्रूटस ! मुझमें तुम ईर्ष्या मत कर उठना। यदि मैं साधारण लोगों के साथ हँस-बोल लेता होऊँ, थोड़ी जान-पहचान पर ही कसम खाकर प्रेम दिखाने लगता होऊँ, यदि मैं सामने



करता होऊँ, और तुम मुझे ऐसा समझते हो, तब तो तुम्हें निश्चय ही मुझको भयानक व्यक्ति समझना चाहिये !

[कोलाहल । तूथ्यनाद]

ब्रूटस : यह कैसा शोर है ? मुझे तो संदेह है कि लोग सीज़र को सम्राट बना रहे हैं ।

कैशस : क्या तुम भी भयभीत हो ? क्या ऐसा नहीं होना चाहिये ?

ब्रूटस : मैं यह नहीं चाहता कैशस ! फिर भी मैं सीज़र से प्रेम करता हूँ । लेकिन तुम मुझे क्यों इतनी देर से रोके हुए हो ? क्या कहना चाहते हो तुम मुझमें ? यदि लोक-कल्याण के लिये मेरे लिये एक और सम्मान और दूसरी ओर मृत्यु हो तो दोनों ही मेरे लिये समान रूप से उपेक्षणीय होंगे । यदि मृत्यु के भय से आदर की भावना मेरे लिये बड़ी न हो, तो देवता भी मुझे दी हुई सारी सुविधाओं को मुझसे छीन लें ।

कैशस : मैं जानता हूँ तुममें वह गुण है और इसी लिये मैं तुम्हारी वाह्य रुचियों से भी परिचित हूँ । सम्मान ही मेरी कथा का विषय है । मैं नहीं जानता कि तुम और बाकी लोग इस जीवन के विषय में क्या सोचते हैं ? किंतु अपने लिये कहूँ, किसी के आतंक में जीवित रहने से मर जाना श्रेयस्कर है । मैं भी सीज़र की भाँति स्वतंत्र जन्मा हूँ और तुम भी स्वतंत्र ही जन्मे हो । हम भी उसी की भाँति समृद्ध हैं, उसी को भाँति हममें भी शीत सहन करने की सामर्थ्य है । एक दिन हिल्लोलित-आलोलित टाइबर की स्फीत तरंगों में सीज़र ने मुझे चुनौती देकर पुकारा था कि कैशस ! क्या तुझमें मेरे साथ वहाँ तक तैरने का इस

क्रुद्ध धार मे भी साहस है ? मै तुरंत नदी मे कूद पड़ा था और मैने कहा : 'तुम मुझे पकड़ सकोगे ?' वह मेरे पीछे तैरने लगा । नदी मे विपुल गर्जना हो रही थी और पानी को भीम प्रयत्न से चीरते हुए हम बढे जा रहे थे किंतु निर्दिष्ट गतव्य पर पहुँचने के पूर्व ही वह चिल्ला उठा . 'कैशस ! मुझे बचाओ, अन्यथा मैं डूब जाऊँगा ।' उस समय मैने सीजर को, टाइबर की प्रचंड धारा मे थके हुए क्लात सीजर को, वैसे ही बचाया था जैसे एक दिन हमारे महान् पूर्वज ईनीस ने ट्रॉय की धू-धू करके जलती हुई लपटों मे से निकाल कर अपने कंधो पर उठा कर वृद्ध एन्साइजीज की रक्षा की थी । और आज वही आदमी देवता बन गया है । और कैशस एक साधारण दीन मनुष्य है जो उसके सामने झुके और सीजर उस अभिवादन को स्वीकार करने को अपना सिर तनिक हिला भर दे ? एकवार जब वह स्पेन मे था, तब ज्वर चढ आया था । तब मैने उसे काँपते हुए देखा था, आज जो देवता है, उस दिन वह काँप रहा था, उसके होठो की गुलाबी उड़ गई थी और आज जिन आँखो को देखकर सारा ससार काँपता है उस दिन उनकी ज्योति नष्ट-सी हो गई थी । मैने उसे कराहते सुना था । वह जिह्वा जिससे निकले शब्दो का रोम के पुरुष इतना आदर करते है, जिसके भाषणों को पुस्तको में लिखा जाता है, उस दिन वही जिह्वा एक ज्वर-ग्रस्त वालिका की भाँति करुणा-भरे स्वर से पुकारती थी : 'टिटोनीयस ! मुझे कुछ पीने को दो !' इतना दुर्बल मनुष्य ! अरे देवताओ ! मैं आश्चर्य्य से ग्रस्त हूँ ! कैसे वह अकेला ही विजयी होकर इस भव्य ससार का समस्त आदर और पुरस्कार प्राप्त कर रहा है ?

[कोलाहल सुनाई देता है । तूर्य्यनाद]

ब्रूटस : फिर वही कोलाहल ! सभवतः सीज़र को फिर कोई सम्मान प्रदान किया जा रहा है, यह उसी का कोलाहल है ।

कैशस : एक विशाल पापाण मूर्ति की भाँति वह सब पर छा गया है । सारे ससार को उसने छोटा बना दिया है और हम क्षुद्र लोग उसके विशाल चरणों के नीचे से निकलकर अपने अपमान की कब्रें इधर-उधर ढूँढते फिर रहे हैं । कभी-कभी मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करता है । प्रिय ब्रूटस ! दोष हमारी ग्रह-दशा में नहीं, हममें है । हम ही आधीन प्रवृत्ति के हैं । ब्रूटस और सीज़र । सीज़र नाम में ही ऐसी क्या महानता है ? वही नाम क्यों तुम्हारे नाम से अधिक प्रतिध्वनित हो ? दोनों को साथ लिखो, तुम्हारा कही अच्छा है । दोनों का साथ उच्चारण करो । तुम्हारा ही महाप्राण-ध्वनि है । तोल कर देखो । तुम्हारा ही नाम भारी निकलता है । सीज़र के नाम की भाँति ही ब्रूटस नाम भी स्फुरण भरने में समर्थ है । किसलिये सारे देवताओं के नाम पर सीज़र ही भोजन करता है ? क्या वह इतना महान हो गया है ? धिक्कार है रे युग तुम्हें ! रोम ! तुम्हारे वीरो का लहू वाकी नहीं रहा ! महान् प्रलय के उपरांत कभी भी ऐसा युग नहीं हुआ जब रोम में एक से अधिक महान् पुरुष प्रसिद्ध नहीं रहे हो । जो रोम के द्वारे में बातें करते हैं वे यह कभी नहीं कहते कि उसके भीतर केवल एक ही महान् वाकी है । और आज ! आज रोम में केवल एक ही महान् है । वोलो ! मैंने, तुमने, किसने अपने पिताओं को नहीं सुना कि रोम में व जीवि ग्रमंत्य ब्रूटस ही ऐसा रहे ग

भी स्वीकार कर लिया होता !

ब्रूटस : तुम मुझे चाहते हो, यह मैं जानता हूँ इसमें मुझे कोई सदेह नहीं । मैं कुछ-कुछ समझ रहा हूँ कि तुम मुझसे किस उद्देश्य की पूर्ति चाहते हो । इस युग के विषय में मेरी क्या धारणा है यह तो मैं बाद में बताऊँगा और इस समय न तो स्वयं इस विषय में मैं कुछ कहना चाहता हूँ, और बल्कि यही प्रार्थना करता हूँ कि तुम भी विचलित मत हो । जो तुमने कहा है उस पर मैं विचार करूँगा, जो तुम कहोगे उसे धैर्य से सुनूँगा और फिर हम इस विषय पर समय निकालकर विवेचन करेंगे । तब तक मेरे मित्र ! तुम भी इस पर अच्छी तरह मनन कर लो । ऐसी मँडराती हुई कठोर परिस्थिति में ब्रूटस भी रोम का पुत्र कहलाने की अपेक्षा एक गँवार कहलाना ही अधिक पसंद करेगा ।

कैशस : मुझे हर्ष है कि मेरे निर्वल शब्दों ने थोड़ा-सा प्रभाव डालकर ब्रूटस को अग्नि की एक लपट का आभास दिया है ।

ब्रूटस : खेल समाप्त हो गये और सीजर लौट रहा है ।

कैशस : जैसे ही वे इधर होकर जायें, कास्का का हाथ पकड़ कर इंगित करना, वह अपने स्वभाव के अनुसार स्वयं बता देगा कि आज क्या-क्या हुआ ।

[सीजर और उसके साथियों का फिर प्रवेश]

ब्रूटस : अच्छी बात है, मैं यही करूँगा । लेकिन जरा देखो तो सही । सीजर की भी पर गुस्सा नजर आ रहा है । और बाकी के लोग कैसे सहमे हुए दिखाई देते हैं जैसे अभी डाँट खा चुके हैं । कैल्पूनिया का चेहरा पीला पड़ गया है और सिसरो की आँखें कैसी लाल-सी चमकती दीख रही हैं । वैसा ही लग रहा है जैसा राजधानी में सिनेट अपने विरोधी सदस्यों द्वारा प्रश्न पूछे जाने

पर हो जाता है ।

कैशस : कास्का सारी बातें बता देगा कि क्या हुआ है !

सीजर : ऐन्टोनियस !

ऐन्टोनियस : सीजर !

सीजर : मेरे पास रात को सोने को ऐसे आदमी देना जो मोटे हो और खूब सोते हो । सुंदर, कड़े हुए वालों वाले, पुष्ट देह हो । वह देखो कैशस है न ? अंसंतुष्ट लगता है, पीला-सा चेहरा, थका हुआ । बहुत सोचता है, बहुत गूढ़ चिंता में डूबा रहता है । ऐसे आदमी खतरनाक साबित होते हैं ।

ऐन्टोनियस : आपको इससे डरने की जरूरत नहीं है सीजर । कैशस खतरनाक नहीं है । वह एक अभिजात कुलीन रोम निवासी है और आपके प्रति बहुत वफादार भी है ।

सीजर : क्या ही अच्छा होता यदि वह और मोटा होता । उससे मैं डरता नहीं हूँ । लेकिन यदि तुम्हें भी भय लगता हो तो उस दुबले-पतले कैशस के सिवाय कौन और व्यक्ति है जिससे मैं वचता रहता ? वह बहुत पढ़ता है । वह एक महान् दार्शनिक भी है और वह लोगों के काम देख कर ही उनके उद्देश्यों को पहचान लेता है । वह न तो तुम्हारी तरह खेलों को पसंद करता है न संगीत को ही । वह बहुत कम मुस्कराता है और यदि मुस्कराता भी है तो ऐसा लगता है जैसे वह अपना ही उपहास कर रहा हो कि क्यों वह मुस्करा रहा है । ऐसे लोग अपने से महान व्यक्तिओं को देख कर मन ही मन वैचैन रहते हैं और डरी लिये वे भयानक होते हैं । मैं तो तुम्हें बता रहा हूँ कि किममें डरना चाहिये । मैं स्वयं नहीं डरता क्योंकि मैं सदैव गीजर हूँ । तुम मेरे दाहिने हाथ की तरफ आ जाओ, क्योंकि मैं इस कान

से ज़रा ऊँचा सुनता हूँ। मुझे सच बताओ तुम उसके बारे में क्या सोचते हो ?

[तूर्य्यनाद । सीज़र तथा सब जाते हैं, केवल कास्का रह जाता है ।]

कास्का : तुमने मुझे चोगा खींच कर रोका है। क्या तुम मुझसे कुछ कहना चाहते हो ?

ब्रूटस : बताओ कास्का ! आज ऐसी क्या बात हो गई कि सीज़र इतने उदास दिखाई देते थे ?

कास्का : क्यों, तुम तो उसके साथ हो थे न ?

ब्रूटस : होता तो तुमसे पूछने की जरूरत ही क्या थी ?

कास्का : हुआ यह कि सीज़र को एक ताज भेंट किया गया किंतु उसने उसे हाथ से हटा दिया और लोगो ने इसी पर हर्षध्वनि की ।

ब्रूटस : दूसरी बार शोर किसलिये हुआ था ?

कास्का : इसी कारण से ।

कैशस : वे तो तीन बार चिल्लाये थे । तब तीसरी बार चिल्लाने का क्या कारण था ?

कास्का : यही कारण था । और क्या ?

कैशस : क्या उसे तीन बार ताज दिया गया था ?

कास्का : माता मेरी<sup>१</sup> की सौगंध, यही कारण था । तीन बार उसने मना कर दिया । हर नयी बार वह पहले से भी अधिक नम्र लगता था और तब भी वे चिल्ला उठते थे ।

कैशस : उसे ताज किसने दिया था ?

कास्का . ऐन्टोनियस ने ही तो ।

<sup>१</sup> १. सीज़र के समय में न ईसा हुआ था, न मेरी हुई थी, परंतु शेक्सपियर ने अपने युग में भूल कर यह लिख डाला है ।

ब्रूटस : भद्र कास्का, बताओ न ? किस तरह दिया गया था वह ताज ?

कास्का : विस्तार से तो मैं नहीं बता सकता । चाहे इसके लिये मुझे फाँसी क्यों न लगा दी जाये इसमें बहुत कुछ मूर्खता थी जो मैं पसंद नहीं करता । मैंने उसे ठीक से देखा भी नहीं । मार्क एन्टोनी ने उसे ताज दिया था; न वह ताज ही था, हाँ कुछ थोड़ा चमकती हुई-सी चीज । सीजर ने ताज हटा तो दिया था पर मुझे लग रहा था कि वह ताज चाहता था । उसे दुबारा ताज दिया गया लेकिन उसने फिर भी हटा दिया और फिर भी मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि उसे अपनी उग्नियो से छू लेना चाहता था । तीसरी बार उसे फिर से ताज दिया गया और उसने फिर उसे लेने से इंकार कर दिया । इस बार तो भीड़ ने जोर-जोर से अपने कर्कश हाथों से तालियाँ बजाकर चिल्लाना शुरू कर दिया । भीड़ के लोगो ने अपनी-अपनी पसीने से भीगी टोपियाँ उछाल दी और अपनी लवी-लवी साँसों से ऐसी गर्मी हवा वहाँ फैला दी कि सीजर का तो गला घुटने लगा । वह बेहोश हो कर गिर पड़ा और अपने बारे में मैं तुम्हें बता दूँ कि मैं तनिक भी नहीं हँसा क्योंकि जरा मुँह खोलता तो भीड़ की वह बदबूदार हवा मेरे फेफड़ों तक भर जाती ।

कैसस : सुनो ! मैं प्रार्थना करता हूँ भद्र कास्का जरा धीरे बोलो न ? क्या सीजर मूर्च्छित हो गया ?

कास्का : वह तो ठीक बाजार में गिर पड़ा और उसके मुँह से भाग निकलने लगे । उसकी तो आवाज भी नहीं निकल पाती थी ।

ब्रूटस : हो सकता है उसे इस तरह गिर पड़ने की कोई बीमारी हो ।

कैसस : नहीं ! सीजर में यह बीमारी नहीं है । वह तो मुझमें, तुममें

और सरल हृदय कास्का मे है कि निरंतर हम नीचे गिरते जा रहे हैं।

कास्का : मैं नहीं समझा कि ऐसा कहने से तुम्हारा मतलब क्या है, किंतु इतना मुझे विश्वास है कि सीज़र गिर अवश्य पड़ा था। जिस तरह नाट्य भवनो मे अभिनेताओं के कार्य्यों को देख कर लोग प्रसन्न और अप्रसन्न होते है, उसी प्रकार यदि वहाँ वह लोगो को प्रसन्न करता था तो वे भी कुछ नहीं कहते थे, किंतु यदि वह अपने कार्य्यों से भीड़ को क्रुद्ध कर देता था, असंतुष्ट करता था तो वे लोग दाँत पीसने लगते थे। क्या तुम मुझे झूठा समझते हो ?

ब्रूटस : जब उसे चेतना लौटी तब उसने क्या कहा ?

कास्का : मूर्च्छित होने के पहले उसने देखा था कि उसके ताज को लौटाने से लोग खुश हो रहे थे। उसने अपना वक्ष खोल दिया और उनसे कहा कि यदि कोई चाहे तो उसका गला काट दे। सच, यदि मैं कार्य्यकुशल होता तो तुरत ही उसका गला काट देता, लेकिन इतने ही मे वह गिर पडा। जब उसे होश लौटा तो उसने लोगो से कहा कि यदि मैंने कोई अनकहनी बात कह दी है या कर दी है तो लोग यही समझे कि वीमारी की वजह से उसने ऐसा किया है। मेरे पास तीन-चार औरतें खडी थी। बोल उठी : 'हाय-हाय कैसी अच्छी आत्मा है', मानो उन्होने उसकी कहनी-सुननी को माफ कर दिया। लेकिन यह कोई ध्यान देने योग्य बात नहीं है। सीज़र यदि उनकी माताओ को छुरे से गोद देता तब भी वह उसे माफ कर देती।

ब्रूटस : और इसके बाद ही वह इस प्रकार दुखी होकर आया था ?

कास्का : हाँ।



कैशस : क्या सिसरो ने भी कुछ कहा था ?

कास्का : हाँ उसने कुछ ग्रीक (भाषा) में कहा था ।

कैशस : क्या मतलब था उसका ?

कास्का : मैं तो समझ नहीं सका था । अब जो तुमसे झूठ बोलकर बता भी दूँ तो फिर तुम्हें मुँह कैसे दिखला सकूँगा ? लेकिन जिन्होंने समझ लिया था वे एक दूसरे को देखकर मुस्कराये थे और सिर हिला रहे थे । जहाँ तक मेरा सवाल है वह सब मेरे लिये ग्रीक भाषा थी ।<sup>१</sup> मैं तुम्हें और बहुत-सी बातें बता सकता हूँ । मेरुलस और प्लेवियस ने चूँकि सीजर की मूर्तियों से सजावट को हटावाया था, उन्हें जनता में भाषण देने के अधिकार से वंचित कर दिया गया है । अच्छी बात है । अब विदा दो । और भी कुछ बेवकूफियाँ हुई हैं, परन्तु अब मुझे याद नहीं है ।

कैशस : कास्का ! क्या आज तुम रात को मेरे साथ भोजन कर सकोगे ?

कास्का : नहीं । मैं पहले से अन्यत्र तय कर आया हूँ ।

कैशस : तो कल सही ?

कास्का : हाँ-हाँ, यदि मैं कल भी जीवित रहा, और तुम्हारा यही बना रहा और तुम्हारा भोजन भी खाने योग्य रहा ।

कैशस : अच्छी बात है, मैं कल तुम्हारी आशा करूँगा ।

कास्का : अच्छा । अब विदा ।

[प्रस्थान]

ब्रूटस . कैसा मूर्ख हो गया है यह ? जब पाठशाला में पढ़ता था, तब तो बड़ा चतुर था ।

---

१. अगरेडी का मुहाविरा है, जिसका अर्थ हिंदी में प्रचलित है—यह तो फारसी बोल रहा था अर्थात् मेरे लिये अज्ञान था ।

कैशस : कोई वीरतापूर्ण और महान कार्य हो तो उसे पूर्ण करने में वह अब भी वैसा ही है। हाँ देखने में लगता मूर्ख-सा है, लेकिन क्योंकि बात वह बुद्धिमानों की करता है। इस कठोरता से उसे लाभ ही पहुँचता है क्योंकि लोग उसके शब्दों को और भी सरलता से सह लेते हैं।

ब्रूटस : यह तो सच है। मैं अब तुमसे विदा लेता हूँ। यदि तुम मुझसे अधिक बातें करना चाहते हो तो मैं तुम्हारे घर कल आ जाऊँगा या तुम अगर मेरे घर आ सको तो मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।

कैशस . यही ठीक है, मैं ऐसा ही करूँगा। तब तक तुम इन बातों पर विचार कर लेना।

[ब्रूटस का प्रस्थान]

कैशस : अच्छा ब्रूटस ! तुम सचमुच ही महान हो ! किंतु मैं तो देखता हूँ कि तुम्हारी अच्छाई भी बदलती जा सकती है। अतः महान व्यक्तियों के लिये यही अच्छा है कि वे महान लोगों से ही सबध रखें, क्योंकि कैसी भी दृढ़ता क्यों न हो उसे भी गिराया जा सकता है। सीजर मुझसे कुढ़ता है किंतु ब्रूटस से वह प्रेम करता है। यदि मैं ब्रूटस होता और वह कैशस होता तो वह मुझे इतना प्रभावित नहीं कर पाता जितना मैंने उसे किया है। आज रात मैं उसकी खिड़की से तरह-तरह के हाथों की लिखावट में लिखे पत्र फेंकूँगा ताकि वह समझे कि नागरिकों ने भेजे हैं। उनमें लिखा होगा कि रोम में ब्रूटस के नाम की कितनी प्रशंसा हो रही है और उनमें सीजर की महत्वाकांक्षा का भी वर्णन होगा। इसके बाद देखें सीजर ही कैसे जम बैठता है। या तो हम ही उसे उखाड़ देंगे, या फिर हमें ही आपत्तियों का सामना करना पड़ेगा।

## दृश्य ३

[कड़क और विजली की चमक । एक ओर से नंगी तलवार लिये कास्का और दूसरी ओर से सिसरो का प्रवेश]

सिसरो नमस्ते कास्का । क्या सीजर को पहुँचा आये ? तुम हाँफ क्यों रहे हो ? इस तरह धूर-धूर कर क्यों देख रहे हो ?

कास्का : क्या पृथ्वी को निराधार-सी भोके खाते देखकर तुम आतंकित नहीं हो रहे हो ? सिसरो ! मैंने ऐसे भयानक तूफान भी देखे हैं जब विकराल प्रभंजन ने पृथ्वी में दूर तक गड़े हुए विशालकाय ओक के विस्तृत वृक्षों को भी उखाड़ कर फेंक दिया है । और मैंने ऐसे सर्वभक्षी दुर्दात लोलुप सिंधु भी देखे हैं जिनकी प्रचण्ड उत्ताल तरंगों में घो से टकराने की स्पर्धा से उन्मत्त हो-हो उठती है । किंतु आज तक, आज रात तक मैंने अंगारों की वर्षा करने वाला ऐसा चिल्लाता हुआ तूफान नहीं देखा था । या तो स्वर्ग में गृहयुद्ध छिड़ गया है या मनुष्यों से क्रुद्ध होकर देवजन सृष्टि का सहार करने पर तुल गये हैं ।

सिसरो : क्यों क्या तुमने कोई और भी आश्चर्यजनक बात देखी है ?

कास्का : एक साधारण दास, जिसे तुमने भी देखा है, बाँया हाथ उठाये खड़ा था जो ऐसा धू-धू कर जल रहा था जैसे बीस मंगाले एक साथ जल रही हो, फिर भी न तो उसके हाथ को कुछ अनुभव हो रहा था, न वह जल ही रहा था । इसके अतिरिक्त मैंने एक सिंह को भी अपनी ओर धूरते देखा । वह बिना मुँहसे अटके चला गया लेकिन मैंने तभी से अपनी तलवार नहीं रखी है । और मैंने सैकड़ों स्त्रियों को देखा जो भय से मुमूर्षु हो रही थी । उन्होंने मुँहसे सौगन्ध खा-खा कर कहा कि उन्होंने पथों पर कुछ ऐसे आदमियों को जाते हुए देखा, जिनके चारों ओर

आग की लपटे हरहरा रही थी। कल दोपहर तक ठीक बाजार में बैठा उल्लू बोल रहा था। जब इतने अपशकुन एक साथ ही हो तब क्या मनुष्य को कहना चाहिये कि यह तो प्राकृतिक ध्वनियाँ हैं, इनसे डरने की कोई बात नहीं है ? मेरा तो यही विश्वास है कि जहाँ ऐसे अपशकुन होते हैं वहाँ अवश्य ही दुर्घटनाएँ होती हैं।

सिसरो : सचमुच यह विचित्र समय है। किंतु मनुष्य अपनी ही इच्छा के अनुकूल वस्तुओं को परिवर्तित कर लेता है। यहाँ तक कि वह वस्तुओं के मूल तात्पर्य तक को विस्मृत कर देता है। क्या कल सीजर राजधानी जायेगा ?

कास्का : वह अवश्य जायेगा। क्योंकि उसने ऐन्टोनियस से तुम्हें सूचना भिजवाई है कि वह कल वहाँ जायेगा।

सिसरो : तब विदा कास्का ! ऐसे तूफान में बाहर रहना ठीक नहीं।

कास्का : विदा सिसरो।

[सिसरो का प्रस्थान। कैशस का प्रवेश]

कैशस : कौन है वहाँ ?

कास्का : एक रोम का निवासी।

कैशस : आवाज से तो तुम कास्का लगते हो ?

कास्का : तुम्हारे कान तेज़ हैं कैशस ! आज कैसी रात है ?

कैशस : ईमानदार लोगो के लिये तो यह बड़ी सुहावनी रात है।

कास्का : कौन जानता था कि आकाश इतना भयानक हो उठेगा !

कैशस : जो जानते हैं कि यह संसार पापों और अपराधों से भरा हुआ है वे यह भी जानते हैं कि उसका दण्ड भी मिलेगा। अपनी बात कहूँ ? मैं तो भयानक और डरावनी रातों में गलियों में घूमा हूँ और वज्रों को सहने के लिये अपने वक्ष को खोले रखा

कैशस : किंतु सीजर अत्याचारी क्यों है ? भोले कास्का ! सीजर अतिचारी है क्योंकि वह जानता है कि रोम-निवासी भेड़े हैं । यदि रोम-निवासी इतने भीरु न होते, वह ऐसा सिंह कैसे बन जाता ? विशाल अग्नि को चेताने की इच्छा करनेवाले सदैव व्यर्थ के घास-फूस-तिनको को इकट्ठा करके सुलगाते हैं । रोम-निवासियों की निर्वलता देख कर ही सीजर जैसा कुटिल व्यक्ति अपने यश और गौरव की ज्वाला को प्रज्वलित करना चाहता है । किंतु हाय रे मेरी वेदना ! तूने मुझे कहाँ लाकर खड़ा कर दिया ? शायद मैं ऐसे व्यक्ति से बातें कर रहा हूँ जो स्वेच्छा से ही दास बना हुआ है । तब तो संभवतः मुझे दण्ड का भी भागी होना पड़े । किंतु मैं सशस्त्र हूँ । मेरे लिये कोई भय नहीं, कोई खतरा नहीं ।

कास्का : तुम कास्का से बातें कर रहे हो जो इधर की बात उधर नहीं कहता । लो मेरा हाथ थामो । इन दुःखों का विनाश करने के लिये कर्मठ बनो और देखो कि मेरा पाँव आगे बढ़ने में किसी से भी पीछे नहीं रहेगा ।

कैशस : तब तुम प्रतिश्रुत हुए कास्का । समझ गये न ? मैंने कुलीन और अभिजात तथा मेधावी रोम-निवासियों को तैयार भी कर लिया है कि वे मेरे साथ एक ऐसे सम्मानित कार्य में सहायक हो जिसका परिणाम भयानक भी हो सकता है । मैं जानता हूँ, कि इस समय पोम्पी की विगल मेहराब के नीचे खड़े वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे क्योंकि इस भयानक रात में पथों पर कोई भी चलता-फिरता दिखाई नहीं दे रहा । देखो जैसा कार्य हमने हाथों में उठाया है आकाश भी उसी के अनुरूप खूनी, भयानक और अग्नियों से भरा हुआ-सा विकराल हो उठा है ।

कास्का : थोड़ी देर के लिये इधर हो रहो, कोई बड़ी तेजी से आ रहा है ।

कैशस : यह तो सिन्ना है, मेरा मित्र है । इसे तो मैं इसकी चाल ही से पहचान लेता हूँ ।

[सिन्ना का प्रवेश ।]

कैशस : सिन्ना ! इतनी तेजी से कहाँ जा रहे हो ?

सिन्ना : तुम्हें ही ढूँढ रहा था । क्या तुम्हारे साथ मेटेलस सिम्बर है ?

कास्का : नहीं, यह कास्का है । वह अब हमारी योजना में साथी है ।

क्या वे मेरी प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं सिन्ना ?

सिन्ना : यह अच्छा हुआ । कैसी भयानक रात है । हममें दो या तीन ऐसे हैं जिन्होंने बड़े विचित्र दृश्य देखे हैं ।

कैशस : बताओ सिन्ना ? क्या मेरी प्रतीक्षा की जा रही है ?

सिन्ना : हाँ तुम्हारी राह देखी जा रही है । कैशस ! क्या तुम वीर ब्रूटस को अपनी ओर नहीं कर सकते ?

कैशस : तुम इसकी चिन्ता मत करो । मेरे अच्छे सिन्ना, यह कागज लो और इसे न्यायाधीश की कुर्सी पर रख देना, जहाँ ब्रूटस को यह मिल जायेगा और इसे उसकी खिड़की में फेंक देना, इसे वृद्ध लूसियस जूनियस ब्रूटस की पुरानी मूर्ति पर मोम से चिपका देना । यह सब करके पोम्पी की मेहराब में आ जाना, हम तुम्हें वही मिलेंगे । क्या डेसियस ब्रूटस और ट्रैवोनियस वहाँ पहुँच चुके हैं ?

सिन्ना : मेटेलस सिम्बर के सिवाय वहाँ सब पहुँच चुके हैं । और वह तुम्हें ढूँढने तुम्हारे घर गया है । अच्छा मुझे जल्दी चलने दो ताकि जैसा तुमने कहा है इन कागजों को पहुँचा सकूँ ।

कैशस : उसके बाद पोम्पी के थियेटर में आ जाना !

[सिन्ना का प्रस्थान]

कैशस : चलो कास्का । सूर्योदय से पहले ही हम-तुम ब्रूटस से उसके घर पर ही मिल आये । सौ मे पिचहत्तर तो वह हमारी ओर है ही । एक बार और मिलने पर मैं उसे पूरा ही राजी कर लूंगा । वह हमारी बात मान जायेगा ।

कास्का : ब्रूटस का तो प्रजा के हृदय मे बहुत ही सम्मान है । एक कार्य्य जो हमारे द्वारा पूर्ण होने पर अपराध-सा दिखाई देगा, उसकी उपस्थिति मे या सहायता से होने पर वही ऐसे पवित्र हो जायेगा जैसे रसायनशास्त्री निम्न धातुओं को सुवर्ण बना देता है ।

कैशस : उसको, उसकी योग्यता को और हमे उसकी आवश्यकता को तुमने ठीक ही समझा है । अब चलो । आधी रात बीत गई है और सुबह होने से पहले ही उसे जगा कर हम उसके विषय मे निश्चित हो जायेंगे ।

[प्रस्थान]

## दूसरा अंक

दृश्य १

[रोम । ब्रूटस का वाग]

[ब्रूटस का प्रवेश]

ब्रूटस : अरे लूशियस ! तारो की चाल देखकर मैं नहीं कह सकता कि सुबह होने में कितनी देर और है । लूशियस, सुना नहीं ? काश, मुझमें भी ऐसी ही देर तक गहरी नीद सोने की कमजोरी होती ! अरे क्या समय हुआ, लूशियस ! क्या समय हुआ ? कब जागेगा ? मैं कहता हूँ जाग लूशियस ! जाग उठ !

[लूशियस का प्रवेश]

लूशियस : स्वामी ने मुझे बुलाया ?

ब्रूटस : एक बत्ती मेरे अध्ययन के कमरे में जलाकर रख लूशियस । और मुझे आकर बता ।

लूशियस : जो आज्ञा स्वामी ।

[प्रस्थान]

ब्रूटस : उसकी मृत्यु से ही रोम का उद्धार हो सकता है । वैसे मुझे तो और कोई व्यक्तिगत कारण नहीं दिखाई देता कि मैं उससे घृणा करूँ । किंतु लोकहित के लिये ही मैं उसका निघन ठीक समझता हूँ । उसे राजमुकुट पहनाया जायेगा । क्या इससे उसका स्वभाव ही बदल जायेगा ? यही तो प्रश्न है । खूब धूप निकलने पर ही तो साँप बाँवी से निकलता है और तब हमें सावधानी से चलने की आवश्यकता पड़ती है । राजमुकुट पहनाया जायेगा ? इस प्रकार मैं सोचता हूँ उसमें हमारे द्वारा डक पैदा किये जा रहे हैं, ताकि



वह जब चाहे हमारे लिये खतरा पैदा कर सके। महानता का दुरुपयोग तभी होता है जब शक्ति से दया को विच्छिन्न कर दिया जाता है। और सीजर के बारे में तो सचाई यही है कि वह कार्य-कारण की विचार-शक्ति के स्थान पर भावुकता से ही अधिक काम लेता है। यह तो सर्वविदित सत्य है कि मनुष्य तुच्छता का प्रदर्शन करता हुआ ही महत्वाकांक्षा के सोपान पर चढ़ता है और चढ़ने वाला सामने ही देखता रहता है। किंतु जब वह एक बार ऊपर चढ़ जाता है तब उसी सीढ़ी से पीठ फेर कर आकाश के मेघों में देखने लगता है और तब वह अपने नीचे की वस्तुओं से घृणा करने लगता है, उन्हीं से जिनके द्वारा वह ऊपर चढ़ता है। सीजर भी तो ऐसा ही कर सकता है ? इसलिये हमें उसकी ऐसी उन्नति रोकनी चाहिये। जैसा वह अब है उस पर लाञ्छन लगाने से कोई फल नहीं निकलेगा, अतः हमें इसे यो सोचना चाहिये कि यदि उसे और शक्तियाँ मिलती गईं तो वह और भी खतरनाक साबित होता जायेगा। उसे साँप या अण्डे की तरह समझना चाहिये जो यदि से दिया गया तो उसमें से एक भयानक उत्पाती साँप ही जन्म लेगा और भय का कारण बन जायेगा। उसे तो तब ही नष्ट कर देना चाहिये जब वह एक अण्डा ही हो।

[जूलियस का पुनः प्रवेश]

जूलियस श्रीमान् ! वत्ती आपके कमरे में जला दी गई है और जब मैं चकमक पत्थर के लिये खिडकी को टटोल रहा था मुझे यह (कागज देते हुए) एक मुहर वद लिफाफा पड़ा मिला। मुझे पूरा विश्वास है कि जब मैं सोने गया था तब यह वहाँ नहीं था। ब्रूटस . छोकरे ! तू सोने जा। अभी दिन नहीं हुआ है। क्यों रे !

क्या कल १५ मार्च तो नहीं है ?

लूशियस : मैं नहीं जानता स्वामी !

ब्रूटस जाओ कैलन्डर में देखो और मुझे बताओ ।

लूशियस : जो आज्ञा स्वामी ।

[ प्रस्थान ]

ब्रूटस आकाश के चमकते तारों का ही इतना प्रकाश है कि मैं इसे पढ़ सकता हूँ ।

[ पत्र खोल कर पढ़ता है । ]

ब्रूटस : 'ब्रूटस तुम सो रहे हो, जागो । देखो तुम क्या हो । क्या रोम इत्यादि' - 'बोलो, आक्रमण करो, उद्धार करो !' 'ब्रूटस तुम सो रहे हो जागो !' इस तरह जो मुझे भडकाने की चेष्टाएँ की जाती हैं, उन्हें मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ । 'क्या रोम इत्यादि' - '...क्या अर्थ हो सकता है इसका ? खयाल से इसका मतलब होगा—क्या रोम एक व्यक्ति के आतंक में रहेगा ? कौन-सा रोम ? मेरे पूर्वजों ने ही टारक्विन को रोम की गलियों से खदेड़ दिया था जब कि उसे सम्राट् बनाया जा रहा था । 'बोलो, आक्रमण करो, उद्धार करो ।' क्या मुझसे बोलने, आक्रमण करने और उद्धार करने की प्रार्थना की जा रही है ? रोम ! ओ रोम ! मैं तुझसे प्रतिश्रुत होता हूँ कि यदि उद्धार का प्रश्न आया तो ब्रूटस के हाथों तुम्हें पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा !

[ लूशियस का प्रवेश ]

लूशियस : श्रीमान् ! मार्च के चौदह दिन बीत चुके हैं ।

[ द्वार पर खटखटाहट सुनाई देती है । ]

ब्रूटस : अच्छा । देख । दरवाजे पर जा । कोई खटखटा रहा है ।

[ लूशियस का प्रस्थान ]

ब्रूटस : जब से कैशस ने मुझे पहली बार सीजर के विरुद्ध उकसाया

कास्का : तुम यह मानोगें कि तुम दोनों ही गलती कर रहे हो ! सूर्य उधर ही से निकलता है जिधर मैं अपनी तलवार से इशारे कर रहा हूँ । आजकल वह दक्षिणाभिमुख होता है । आज से दो मास उपरांत वह आकाश में उत्तरकी ओर चढ़ कर निकलेगा जिधर कि यहाँ से राजधानी है ।

ब्रूटस : (लौटकर) आओ, एक-एक कर तुम सब मुझसे हाथ मिलाओ ।

कैशस : आओ ! हममे से प्रत्येक को अपने निश्चय के लिये शपथ खानी चाहिये ।

ब्रूटस . नहीं शपथ नहीं । यदि मनुष्यों के वेदनाग्रस्त मुख, हमारी आत्माओं की व्यथाएं, युग की विकृतियाँ, स्वयं हमें ही शपथ ग्रहण करने को प्रेरित नहीं करे तो हमें इस योजना को नष्ट करके ही रहना चाहिये, ताकि हममे से प्रत्येक घर जाकर सो रहे और अत्याचारों को इतना बढ़ जाने दे कि एक दिन अंत में एक-एक करके सभी उसके शिकार बन जायें । किंतु जैसा कि मुझे विश्वास है कि इनमे से प्रत्येक में उतनी ही दृढ़ता है कि जो निर्वीर्यों को भी स्फुरित कर दे, जो कोमला-कमनीया नारियों को भी वीरता का लौह कवच पहना दे, तो मेरे देशवंधुओं ! हमारे उद्देश्य से बढ़कर हमें प्रेरणा देने की शक्ति और क्या हो सकती है ? वही हमें उद्धार की ओर आगे बढ़ायेगी । एकांत में सम्मिलित रोम के निवासियों के लिये और किस वधन की आवश्यकता है ? उनका तो वचन ही बहुत है । ईमानदारी से बढ़ कर और कौन-सी ईमानदार सौगंध हो सकती है ? या तो हम सब साथ खड़े होंगे, या साथ ही नष्ट हो जायेंगे—यही काफी है । शपथ तो पुरोहित, कायर और कुटिल, जघन्य, नीच, वृद्ध या अत्याचारों का स्वागत करने वाले निर्बल मनुष्य ग्रहण

करते हैं। जिनके विषय में लोग शका करते हैं वे ही अपनी कुटिलताओं को छिपाने के लिये सौगंध खाते हैं। किंतु हम अपने महान कार्य पर और अपनी स्वतंत्र आत्मा पर शपथ के बंधन बांधकर क्यों उन्हें लाछित करें ? हमारे कार्य को, उद्देश्य को शपथ की कोई आवश्यकता नहीं है। की हुई प्रतिज्ञा में से यदि कोई वीर रोम का निवासी तनिक भी विचलित होता है तो प्रत्येक रोम-निवासी के शरीर की प्रत्येक लहू की बूंद पाप का भाग धारण करती है।

कैशस : किंतु सिसरो के विषय में क्या रहा ? क्या उसको हम अपनी ओर मिलाने के लिये उसका मन टटोले ? मेरा विचार है कि उसका हमसे मिलना हमारे लिये बहुत बड़ी शक्ति होगी।

कास्का : हमें उसे किसी प्रकार नहीं छोड़ना चाहिये।

सिन्ना : किसी भी हालत में नहीं छोड़ना चाहिये।

मैटेलस : उसे साथ लेना चाहिये। उसके श्वेत केश हमारे प्रतिप्रजा में सम्मान उत्पन्न कर देंगे। लोग हमारे कार्य की प्रशंसा करेंगे। लोग कहेंगे कि उस वयोवृद्ध की आज्ञा ने ही हमारे हाथों का संचालन किया। उसकी गभीरता में हमारे यौवन का आवेश विलकुल छिप जायेगा।

ब्रूटस : अरे उसका नाम मत लो। हमें उसे अपनी गुप्त बात नहीं बतानी चाहिये, क्योंकि वह कभी दूसरों के द्वारा प्रारंभ किये हुए किसी काम को नहीं करेगा।

कैशस : तो फिर उसे छोड़ो।

कास्का : सचमुच ! वह साथ लिये जाने के योग्य ही नहीं।

डैसियस : क्या सीज़र के अतिरिक्त और किसी पर प्रहार नहीं होगा ?

कैशस : डैसियस ने बहुत माकूल सवाल उठाया है। मेरे विचार से

सीजर को मृत्यु के बाद मार्क एन्टोनी को जीवित छोड़ देना उचित नहीं होगा। वह सीजर का अत्यंत प्रिय पात्र है। वह फिर हमें बड़े षड्यंत्र रचता हुआ दिखाई देगा। उसके तो साधन भी आप जानते ही हैं कि यदि वह उनका प्रयोग करे तो वह उन्हें इतना फैला सकता है कि हम सबकी नाक में दम आ जाये। इसी लिये यह सब रोकने के लिये सीजर और एन्टोनी दोनों की हत्या साथ ही होनी चाहिये।

**ब्रूटस :** तब तो हमारा कार्य बहुत ही खूनी दिखाई पड़ेगा कैशस। सिर काट कर अगो के टुकड़े-टुकड़े करता हुआ जैसे कोई क्रुद्ध हत्यारा हो, ऐसे ही तो लगेंगे हमलोग, क्योंकि एन्टोनी तो सीजर का एक अंग है। हमें एक पवित्र कार्य के लिये बलि देनी है, न कि हमें अधिक बनना है कैशस। हम सभी सीजर की भावनाओं के विरुद्ध खड़े हुए हैं, हम लोगो की आत्मा में हत्या की भावना नहीं है। कितना अच्छा होता यदि हम सीजर की भावना पर विजय प्राप्त करते और हत्या करने की हमें आवश्यकता ही नहीं पड़ती ? किंतु दुर्भाग्य से हमें सीजर की हत्या ही करनी पड़ेगी। मेरे अच्छे दोस्तो ! आओ हम वीरता से उसे मारे, न कि क्रोध के दास होकर। हम उसे देवताओं के लिये बलिदान बनाये न कि उसके मांस को शिकारी कुत्तों के लिये आयोजित करें ! आओ ! हम अपने हृदय में भावों को स्वामियों की भाँति कार्य पूर्ण हो जाने तक बुलाकर रहने दें और फिर उन्हें शांत कर दें। इस प्रकार हम आवश्यकता की भावना से प्रेरित होंगे, और साधारण व्यक्तियों को हम विद्वेष से परिचालित नहीं दिखाई देंगे। हम उद्धारक समझे जायेंगे, हत्यारे नहीं। और मार्क एन्टोनी ! उसकी चिंता मत करो। जब सीजर का ही

सिर नहीं रहेगा तो वह उसको भुजा ही तो है, कर भी क्या सकेगा ?

कैशस : फिर भी मैं उससे डरता हूँ क्योंकि उसके हृदय में जो सीजर के प्रति प्रेम है.....

ब्रूटस : मेरे अच्छे कैशस ! उसकी चिंता छोड़ दो ! यदि वह सीजर से प्रेम करता है तो वह इतना भर कर सकता है कि उसकी मृत्यु के उपरांत स्वयं भी मर जाये । किंतु वह यह सब नहीं कर सकेगा क्योंकि वह खेलो का बहुत शौकीन है और सगति बहुत चाहता है, आवेशप्रिय है ।

ट्रैबोनियस . उससे कोई डर नहीं है । उसके मरने की कोई आवश्यकता नहीं है । क्योंकि वह जीवित रहेगा और बाद में इस पर हँसा करेगा ।

[गजर बजता है ।]

ब्रूटस : शांत रह कर आवाज गिनो ।

कैशस : घड़ी ने तीन बजाये हैं ।

ट्रैबोनियस . अब हमारे विदा होने का समय है ।

कैशस . किंतु अभी यह सदेहास्पद है कि सीजर वहाँ आज जायेगा या नहीं क्योंकि इधर कुछ दिनों से वह अधविश्वासी हो गया है और अब तक जो वह स्वप्न, कल्पनाओं तथा उत्सवों के विषय में राय बनाये हुए था वे सब बदल गई हैं । यह हो सकता है कि वह इन प्रगट अपशकुनो से, रात्रि की अस्वाभाविक भयकरता से या अपने ज्योतिषियों के आग्रह से रोका जा कर आज राजधानी ही नहीं आये ।

डेसियस : इस बात का भय छोड़ दो । यदि ऐसा उसका निश्चय भी होगा तो मैं उसे बदल दूँगा । यूनीकार्न नामक जन्तु को वृक्षों

से धोखा दिया जा सकता है, रीछ को दर्पण से छला जा सकता है, हाथियों को गड्ढो में धोखा दे कर पकड़ा जा सकता है, सिंहो को जाल में फँसा कर धोखा दिया जा सकता है, मनुष्यों को चापलूसी से धोखा देना संभव है—ऐसी बातें सुनने का सीजर बहुत शौकीन है क्योंकि वह दुनिया में सबको नीचा समझ कर अपने को श्रेष्ठ समझता है। मैंने कहा कि आदमियों को चापलूसी से धोखा दिया जा सकता है किंतु सीजर को नहीं क्योंकि वह चापलूसी से घृणा करता है तो वह बोला 'हाँ मैं घृणा करता हूँ।' परंतु सचार्ई यह है कि वह सबसे अधिक चापलूसी कराता है। अब यह काम मुझे करने दो, क्योंकि उसकी निर्वलता का लाभ उठाना मेरा ही काम है। मैं उसे राजधानी ले आऊँगा।

कैशस . नहीं, उसे लाने के लिये हम सभी वहाँ चलेगे।

ब्रूटस . आठ वजे ठीक रहेगा न ? या और देर में ?

सिल्ला : हाँ, यही समय ठीक रहेगा। हम सबको इस समय तक वहाँ पहुँच जाना चाहिये।

मैटेलस कैस लिगारियस सीजर से बहुत घृणा करता है क्योंकि उसने जब पोम्पी की प्रशंसा की थी तो उसने बहुत कुछ बुरा-भला कहा था। मुझे ताज्जुब होता है कि आपमें से किसी ने भी उसके बारे में नहीं सोचा।

ब्रूटस : भद्र मैटेलस ! तुम अब उसके पास जाओ। वह विगप कारणों से मेरा प्रेमी है। उसे मेरे पास भेज देना और उसे मैं अपनी ओर कर लूँगा।

कैशस : अब भोर हो रही है ब्रूटस ! हमलोग तुम्हें छोड़ कर जाते हैं। मित्रों ! अब तितर-बितर हो जाओ। किंतु जो तुमने कहा है उसे याद रखो और अपने को सच्चा रोम-निवासी प्रमाणित करना।

ब्रूटस : अच्छा मित्रो ! तेजस्वी और प्रसन्न दिखलाई दो । हमारी आँखों में हमारा उद्देश्य न छलक आये ! कठोर आत्मसयम, गभीरता और शांति से सब कुछ धारण करो जैसे हमारे रोम के अभिनेता सब कुछ करते हैं । अच्छा नमस्कार ।

[सबका प्रस्थान । ब्रूटस रह जाता है ।]

ब्रूटस : अरे छोकरे ! लूशियस ! फिर सो गया ? गहरी नीद में खो गया ? कोई बात नहीं, नीद की मधुरिमा का आनंद ले ले । न तुझे कल्पना का भय है, न किसी व्याघात का । वे तो मनुष्यों के मस्तिष्क में चिंता के कारण जन्म लेते हैं । सो ! तभी तो तू गहरी नीद की गोद में सब कुछ भूल जाता है ।

[ पोर्शिया का प्रवेश ]

पोर्शिया : मेरे स्वामी ब्रूटस !

ब्रूटस : कौन ? पोर्शिया ! तुम हो ! तुम अभी से क्यों जाग गई ? तुम्हारे दुर्बल स्वास्थ्य के लिये यह हितकर नहीं होगा कि तुम सुबह की व्यापती ठंड में इस तरह घूमो ।

पोर्शिया : किंतु यह हवा तो तुम्हारे लिये भी उतनी ही हानिकारक है । तुम बड़ी निठुरता से चुपचाप मेरी शैय्या से उठ कर चले आये ब्रूटस ! और कल रात भी तुम अचानक उठ कर खाना छोड़ कर सीने पर हाथ बाँध कर टहलने लगे । क्या चिंता थी ! कंसी आ रहे भरते थे ! और जब मैंने पूछा कि क्या बात थी, तुमने अत्यंत कठोरता से मेरी ओर देर तक घूरा था । जब मैंने अधिक पूछा तो तुम सिर खुजलाने लगे थे । और बड़े जोर से तुमने धरती पर पाँव पटक था । फिर भी मैंने पूछा तो तुमने उत्तर नहीं दिया और हाथ से क्रुद्ध हो कर इशारा किया कि मैं तुमको छोड़ कर चली जाऊँ । कहीं तुम्हारा क्रोध बढ़ न जाये इस भय



से उस समय मैं चली आई थी क्योंकि मैं समझ रही थी कि यह भी मनुष्यों का-सा क्षणिक क्रोध ही होगा। न यह तुम्हें खाने देता है, न बात करने देता है, न सोने ही देता है। जो तुम्हारे मुख और स्वभाव पर अपनी छाया डाल सकता है मेरे प्रिय स्वामी ब्रूटस ! क्या मैं तुम्हारे उस दुःख का कारण नहीं जान सकती ?

ब्रूटस : मेरी तबियत ठीक नहीं है, वस यही कारण है।

पोशिया : ब्रूटस बुद्धिमान व्यक्ति हैं। यदि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं होता तो वे अवश्य उसे ठीक करने के उपाय करते।

ब्रूटस : यही तो मैं कहता हूँ पोशिया ! तुम सोने जाओ न ?

पोशिया : यदि ब्रूटस अस्वस्थ होता तो क्या वह बिना कपड़े पहने भोर की ओस की नमी और ठंड में यों घूमता रहता ? यदि वह बीमार होता तो क्या रात में चारपाई छोड़ कर रात की अशुद्ध वायु का सेवन करके बीमारी को बढ़ाने के लिये बाहर आ जाना चाहिये या ? नहीं मेरे ब्रूटस ! तुम्हें कोई मानसिक रोग हो गया है जिसे तुम्हारी अर्द्धांगिनी होने के नाते मुझे जानने का अधिकार है। मैं अपने जानु नत करके प्रार्थना करती, अपने उस अतीत के यौवन को, उस सौंदर्य की, उस प्रेम की और विवाह के समय की पवित्र प्रतिज्ञा की सीगंध दे कर कहती हूँ कि तुम अपने दुःखा होने का कारण अपनी पत्नी पोशिया को बता दो। और वे कौन लोग थे जो आज रात तुमसे मिलने आये थे ? वे छः या सात के लगभग थे और अंधेरे में भी अपने चेहरों को छिपाये हुए थे।

ब्रूटस : प्रिये पोशिया, उठो ! घुटनों के बल मत बैठो।

पोशिया : यदि तुम नम्र होते तो मुझे इसकी कोई आवश्यकता नहीं

होती ब्रूटस ! सच कहो ब्रूटस ! क्या विवाह सबंध के नियमों के अनुसार मुझे यह अधिकार नहीं है कि मैं तुम्हारे रहस्यों को जान सकूँ ? क्या मेरा और तुम्हारा साथ भोजनों में, आराम में और सोने के समय और कभी-कभी बात करने तक में सीमित है ? क्या मुझे तुम्हारे हृदय पर अधिकार नहीं है—क्या मैं उसके बाहर-बाहर ही बनी रहूँ ? यदि मैं तुम्हारे रहस्यों को नहीं जान पाती तो क्या मैं तुम्हारी पत्नी हूँ ब्रूटस ! नहीं, तब तो मैं केवल रखैल हूँ ।

ब्रूटस : तुम मेरी सच्ची और आदरणीया पत्नी हो । तुम मुझे उतनी ही प्रिय हो जितनी कि वे रक्त की लाल बूंदें जो मेरे विषण्ण हृदय तक पहुँचती हैं ।

पोर्शिया : यदि यह सत्य है तो मुझे यह रहस्य जानना ही चाहिये । मैं मानती हूँ कि मैं स्त्री हूँ, किंतु हूँ तो ऐसी स्त्री जो श्रीमान् ब्रूटस की पत्नी है । मैं स्त्री हूँ यह तो स्वीकार करती हूँ किंतु हूँ तो यगस्वी केटो की पुत्री । ऐसे पति की पत्नी और ऐसे पिता की पुत्री हो कर भी क्या तुम समझते हो कि फिर भी मैं अपनी स्त्री-जाति से अधिक सबल नहीं हूँ ? मुझे अपने रहस्य बताना । मैं उन्हें प्रगट नहीं करूँगी । मैंने अपनी दृढ़ता का परिचय स्वयं अपनी जाँघ में धाव करके दिया था । क्या मैं उसे जातिपूर्वक सह सकती थी और अपने ही पति के भेदों को गुप्त नहीं रख सकूँगी ?

ब्रूटस : ओ देवताओं ! मुझे अपनी कुलीन पत्नी के योग्य बनाओ !

[द्वार खटखटाने की ध्वनि]

सुनो ! सुनो ! कौन द्वार खटखटाता है । पोर्शिया, तनिक भीतर चली जाओ ! धीरे-धीरे तुम मेरे हृदय के सारे भेद जान

[ कैल्पुर्निया का प्रवेश ]

कैल्पुर्निया . सीजर ! क्या आज तुम जाओगे ? नहीं आज तुम घर से हिलोगे भी नहीं ।

सीजर : सीजर अवश्य जायेगा । जो वाते मुझे भयभीत करना चाहती हैं वे मेरे सामने आ ही नहीं सकती । जब वे सीजर का मुख देखेगी तो सब लुप्त हो जायेंगी ।

कैल्पुर्निया . सीजर ! मैंने कभी अपशकुनों में विश्वास नहीं किया, किंतु आज मैं डर रही हूँ । जो कुछ हमने देखा-सुना है, उससे भी भयानक और विकराल वाते जानने वाला एक व्यक्ति इस समय घर के भीतर है जो एक ऐसे चौकीदार से सुन कर आया है, जिसने स्वयं अपनी आंखों से देखा कि मंडको पर एक सिंहनी वच्चो को जनकर गर्जना कर रही है, कब्रें खुल गई हैं और मुर्दे उनसे बाहर निकल पड़े हैं । भीषण अग्नि जैसे योद्धा मेघों में लड़ रहे हैं और उनकी सेनाओं के तुमुल निनाद की प्रतिध्वनि उठ रही है । राजधानी पर उनका खरिब बरस रहा है । अंतराल में भयानक युद्ध का निनाद हुमक रहा है । घोड़े हिनहिना रहे हैं, और मरते हुए घायल व्यक्ति कराह रहे हैं । राहों पर भूत-प्रेत चीखते-चिल्लाते घूम रहे हैं । ओ सीजर ! यह सब नितांत अस्वाभाविक है । इसीसे मुझे डर लग रहा है ।

सीजर : जिसका आयोजन महायनी देवताओं ने किया, उसे क्या रोका जा सकता है ? लेकिन सीजर जायेगा ! यह अपशकुन तो सत्कार के लिये भी उतने ही दूरे हैं जितने कि सीजर के लिये ?

कैल्पुर्निया : घूमकेतु भिखारियों की मृत्यु के लिये नहीं दिव्यार्ई देते । केवल राजकुमारों के लिये ही स्वयं आकाश भी दाह से तुल्य उठता है ।

सीजर : अपनी मौत से पहले कायर ही अनेक बार मरते हैं, किंतु वीर लोग केवल एक ही बार मृत्यु का आस्वादन करते हैं। आज तक जो आश्चर्यजनक बातें मैंने सुनी हैं, इन सबमें मुझे सबसे अधिक विस्मय इस बात पर होता है कि मनुष्य उस मृत्यु से भयभीत हो जो कि अवश्यम्भावी रूप से आयेगी और अपने निश्चित समय पर आ उपस्थित होगी।

[सेवक का पुनः प्रवेश]

सीजर : जोतिषियों ने क्या विचार किया ?

सेवक : वे चाहते हैं कि आज आप घर से न निकले क्योंकि बलिपशु का शरीर खोलने पर उन्हें उसके भीतर हृदय ही नहीं मिला।

सीजर : देवता इस प्रकार मनुष्य की भीरुता को धिक्कारते हैं। यदि भयभीत होकर सीजर घर में ही रह गया तो वह भी एक हृदयहीन पशु की भाँति ही होगा। नहीं सीजर नहीं रुकेगा। आज व्याघात जान ले कि सीजर स्वयं उससे भी अधिक भयानक है। आज भय जान ले कि हम दोनों का सिंहों की भाँति एक ही दिन जन्म हुआ था और मैं ही ज्येष्ठ हूँ, अधिक भयानक हूँ। और सीजर अवश्य जायेगा।

कैल्पूनिया : मेरे स्वामी ! हाय ! आपके विश्वास ने आपकी बुद्धि का हरण कर लिया है। आज मत जाइये। इसे मेरा ही भय मानिये, अपना नहीं, जो आपको घर ही में रोके रखना चाहता है। हम सिनेट-गृह में मार्क एन्टोनी को भेज देंगे। और वह कह देगा कि आज आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मैं जानुनत आपसे विनती करती हूँ कि मेरी प्रार्थना स्वीकार करिये।

सीजर : मार्क एन्टोनी कहेगा मैं बीमार हूँ। तुम्हारी खुशी के लिये मैं घर ही में रह जाऊँगा।

[डेसियस का प्रवेश]

यह डेसियस ब्रूटस आ गया । यही वहाँ जाकर सब कुछ कह देगा ।

डेसियस : सीजर की जय ! मैं अभिवादन करता हूँ समर्थ सीजर !

मैं तुम्हें सिनेट-गृह ले चलने आया हूँ ।

सीजर . तुम बड़े अच्छे मौके से आये । सिनेट के सदस्यों को मेरी शुभ कामनाएं ले जाओ और उनसे कह देना कि आज मैं नहीं आऊँगा । मैं नहीं आ सकता, यह तो भूँठ है, और यह भी भूँठ है कि मुझमें जाने का साहस नहीं है । डेसियस, आज मैं नहीं आऊँगा, वस इतना ही कह देना ।

कैल्पूनिया : कह देना वे बीमार है ।

सीजर : क्या सीजर झूठी खबर भेजेगा ? क्या मैंने विजय पर विजय पा कर इसलिये अपनी भुजाएँ इतनी विस्तृत-विशाल बनाई है कि वृद्धों से सत्य कहते हुए भयभीत होऊँ ? डेसियस ! जाओ कह दो, आज सीजर नहीं आयेगा ।

डेसियस : परम समर्थ सीजर ! मुझे भी तो कोई कारण बताये, ताकि जब मैं उन लोगों से जा कर कहूँ, वे मुझ पर हँस न पड़ें ।

सीजर . कारण ! कारण मेरी इच्छा है । मैं नहीं आऊँगा । सिनेट को सतुष्ट करने को यही काफी है । किन्तु तुम्हारे व्यक्तिगत सतोष के लिये, क्योंकि मैं तुम्हें चाहता हूँ, मैं तुम्हें बता दूँगा । यह मेरी पत्नी कैल्पूनिया आज मुझे घर ही रोक रखना चाहती है । उसने रात में स्वप्न में मेरी मूर्ति को देखा है, जिसमें सैकड़ों छेद हो गये हैं और उनमें से लाल-नाल लहू सोतो की तरह बह रहा है और बहुत-से नतृणा रोम-निवासी युवक वहाँ हँसते हुए आकर उन खिच में अपने हाथ धोते हैं । वह इतने यह

अभिप्राय निकाल रही है कि मेरे जीवन पर कोई आपत्ति आने वाली है, क्योंकि यह अपशकुन है। उसने जानुनत होकर मुझसे न जाने की प्रार्थना की है।

**डेसियस :** इस स्वप्न का तो गलत मतलब लगाया गया है। यह तो सौभाग्यसूचक स्वप्न है। तुम्हारी मूर्ति में से कई धारों में रुधिर बह रहा था जिसमें कितने ही मुस्कराते हुए रोम-निवासी हाथ धो रहे थे—यह सब तो इस बात का द्योतक है कि महान रोम देश तुमसे सदैव स्फूर्ति प्राप्त करेगा और असंख्य मनुष्य तुम्हारे निकट एकत्र हो कर तुमसे चिन्हस्वरूप कुछ प्राप्त करके सम्मानित होंगे। कैल्पूनिया का स्वप्न यही सूचित करता है।

**सीजर :** तुमने इस प्रकार इसका अच्छा अर्थ लगाया है।

**डेसियस :** जब आपने सुना है कि मैंने यह अर्थ निकाला है तो क्या कहूँ, केवल यही कि मैंने यही समझा है। सिनेट ने निश्चय किया है कि आज वह महान सीजर को राजमुकुट भेंट करेगी और यदि आज यह समाचार भेजा जायेगा कि मैं नहीं आऊँगा तो शायद उसके विचार बदल जाये। अतिरिक्त इसके कोई यदि यह कह कर उपहास करे कि 'सिनेट को तब तक स्थगित कर दो जब तक सीजर को पत्नी को अच्छे सुपने न दिखाई दे।' तो 'यदि सीजर इस प्रकार अपने को छिपायेगा तो वे आपस में कानाफूसी करेंगे : 'लो सीजर डर गया।' क्षमा करना सीजर ! आपके प्रति जो मेरे हृदय में प्रेम है वही यह सब कहला रहा है। यदि यह प्रेम न होता तो मैं क्यों कहता ?

**सीजर :** तुम्हारे भय कितने मूर्खतापूर्ण लग रहे हैं कैल्पूनिया ! मुझे इस बात की लज्जा है कि मैंने उन्हें मान लिया था। लाओ मेरे वस्त्र दो। मैं जाऊँगा।

[पब्लियस, ब्रूटस, लिगारियस, मेटेलस, कास्का, ट्रैबोनियस और  
सिन्ना का प्रवेश]

और देखो । पब्लियस भी मुझे लेने आ गया है ।

पब्लियस : नमस्कार सीजर !

सीजर : स्वागत पब्लियस ! अरे ब्रूटस ! आज तुम भी इतनी जल्दी  
उठ गये ? नमस्कार कास्का, कैशम, लिगारियस ! सीजर कभी  
तुम्हारा इतना बड़ा शत्रु तो न था जितना यह ज्वर है जिसने  
तुम्हें निचोड़ कर रख दिया है । अब क्या समय है ?

ब्रूटस : आठ वजे हैं सीजर !

सीजर : आप लोगो ने जो कष्ट उठाया है, स्नेह दिखाया है, उसके  
लिये धन्यवाद देता हूँ ।

[एन्टोनी का प्रवेश]

देखो एन्टोनी ! रात्रि में देर तक आनंद मनाने वाला भी इतना  
शीघ्र जाग गया ? नमस्कार एन्टोनी !

एन्टोनी : समर्थ सीजर को प्रणाम करता हूँ ।

सीजर : अंदर सबसे कह दो कि तैयार हो जाये । मैं इस वान का  
दोषी हूँ कि मैंने आप सब लोगो से इतनी प्रतीक्षा कराई । और  
सिन्ना, मेटेलस, ट्रैबोनियस ! मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं,  
जिसमें लगभग एक घंटा लग जायेगा । याद रखो आज तुम मुझसे  
मिलना और मेरे पास ही रहना, ताकि मुझे याद रह सके ।

ट्रैबोनियस : मैं ऐसा ही करूँगा । (स्वगत) मैं तुम्हारे इतने निकट  
रूँगा कि तुम्हारे प्रिय मित्र मुझे तुमसे जरा दूर रखना ही  
पसंद करेंगे ।

सीजर : आओ, मित्रो ! भीतर चल कर मेरे साथ थोड़ी मदिरा  
पियो । फिर हम मित्रो की भाँति नीचे चले चलेंगे ।

ब्रूटस : (स्वगत) अरे सीजर ! हर वस्तु सदैव एक ही-सी नहीं बनी रहती, यह सोच कर ब्रूटस के हृदय को दुख हो रहा है ।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[राजधानी के निकट एक गली । आर्टिमीडोरस का एक पत्र पढ़ते हुए प्रवेश]

आर्टिमीडोरस : 'सीजर ! ब्रूटस से सावधान रहना । कैशस से अपनी रक्षा करना । कास्का से दूर रहना । सिम्बर पर कड़ी दृष्टि रखना । ट्रैवोनियस का विश्वास न करना । मैटेलस सिम्बर पर तो विशेष दृष्टि रखना । डेसियस ब्रूटस को अपना मित्र न समझना । यह याद रखना कि तुमने कैस लिगारियस को क्रुद्ध किया है और वह हृदय में तुमसे विद्वेष रखता है । यह सब व्यक्ति एक ही मत के हैं और एक ही उद्देश्य से स्फुरित हैं, अर्थात् वे तुम्हारे विरुद्ध हैं । यदि तुम देवताओं की भांति अमर नहीं हो, तो अपनी देखभाल करना । आवश्यकता से अधिक आत्मविश्वास पड्यत्र का मार्ग प्रशस्त करता है । सर्वशक्तिमान देवगण तुम्हारी रक्षा करें । तुम्हारा हित चितक—आर्टिमीडोरस ।' जब तक सीजर यहाँ हो कर नहीं चला जायेगा मैं यहीं खड़ा रहूँगा और उसके सहायक के रूप में वह पत्र दे कर ही हटूँगा मानो मैंने उसे केवल कोई अर्जी दी है । मुझे इसका दुख है कि अच्छाई संसार में द्वेष के जवड़ों में पड़े बिना नहीं रह पाती । सीजर ! यदि तुम इसे पढ़ सकोगे तो शायद जीवित रह सकोगे । यदि यह पत्र तुम तक नहीं पहुँचता तो समझ लो



भाग्य भी पड्यंत्रकारियों से जा कर मिल गया है ।

[प्रस्थान]

### दृश्य ४

[रोम । ब्रूटस के घर के सामने उसी सड़क का एक और स्थान ।

पोशिया और लूसियस का प्रवेश]

पोशिया : मैं तुझसे विनती करती हूँ रे बालक ! दौड़ कर सिनेट-गृह जा । अब मुझे उत्तर देने को रुक मत ! चला ही जा न ? रुकता क्यों है तू ?

लूसियस : देवी ! मुझे तो बता दे । क्या संवाद दूँ ?

पोशिया : कितना अच्छा होता जो तू मेरे काम के बतलाने के पहले ही जा के लौट भी आता ? (स्वगत) ओ दृढ़ता ! मेरे साथ अड़िग बनी रह ! मेरे हृदय और मेरी जिह्वा के बीच एक भीम पर्वत आ जाये ! मुझमें पुरुष की बुद्धि है, किंतु शक्ति तो स्त्री की ही है ! स्त्री के लिये कोई भेद छिपाये रहना कितना कठिन है ? (प्रगट) अरे अभी तू यही है ?

लूसियस : देवी ! मुझे करना क्या है ? क्या मैं राजधानी तक दौड़ कर जाऊँ और लौट आऊँ ? वस यही काम है ? और कुछ नहीं ?

पोशिया : हाँ, मुझे नवाद ला दे बालक कि तेरे स्वामी तो सज्जन हैं ? जानता है न ? वे गये थे तब अस्वस्थ थे ? मुझे ठीक समाचार दे कि सीजर क्या कर रहे हैं ? कौन लोग उनसे मिलने को तत्पर हैं ? अरे बालक ! यह कोलाहल क्यों हो रहा है ?

लूसियस : नहीं देवी ! मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा !

पोशिया : ध्यान से सुन न ? मुझे कुछ भगते जी-जी आवाज नरती सुनाई दे रही है जो राजधानी में हो रहा लगता है ।

लूशियस : नहीं देवी ! मैं कुछ भी सुन नहीं पा रहा हूँ ।

[भविष्यवक्ता का प्रवेश]

पोशिया : इधर आ भाई ! तू किधर से आ रहा है ?

भविष्यवक्ता : देवी ! मैं अपने घर से ही आ रहा हूँ ।

पोशिया : अब क्या समय है ?

भविष्यवक्ता : अब नौ बजे के करीब हैं ।

पोशिया : क्या सीजर अब तक राजधानी पहुँच गये हैं ?

भविष्यवक्ता : नहीं देवी । अभी नहीं । मैं उन्हीं को जाते हुए देखने को जा रहा हूँ ।

पोशिया : क्या तुम्हें उनसे कुछ प्रार्थना करनी है ?

भविष्यवक्ता : हा देवी ! ऐसा ही है । यदि वे कृपालुचित्त हो कर मुझे समय दे कर सुनेंगे तो मैं कहूँगा कि वे अपनी देखभाल ठीक से करें । अपनी उपेक्षा न करें ।

पोशिया : क्यों ? क्या तुम समझते हो कि कोई उन्हें हानि पहुँचाने का प्रयत्न कर रहा है ?

भविष्यवक्ता : मैं नहीं जानता कौन उन्हें हानि पहुँचायेगा । फिर भी मुझे आशका है । आपको प्रणाम ! यहाँ सड़क बहुत सँकरी है । सीजर के साथ जो सिनेट के सदस्यो, न्यायाधीशो, पदाधिकारियो तथा सादारण व्यक्तियों की भीड़ जायेगी वह इस तंग राह में मुझ जैसे दुर्बल व्यक्ति को तो भीच के ही कुचल देगी । मैं अब कुछ खुले हुए स्थान में जाता हूँ । जब महान सीजर वहाँ पहुँचेगा तब मैं उससे कहूँगा ।

[प्रस्थान]

पोशिया : मुझे भीतर जाना चाहिये । हाय रो मैं, स्त्री का हृदय भी क्षिप्तना दुर्बल होता है । आह ब्रूटस ! देवता तुम्हारे कार्य को

शीघ्र ही पूर्ण करे । शायद लड़के ने मेरी बात सुन ली है ।  
ब्रूटस एक प्रार्थना करेगा जिसे सीजर स्वीकार नहीं करेगा ।  
हाय ! मुझे चक्कर-सा आ रहा है ।

लूशियस ! दौड़ कर मेरे स्वामी से मेरी शुभ कामनाएँ  
कह और यह भी कहना कि मैं ठीक हूँ । जो वे तुझसे कहे  
उसे मुझे शीघ्र ही आ कर बता ।

[प्रस्थान]

## तीसरा अंक

### दृश्य १

[रोम । राजधानी । ऊपर सिनेट बंठी है । राजधानी की ओर जाने वाले पथ पर लोगो की भीड़ है । उस भीड़ में आर्टिमीडोरस और भविष्यवक्ता उपस्थित हैं । तूर्य्यनाद ।]

[सीजर, ब्रूटस, कैशस, कास्का, डेसियस, मेटेलस, ट्रैवोनियस, सिन्ना, ऐन्टोनी, लैपीडस, पोपिलियस, पट्लियस तथा अन्यो का प्रवेश ]

सीजर : (भविष्यवक्ता से) मार्च की १५ तारीख आ गई ।

भविष्यवक्ता : हाँ सीजर ! किंतु अभी बीती तो नहीं है ।

आर्टिमीडोरस : सीजर की जय ! यह पत्र पढ़े ।

डेसियस : (सीजर से) ट्रैवोनियस विनती करता है कि आप उसके दोन प्रार्थनापत्र को अवकाश प्राप्त होते ही सबसे पहले पढ़ ले ।

आर्टिमीडोरस : ओ सीजर ! पहले मेरी अर्जी पढ़े, महान सीजर !

इसे पढ़े क्योंकि इसका सीजर से सम्बन्ध है ।

सीजर : जिसका मुझसे सम्बन्ध है उसे तो मैं सबके अंत में ही पढ़ूंगा ।

आर्टिमीडोरस : देर न करे सीजर । इसे तुरन्त पढ़ ले ।

सीजर : क्या यह आदमी पागल है ?

पट्लियस : हटो-हटो । सीजर को रास्ता दो ।

कैशस : क्या तुम रास्ते में अर्जी देना चाहते हो ? राजधानी में आना ।

[सीजर राजधानी में सिनेट-भवन की ओर जाता है । सब पीछे जाते हैं ।

सब सिनेट के सदस्य पड़े होते हैं ।]

पोपिलियस : मेरी कामना है, आज तुम्हारा कठिन कार्य पूर्ण हो ।

कैशस : कैसा कार्य पोपिलियस ?

पौपीलियस : विदा ।

[सीजर के पास जाता है ।]

ब्रूटस : पौपीलियस लेना ने क्या कहा ?

कैशस : उसने कामना की कि हमारा कठिन कार्य पूर्ण हो । मुझे डर है हमारा उद्देश्य प्रगट हो गया है ।

ब्रूटस : देखो-देखो ! वह सीजर की ओर कैसे जा रहा है ? उसे ध्यान से देखो ।

कैशस : कास्का । जल्दी करो । मुझे डर है कहीं विघ्न न पड जाये ।

ब्रूटस ! क्या होगा अब ! अगर यह सब भडाफोड हो गया तो या तो कैशस आज लौटेगा या सीजर ही । मैं तो आत्मघात कर लूँगा ।

ब्रूटस : कैशस ! धीरज धरो । पौपीलियस लेना हमारे कार्य के बारे में कुछ भी नहीं कह रहा है क्योंकि वह मुस्कराता है और सीजर के मुख पर भी कोई विकृति नहीं आई है ।

कैशस : ट्रैबोनियस अपना कार्य जानता है । देखो न ब्रूटस ! वह मार्क एन्टोनी को रास्ते से अलग किये ले रहा है ।

[एन्टोनी और ट्रैबोनियस का प्रस्थान । सीजर तथा सिनेट के सदस्यों का आसन ग्रहण करना ]

डेसियस : मैटैलस सिम्वर कहाँ है, उसे भेजो । उसे सीजर के सामने इसी वक्त अपनी अर्जी रखनी चाहिये ।

ब्रूटस : वह तैयार है, उसके पास जाओ, उसे मदद दो ।

सिन्ना : कास्का ! सबसे पहले तुम्हें हाथ उठाना होगा ।

सीजर : क्या हम सब तैयार हैं ? क्या-क्या कमियाँ हैं जिन्हें सीजर और उसकी सिनेट को दूर करना है ?

मैटैलस : परमगतिवान् ! सर्वोच्च महान् बलशाली सीजर, मैटैलस

सिम्बर आपके सम्मुख अपनी तुच्छ प्रार्थना प्रस्तुत करने की आज्ञा चाहता है—

[भुक्ता है।]

सीजर : सिम्बर ! भुक्ते से मैं तुम्हें रोकता हूँ। यह भुक्ता और यह विनम्र प्रार्थनाएँ साधारण मनुष्यों के रक्त को ही विचलित कर सकती हैं। वे ही बालको की भाँति अपने प्रथम निर्णय और मूल आज्ञाओं से विचलित हो सकते हैं। यह सोचने का व्यर्थ श्रम न करो कि सीजर की धमनियों में भी मूर्खों का-सा ही रक्त है जो इन चाटुकारिताओं से द्रवित हो जायेगा और अपने सद्गुणों से च्युत हो जायेगा। इन मूढ़ दिखावटों से मेरा मतलब चापलूसी से है। वे ही छलने का प्रयत्न करती हैं। तुम्हारे भाई का निर्वासन नियमों के अनुसार हुआ है। यदि तुम उसके लिये भुक्ते हो, प्रार्थना करते हो, चापलूसी पर उतरते हो, तो मैं तुम्हें एक कुत्ते की भाँति ही पथ से हटा दूँगा। याद रखो ! सीजर अन्याय नहीं करता और उचित कारण के बिना वह संतुष्ट भी नहीं होता।

मैटेलस : क्या यहाँ मुझसे अधिक कोई योग्य व्यक्ति नहीं बोल सकता जिसके मधुर शब्द मेरे निर्वासित भाई के पक्ष में उसके अपराध क्षमा करवा देने को महान सीजर से अनुनय करे !

ब्रूटस : मैं तेरे हाथ को चूमता हूँ सीजर ! यह चाटुकारिता नहीं है। मेरी प्रार्थना है कि पब्लियस सिम्बर को निर्वासित करके जिस स्वतन्त्रता का अपहरण किया गया है वह तुरन्त ही उसे लौटा दी जाये।

सीजर : कौन ! ब्रूटस ! !

कैशस . क्षमा सीजर ! क्षमा करें सीजर ! कैशस तुम्हारे चरणों पर

गिर कर अनुनय करता है कि पब्लियस सिम्बर की स्वतन्त्रता उसे लौटा दी जाये ।

सीजर : यदि मैं तुम जैसा होता तो अवश्य ही तुम्हारी प्रार्थना से द्रवित हो जाता । यदि मैं द्रवित करने को प्रार्थना किया करवाता तो अवश्य ही प्रार्थनाओं से विचलित हो जाता । किंतु मैं ध्रुव नक्षत्र की भाँति अडिग हूँ जिसकी दृढ़ता और अचल पहिया की तुलना में आकाश का कोई भी ज्वलत पिण्ड खड़ा नहीं होता । विशाल आकाश में असंख्य अग्निपिण्ड हैं किंतु वे केवल दीप्तिमात्र हैं, उनमें से कोई भी ध्रुवतारा की भाँति जाज्वल्यमान नहीं है । इसी प्रकार यह लोक अस्थिर-रक्त-मांस के असंख्य प्राणियों से भरा हुआ है, जिनमें मेधा भी है, किंतु मैं उन सबमें केवल एक ही ऐसे प्राणी को जानता हूँ जो कि अचल और अडिग है और वह दृढ़ व्यक्ति मैं हूँ । ठहरो । मुझे उसी दृढ़ता को प्रदर्शित करने दो । सिम्बर को निर्वासित करते समय भी मैं अडिग था और अब भी उसी भाँति स्थिर हूँ ।

सिन्ना : आह सीजर ..

सीजर : क्या तुम देवताओं के निवास ओलिम्पस पर्वत को उठाने का साहस कर रहे हो ?

डेसियस . महान सीजर ..

सीजर : क्या ब्रूटस की प्रार्थना विफल नहीं हो गई ?

कास्का : मेरे हाथों ! वोलो ! मेरे लिये पुकार उठो !

[सीजर के गले पर छुरा मारता है । सीजर उसका हाथ पकड़ लेता है ।

तब अन्य षडयंत्रकारी उसे छुरों से गोदते हैं । अन्त में मार्स

ब्रूटस छुरा मारता है ।]

सीजर : ब्रूटस ! तुम भी ! सीजर ! तब मौत भी तेरे लिये अच्छी है !

[मृत्यु]

सिन्ना : स्वतन्त्रता ! मुक्ति ! अतिचार का ध्वस हुआ ! जाओ !

गली-गली में तुरन्त घोपणा कर दो !

कैशस : जाओ ! सभा-केन्द्रों से पुकार उठो—स्वतन्त्रता ! मुक्ति !

लौह स्वर से उगल उठो—अतिचार का ध्वस हुआ !

ब्रूटस : सिनेट के सदस्यो ! प्रजाजनों ! भयभीत मत हो ! भागो

मत ! ठहर जाओ ! महत्वाकाक्षा का ऋण चुका दिया गया ।

कास्का : ब्रूटस ! भाषण देने की वेदी पर चढ़ो ।

डेसियस : कैशस ! तुम भी !

ब्रूटस : पब्लियस कहाँ है ?

सिन्ना : यह रहा ! वह विप्लव से स्तम्भित रह गया है ।

मैटेलस : एक होकर दृढ़ बने रहो । कहीं सीजर का कोई मित्र अचानक...

ब्रूटस : रुकने की बात न करो । पब्लियस ! वधाई है । कोई तुम्हारे ऊपर आक्रमण नहीं करेगा । अब किसी रोमवासी पर आघात नहीं होगा । पब्लियस सबसे चिल्लाकर कहो ।

कैशस . चले जाओ पब्लियस । कहीं हम पर प्रजा के आघात की चपेट में तुम जैसे वयोवृद्ध न आ जाये ।

ब्रूटस : यही करो । इस कार्य का फल किसी और को न भोगना पड़े । हम ही इसके लिये उत्तरदायी हैं ।

[ट्रैबोनियस का पुनः प्रवेश]

कैशस : ऐन्टोनी कहाँ है ?

ट्रैबोनियस : स्तम्भित-सा वह घर भाग गया है । पुरुषों, स्त्रियों और बालकों की आँखें फटी की फटी रह गई हैं । सभी चिल्ला कर उधर-उधर ऐसे भाग रहे हैं जैसे प्रलय की बेला आ गई हो !



ब्रूटस : भाग्य की दैवी शक्तियों ! हम तुम्हारी इच्छा से अवगत हैं, हम जानते हैं कि एक दिन हम भी मरेंगे । किंतु लोक के प्राणी वह राह खोजते हैं जिससे जीवन की अवधि दीर्घ हो सके ।

कैशस : मेरी राय में जो कोई आयु को बीस वर्ष घटाता है वह मृत्यु-भय के अनेक वर्ष भी तो घटा देता है ?

ब्रूटस : यदि यही ठीक है कि मृत्यु मनुष्य के लिये उपकार है, तो हम सीज़र के मित्र हैं क्योंकि हमने मृत्यु के आतंक का समय उसके लिये घटा दिया है । रोम के निवासियों, भुको, आग्रो भुको और सीज़र के रुधिर से हाथों को कुहनियों तक भिगो लो । उसके रक्त से अपने खड्गों को रजित कर लो और फिर बढ़ो ! हाट में चतुष्पथों पर रक्तरजित अपने लाल-लाल आयुधों को सिर के ऊपर उठा कर हिला कर पुकार उठो—मुक्ति ! शांति ! स्वाधीनता !

कैशस : आग्रो, भुको और रक्त से स्नान करो ! कितने अनजाने युगों तक आज के इस महान दृश्य का कितने अज्ञात देशों और अविदित भाषाओं में अभिनय होता रहेगा !

ब्रूटस : कौन जानता है कि कितनी बार अभिनयों में सीज़र का लहू बहेगा । मुट्ठीभर धूल की भाँति सीज़र आज पोम्पी की मूर्त्ति के चरणों पर धरागायी है ।

कैशस : और जब-जब लोग इस दृश्य को दुहरावेंगे, इतिहास हमारे लिये पुकारा करेगा कि ये हैं वे मनुष्य जिन्होंने अपने देश को स्वाधीनता दिलाई ।

डेसियस : क्या हम अब बाहर चले ?

कैशस : हाँ, हर एक को जाना होगा । ब्रूटस ! नेतृत्व करो ! हम तुम्हारा अनुसरण करेंगे । रोम के परम वीर और कुलीनतम

हृदय वाले व्यक्तियों के साथ हम तुम्हारे पीछे चलेंगे ।

[एक सेवक का प्रवेश]

ब्रूटस : शात ! वह कौन आ रहा है ! ऐन्टोनी का मित्र है ।

सेवक . मेरे स्वामी ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं पहले आपके सामने घुटने टेकूँ और तब, मेरे स्वामी मार्क ऐन्टोनी ने कहा है कि पृथ्वी पर लेट कर आपको प्रणाम करना और प्रार्थना करूँ कि ब्रूटस मेधावी, कुलीन, सरल हृदय और वीर है । सीजर सर्व-शक्तिमान, राजसी, स्नेही, विभवान्वित और परम वीर था । जा कर कहना कि मैं ब्रूटस से स्नेह करता हूँ, उसका सम्मान करता हूँ, और कहना कि मैं सीजर से भीत रहता था, उसका सम्मान करता था, उसे प्यार करता था । यदि ब्रूटस प्रतिज्ञा करे कि ऐन्टोनी उस तक सुरक्षित आ सकता है तो वह उससे पूछेगा कि सीजर किन कारणों से हत्या कर देने के योग्य प्रमाणित हुआ ? मार्क ऐन्टोनी वह जान लेने पर मृत सीजर से नहीं, जीवित ब्रूटस से प्रेम करने लगेगा । सच्चे हृदय से वह, ब्रूटस को नयी परिस्थिति में कैसे भी विघ्न क्यों न उपस्थित हो, सहायता देगा, राज्य के कार्यों में सहयोग देगा । मेरे स्वामी मार्क ऐन्टोनी ने यही सवाद आपसे कहलवाया है ।

ब्रूटस : तेरा स्वामी महानगर रोम का एक वीर और बुद्धिमान निवासो है । मैंने उसे कभी भी दुरा नहीं समझा है । उससे कह दे कि यदि वह यहाँ आना चाहे तो आ जाये । वह यहाँ आ कर सतुष्ट हो जायेगा । और मैं अपने आत्मसम्मान की शपथ खा कर कहता हूँ कि उसे कोई स्पर्श भी नहीं करेगा ।

सेवक : मैं उन्हें अभी लाता हूँ ।

[प्रस्थान]

ब्रूटस : मैं जानता हूँ वह हमारा मित्र बन जायेगा ।

कैशस : यही मैं भी चाहता हूँ । किंतु फिर भी मेरे मन में उसके बारे में बड़ी शका है । मेरी शकाएँ सदैव सत्य होती हैं ।

ब्रूटस : वह लो ऐन्टोनी आ गया । आओ ! मार्क ऐन्टोनी । मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ ।

ऐन्टोनी : अरे परम शक्तिमान् सीजर ! आज तुम यहाँ इतने नीचे पड़े हुए हो ! क्या तुम्हारी ये दिग्विजय, वैभव, गौरव, महिमा और विजितो से प्राप्त कोष... इस दीन दशा में आकर सीमित हो गये हैं ? महावीर ! विदा ! महानुभावो ! मैं नहीं जानता आप क्या करना चाहते हैं ? और कौन है जिसका लहू अभी बहाना शेष है ? कौन है जो आपके आघात के लिये उपयुक्त है ! यदि मैं ही हूँ तो सीजर की मृत्यु के समय से उपयुक्त और कोई समय नहीं हो सकता, न आपके खड्गों से बढ़कर मुझे मारने के उपयुक्त कोई अन्य आयुध है क्योंकि सारे ससार के सर्वश्रेष्ठ रक्त ने उन्हें अमरता का वैभव दे दिया है । यदि आपको मुझसे कुछ विद्वेष है तो मैं अनुनय करता हूँ कि इन्हीं रक्त से भीगे हुए हाथों से, इन्हीं लोह की धारा से उत्तप्त हाथों से मेरी हत्या करके अपने आपको प्रसन्न करें । चाहे मुझे हजार वर्ष क्यों न जीवित रहना पड़े किंतु मृत्यु के लिये ऐसा उपयुक्त अवसर सभव है मुझे कभी भी नहीं मिल सकेगा । मृत्यु का कोई मार्ग, कोई स्थान मुझे ऐसी तृप्ति नहीं देगा जैसा कि सीजर का सान्निध्य । मेरे युग के निर्माताओ, प्रभुओ, आओ । मेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालो ।

ब्रूटस : ओ ऐन्टोनी ! हमसे मृत्यु की प्रार्थना मत करो ! हम अपने इस कार्य से, अपने हाथों से अवश्य खूनी और हत्यारे दिखाई

देते हैं किंतु तुम केवल हमारे हाथों को देख रहे हो । लहू की धारे गिराने वाले इन हाथों को नहीं, हमारे हृदयों को देखो । उन्हें क्यों नहीं देखते ? देखो उनमें कितनी करुणा है, सार्वजनिक रूप से रोम के प्रति किये हुए अन्याय से हमें कितनी व्याकुलता है ? अग्नि अग्नि को दूर करती है उसी प्रकार रोम के प्रति हमारी दया ने सीजर के प्रति हमारी दया को नष्ट कर दिया है । किंतु मार्क एन्टोनी ! तुम्हारे लिये हमारे खड्ग भीथरे पड़ गये हैं । अब हमारी भुजाओं में द्वेष नहीं, मैत्री ने हमारे हृदयों को बधु-भाव से ग्लपयित कर दिया है । आओ, स्वागत है । हमारे स्नेह, सद्भावनाओं और सम्मान को स्वीकार करो ।

कैशस . तुम्हारा मत नये गौरव प्रदान करते समय किसी भी योग्य व्यक्ति की भाँति समर्थ होगा ।

ब्रूटस कुछ देर ठहर जाओ, जब तक इस प्रजा की भयभीत भीड़ को हम अभय नहीं प्राप्त करा देते । उसके बाद मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं जो सीजर को इतना चाहता था, स्वयं मैंने ही उस पर , आघात करने का ऐसा कार्य क्यों किया ?

एन्टोनी : मुझे तुम्हारी बुद्धिमत्ता पर तनिक भी शंका नहीं है । आओ, तुमसे से हर एक अपना लहू से भीगा हुआ हाथ मुझसे मिलाओ ! मार्क ब्रूटस ! सबसे पहले तुम मुझे अपना हाथ दो । आओ कैस कैशस, तुम इसके बाद आओ । डेसियस ब्रूटस, आओ, आओ मेरे भद्र ट्रेवोनियस ! सर्व महानुभावो ! हाय ! मैं क्या कहूँ ? मेरा यज्ञ कैसी फिसलनी धरती पर खड़ा है ? या तो तुम मुझे कायर समझ रहे होगे या चापलूस ! यह सत्य है सीजर ! कि मैं तुमसे प्रेम करता था, यदि तेरी आत्मा उस

ब्रूटस : मैं जानता हूँ वह हमारा मित्र बन जायेगा ।

कैशस : यही मैं भी चाहता हूँ । किंतु फिर भी मेरे मन में उसके बारे में बड़ी शंका है । मेरी शंकाएँ सदैव सत्य होती हैं ।

ब्रूटस : वह लो ऐन्टोनी आ गया । आओ ! मार्क ऐन्टोनी । मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ ।

ऐन्टोनी : अरे परम शक्तिमान् सीजर ! आज तुम यहाँ इतने नीचे पड़े हुए हो ! क्या तुम्हारी ये दिग्विजय, वैभव, गौरव, महिमा और विजितों से प्राप्त कोष इस दीन दशा में आकर सीमित हो गये हैं ? महावीर ! विदा ! महानुभावो ! मैं नहीं जानता आप क्या करना चाहते हैं ? और कौन है जिसका लहू अभी बहाना शेष है ? कौन है जो आपके आघात के लिये उपयुक्त है ! यदि मैं ही हूँ तो सीजर की मृत्यु के समय से उपयुक्त और कोई समय नहीं हो सकता, न आपके खड्गों से बढ़कर मुझे मारने के उपयुक्त कोई अन्य आयुध है क्योंकि सारे ससार के सर्वश्रेष्ठ रक्त ने उन्हें अमरता का वैभव दे दिया है । यदि आपको मुझसे कुछ विद्वेष है तो मैं अनुनय करता हूँ कि इन्हीं रक्त से भीगे हुए हाथों से, इन्हीं लोह की धारा से उत्तप्त हाथों से मेरी हत्या करके अपने आपको प्रसन्न करें । चाहे मुझे हजार वर्ष क्यों न जीवित रहना पड़े किंतु मृत्यु के लिये ऐसा उपयुक्त अवसर संभव है मुझे कभी भी नहीं मिल सकेगा । मृत्यु का कोई मार्ग, कोई स्थान मुझे ऐसी तृप्ति नहीं देगा जैसा कि सीजर का सान्निध्य । मेरे युग के निर्माताओ, प्रभुओ, आओ । मेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालो !

ब्रूटस : ओ ऐन्टोनी ! हमसे मृत्यु की प्रार्थना मत करो ! हम अपने इस कार्य से, अपने हाथों से अवश्य खूनी और हत्यारे दिखाई

देते हैं किंतु तुम केवल हमारे हाथों को देख रहे हो । जूहू की धारे गिराने वाले इन हाथों को नहीं, हमारे हृदयों को देखो । उन्हें क्यों नहीं देखते ? देखो उनमें कितनी करुणा है, सार्व-जनिक रूप से रोम के प्रति किये हुए अन्याय से हमें कितनी व्याकुलता है ? अग्नि अग्नि को दूर करती है उसी प्रकार रोम के प्रति हमारी दया ने सीज़र के प्रति हमारी दया को नष्ट कर दिया है । किंतु मार्क एन्टोनी ! तुम्हारे लिये हमारे खड्ग भीयरे पड़ गये हैं । अब हमारी भुजाओं में द्वेष नहीं, मैत्री ने हमारे हृदयों को वधु-भाव से ग्लपयित कर दिया है । आओ, स्वागत है । हमारे स्नेह, सद्भावनाओं और सम्मान को स्वीकार करो ।

कैशस तुम्हारा मत नये गौरव प्रदान करते समय किसी भी योग्य व्यक्ति की भाँति समर्थ होगा ।

ब्रूटस : कुछ देर ठहर जाओ, जब तक इस प्रजा की भयभीत भीड़ को हम अभय नहीं प्राप्त करा देते । उसके बाद मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं जो सीज़र को इतना चाहता था, स्वयं मैंने ही उस पर , आघात करने का ऐसा कार्य क्यों किया ?

एन्टोनी : मुझे तुम्हारी बुद्धिमत्ता पर तनिक भी शंका नहीं है । आओ, तुमसे से हर एक अपना लहू से भीगा हुआ हाथ मुझसे मिलाओ ! मार्कस ब्रूटस ! सबसे पहले तुम मुझे अपना हाथ दो । आओ कैस कैशस, तुम इसके बाद आओ । डेसियस ब्रूटस, आओ, आओ मेरे भद्र ट्रैवोनियस ! सर्व महानुभावो ! हाय ! मैं क्या कहूँ ? मेरा यश कैसी फिसलनी धरती पर खड़ा है ? या तो तुम मुझे कायर समझ रहे होगे या चापलूस ! यह सत्य है सीज़र ! कि मैं तुम्हें प्रेम करता था, यदि तेरी आत्मा इस

समय देख रही होगी तो क्या मृत्यु से भी अधिक यातना उसे यह देखकर नहीं होगी कि तेरा ऐन्टोनी तेरे शत्रुओं के रक्त-रजित हाथों से हाथ मिला कर मित्रता कर रहा है, और वह भी हे परम वीर ! तेरे शत्रु के समुख ही ? यदि मेरे उतनी ही आँखें होती जितने तेरे शरीर पर घाव दीख रहे हैं, तो उनमें से उतने ही आँसू वहते जितना तेरे घावों से लोहू टपक रहा है ! यदि यह हो जाता तो तेरे शत्रुओं से मित्रता करने की अपेक्षा तो कहीं अच्छा होता । मुझे क्षमा कर जूलियस ! वीर ! हरिण की भाँति तुझे यहाँ लाया गया और यही तेरी हत्या की गई । यही तेरे अहेरी खड़े हैं, जिनके हाथ तेरे रक्त से रगे हुए हैं । तेरे रुधिर ने उनको प्रगट कर दिया है । ओ ससार ! तुम उसके लिये जंगल के समान थे । एक दिन तुममें ही वह स्वतंत्र धूमा करता था, उस दिन वह तुम्हारे जीवन का स्रोत था ! और आज वही सीज़र राजन्यों द्वारा आखेट किये हुए मृग की भाँति पड़ा है ।

कैशस : मार्क ऐन्टोनी !

ऐन्टोनी : क्षमा करो कैस कैशस ! सीज़र के शत्रु भी ऐसा ही कहेंगे और एक मित्र के द्वारा कहे हुए ये शब्द प्रेम की प्रशंसा के शब्द हैं ।

कैशस : मैं सीज़र की प्रशंसा करने पर तुम्हें दोष नहीं देता । किंतु तुम्हारा अब हमसे क्या संबंध होगा ? हम अपने मित्रों में तुम्हें भी एक समझें या अपने मार्ग पर चले और तुम पर निर्भर नहीं रहे ?

ऐन्टोनी : मित्र बनने के लिये ही तो मैंने तुमसे हाथ मिलाया है । सचमुच क्षण भर को नीचे सीज़र की ओर देख कर मैं अपने पथ

से विचलित हो गया था । मित्रो ! मैं तुम सबके साथ हूँ, तुमसे प्रेम करता हूँ, किंतु इसी आशा पर कि तुम बताओगे कि सीजर क्यों और किस तरह इतना खतरनाक था ।

ब्रूटस : अन्यथा तुम हमारे कार्य्य को बर्बरता समझना, हमारे कारण इतने ठोस है कि ऐन्टोनी ! यदि तुम सीजर के पुत्र भी होते तो भी सतुष्ट हो जाते ।

ऐन्टोनी : वस यही मैं चाहता हूँ । इस समय मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे नगर के चौक में उसके शव को ले जाने दें ताकि मित्र का कर्त्तव्य निर्वाह करते हुए मैं उसकी दाह-क्रिया के सबब में लोगो से बातचीत कर सकूँ ।

ब्रूटस : मार्क ऐन्टोनी ! तुम इसे ले जा सकते हो !

कैशस : ब्रूटस ! मैं तुमसे एक बात करना चाहता हूँ । (ब्रूटस से एक ओर) तुम नहीं जानते तुम क्या कर रहे हो । इस बात को स्वीकार मत करो कि उसकी दाह-क्रिया के समय ऐन्टोनी प्रजा से बातें कर सके । क्या तुम जानते हो कि जो वह कहेगा उससे लोगो पर क्या असर होगा ?

ब्रूटस : मुझे क्षमा करो । मैं स्वयं मंच पर से पहले प्रजा को बताऊंगा कि किन कारणों से सीजर मारा गया । जो कुछ ऐन्टोनी कहेगा, मैं पहले ही जनता से कहूँगा कि वह मेरी आज्ञा से कह रहा है और हम सब इसे स्वीकार करते हैं कि सीजर को दाह-क्रिया पूर्ण सत्कारों के साथ सपन्न हो । इससे तो हमें हानि के स्थान पर लाभ ही अधिक पहुँचेगा ।

कैशस : मैं नहीं जानता इसका नतीजा क्या होगा । परंतु मैं इसे पसंद नहीं करता ।

ब्रूटस : सुनो मार्क ऐन्टोनी ! तुम सीजर के शरीर को ले जाओ ।



अपने दाह-क्रिया-संबंधी भाषण में तुम हमें किसी प्रकार दोषी नहीं ठहराओगे। हाँ सीजर की चाहे कितनी प्रशंसा कर सकते हो और कहना कि वह सब तुम हमारी आज्ञा से कह रहे हो। अन्यथा तुम्हें किसी भी भाति उस सबमें सम्मिलित नहीं किया जायेगा। ज्योंही मेरा भाषण समाप्त हो, तुम उसी मंच से भाषण दोगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ, वही चलो।

ऐन्टोनी : मैं यही कहूँगा। मेरी और कोई अभिलाषा नहीं है।

ब्रूटस : तो शव को तैयार कर लो और हमारे पीछे आओ।

[ऐन्टोनी के अतिरिक्त सबका प्रस्थान]

ऐन्टोनी : (जहाँ सीजर का शव धूलि-सिक्त पड़ा है उस भूमिभाग को देख कर)

ओ लोहू से भीगी हुई धरती ! मुझे क्षमा कर कि मैं इन वधिकों से इतनी नम्रता और धैर्य से व्यवहार कर रहा हूँ। तू निश्चय ही संसार के किसी भी सुवर्ण-युग में उत्पन्न होने वाले सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति का खडहर मात्र है। उस हाथ को धिक्कार है जिसने यह बहुमूल्य रक्त पृथ्वी पर गिराया है। ये तेरे घाव मुझे बोल उठने को उकसा रहे हैं। लाल-लाल होठों वाले एक मूक मुख की भाँति पुकार उठने को आतुर-से तेरे इन घावों के सामने आज मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि इन लोगों पर एक भयानक अभिघाप उतरेगा। समस्त इटली में भीषण गृहयुद्ध की आग जलेगी और सारा देश विप्लव से काँपेगा। हत्या, विध्वंस और रक्तपात का इतना आधिक्य हो उठेगा कि माताएँ, सग्राम-भूमि के कठोर योद्धाओं के हाथों से अपने दुधमुँहें बच्चों को कट-कट कर गिरता देख कर भी केवल मुस्कराती रहेगी क्योंकि उनकी कोमलता जड़ हो चुकेगी। इन वर्चस्वताओं के असरय कार्यों के कारण दया का चिन्ह मात्र भी शेष नहीं रहेगा। और

प्रतिशोध की भूखी सीज़र की आत्मा, नरक की दाहपूर्ण अग्नियो से निकली हुई प्रतिहिंसा की देवी के साथ घूमती फिरेगी । और वह विकराल देवी साम्राज्ञी की भाँति समस्त देश में फूटकार भरती पुकारती डोलेगी कि ध्वस कर दो ! सर्वनाश कर दो ! विप्लव, अकाल, अग्निदाह आदि युद्ध के रक्तलोलुप कुत्ते कर्कश स्वर से भोकते हुए टूट पड़ेगे । सारी पृथ्वी सड़ते हुए शवों की चिरायध से ढँक जायेगी और दाह-सस्कार के लिये तड़पते हुए, दम तोड़ते हुए प्राणी भयानक हाहाकार करते हुए पड़े रहेंगे ।

[एक सेवक का प्रवेश]

क्या तू ऑक्टवियस सीज़र का ही तो सेवक नहीं है ?

सेवक हाँ मार्क ऐन्टोनी ।

ऐन्टोनी . सीज़र ने उसे रोम आने को लिखा था ।

सेवक . उन्हें पत्र मिल गया है । वे आ रहे हैं । उन्होंने मुझसे कुछ मुँहजवानी खबर आपको भिजवाई है ..

[शव को देख कर]

ओ !! सीज़र !!

ऐन्टोनी : तेरा हृदय भर आया है । उधर हट जा और जी भर कर रो ले । व्यथा घेरे तो रही है क्योंकि तुझे रोता देख कर मेरी आँखों में भी वेदना की बूँद छलकती आ रही हैं । क्या तेरे स्वामी आ रहे हैं ?

सेवक : आज रात वे रोम में २१ मील दूरी पर आ जायेंगे ।

ऐन्टोनी : तुरंत तू जीघ्रता से चला जा और जो कुछ घटना हुई है उन्हें शीघ्र बता दे । रोम व्यथा में डूब गया है, रोम खतरनाक हो उठा है । अभी ऑक्टवियस के लिये रोम सुरक्षित स्थान नहीं है । शीघ्र जा और उन्हें सूचना दे । यही कह दे कि, लेकिन अभी

ठहर । जब तक इस शव को मैं अपने साथ चौक में न ले जाऊँ तू मेरे पास रह । वहाँ मैं भाषण देकर पहले इसकी जाँच करूँगा कि जनता इन हत्यारों के इस क्रूर कार्य को कैसा समझती है । उसी के अनुसार तू तरुण ऑक्टेवियस को जा कर सारी परिस्थिति समझाना । आ अब हाथ बँटा ।

[सीज़र के शव के साथ उनका प्रस्थान]

## दृश्य २

[रोम । चौक]

[ब्रूटस और कैशस का नागरिकों की एक भीड़ के साथ प्रदेश]

नागरिकगण : हमें सतोष क्यों हो ? कारण दो कि हम सतुष्ट हैं ।

ब्रूटस : तो मित्रों, मेरे साथ आओ और जो कुछ मैं कहूँ उसे ध्यान से सुनो । कैशस ! तुम दूसरी सड़क पर जाओ । और भीड़ को बाँट दो । जो मुझे सुनना चाहें वे यही रुक जायें । जो कैशस के साथ जाना चाहें वे उधर चले जायें । सीज़र की मृत्यु के कारण सार्वजनिक रूप से प्रगट किये जायेंगे ।

एक नागरिक : मैं ब्रूटस की बात सुनूँगा ।

दूसरा नागरिक : मैं कैशस की बात सुनूँगा और तब इनके कारणों की तुलना की जायेगी, जब अलग से हम इस पर विवेचन करेंगे ।

तीसरा नागरिक : जात ! जात ! कुलीन वीर ब्रूटस ! मंच पर पहुँच गया है ।

ब्रूटस : अंत तक धैर्य से सुनना ! रोम के निवासियों ! मेरे मित्रों ! मेरे देशवासियों ! मेरे कारणों को जानने के लिये मुझे सुनो ! शांति ले मुझे अपना ध्यान दो कि तुम स्पष्ट सुन सको । मेरे आत्म-सम्मान के लिये मुझ पर विश्वास करो, मेरे आत्मसम्मान का

आदर करो कि तुम्हे मेरी बातों पर विश्वास हो सके। अपनी तर्क-बुद्धि से मेरा निर्णय करो। अपनी भावनाओं को जाग्रत करो ताकि तुम उचित रूप से न्याय कर सको। यदि इस सभा में सीजर का कोई प्रिय मित्र हो तो उससे मैं कहता हूँ कि उससे किसी प्रकार भी सीजर के प्रति ब्रूटस का प्रेम कम नहीं था। यदि वह मित्र यह जानना चाहे कि ब्रूटस सीजर के विरुद्ध क्यों खड़ा हुआ तो सुनो मेरा यही उत्तर है : यह नहीं कि मैं सीजर से कम प्रेम करता था, बल्कि वास्तव में मुझे रोम से कहीं अधिक प्रेम था। क्या चाहते हो तुम ? किसे अच्छा समझते हो ? कि सीजर जीवित रहता और तुम सब दासों की भाँति मरते, या यह कि सीजर मर गया ताकि तुम सब स्वतंत्र व्यक्तियों की भाँति जीवित रह सकोगे ? मैं उसके लिये रोता हूँ क्योंकि सीजर मुझसे प्रेम करता था। आनन्द मुझमें उद्बलित होता है क्योंकि वह भाग्यशाली था। मैं उसका सम्मान करता हूँ क्योंकि वह दुर्धर्प पराक्रमी था, किंतु मैंने उसे मार डाला क्योंकि वह महत्त्वाकांक्षी था। उसके प्रेम के लिये अश्रु बहते हैं, सौभाग्य के लिये हर्ष बिखरता है, वीरता के लिये सम्मान झुकता है किंतु महत्त्वाकांक्षा के लिये मृत्यु, मृत्यु है। कौन है यहाँ ऐसा जघन्य नराधम जो स्वेच्छा से दास होना पसंद करेगा ? यदि कोई है तो बोले ? उसे मैंने अवश्य दुःख पहुँचाया है। कौन है यहाँ इतना असंस्कृत जो रोम का निवासी, रोम का नागरिक बनना पसंद नहीं करता ? यदि कोई है तो बोले। मैंने अवश्य उसे दुःख पहुँचाया है। ऐसा कौन कुटिल और नीच है जो अपने देश को नहीं चाहता, अपने देश से प्रेम नहीं करता ? यदि कोई है तो बोले ! मैंने अवश्य उसे दुःख पहुँचाया है। बोलो ! मुझे उत्तर दो। मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

ऐन्टोनी : रोम के निवासियों ! मेरे मित्रों ! मेरे देशबन्धुओं ! सुनो मेरी बात को सुनो ! मैं सीजर का दाह-संस्कार करने आया हूँ न कि उसकी प्रशंसा करने ! मनुष्य की मृत्यु के उपरांत उमंगें गुण तो प्रायः उसके दाह के साथ ही समाप्त हो जाते हैं, किन्तु उसके अवगुण बहुत दिनों तक जीवित रहते हैं। सीजर के गुणों को इसी गति को प्राप्त होने दो। वीर ब्रूटस आपसे कहा है कि सीजर महत्त्वाकांक्षी था। यदि ऐसा ही था तो वह एक भयानक अपराध था और भीषण रूप से सीजर ने उसका मोल भी चुकाया है। यहाँ ब्रूटस और अन्योक्त आज्ञा से—क्योंकि ब्रूटस एक परम सम्मानित और आदरणीय पुरुष है, क्योंकि वे सब, सब ही परम आदरणीय व्यक्ति हैं—सीजर की दाह-क्रिया के सम्बन्ध में आपसे कुछ कहने आया हूँ वह मेरा मित्र था, वह मेरे लिये न्यायशील था, कृतज्ञ था, किन्तु ब्रूटस कहता है कि वह महत्त्वाकांक्षी था और ब्रूटस एक परम सम्मानित और आदरणीय पुरुष है। सीजर अनेक देशों से वन्दियों को पकड़ कर रोम लाया था, जिनके लिये शत्रुओं द्वारा चुकाये गये मूल्य ने रोम के सार्वजनिक कोषों को समृद्ध किया था। क्या यही सीजर की महत्त्वाकांक्षा प्रतीत होती है ? कौन नहीं जानता कि दीन-दुखियों की कलह पुकार सुन कर सीजर रो उठता था। महत्त्वाकांक्षा तो कठोरता और निर्दयता को जन्म देती है ! लेकिन ब्रूटस कहता है कि वह महत्त्वाकांक्षी था और ब्रूटस एक परम सम्मानित और आदरणीय पुरुष है। तुम सबने देखा था कि लूपरिकल के उत्सव में मैंने तीन बार उसे ताज दिया था किन्तु उसने तीनों बार उसे लेने से इकार कर दिया था। क्या यह भी महत्त्वाकांक्षा थी ? फिर भी ब्रूटस कहता

हैं कि वह महत्वाकाक्षी था और निश्चय ही ब्रूटस एक परम आदरणीय और सम्मानित पुरुष है । मैं ब्रूटस के वक्तव्य को असत्य सिद्ध करने को नहीं बोल रहा हूँ, मैं तो जो जानता हूँ उसे ही आपसे कह रहा हूँ । एक दिन आप सब उससे प्रेम करते थे । क्या वह अकारण ही था ? कौन-सा है वह कारण जो आज आपको उसकी मृत्यु पर शोक मनाने से रोक रहा है ? ओ न्यायशक्ति ! तू किन हिल पशुओं में पहुँच गई है ! और मनुष्यों ने अपना तर्क खो दिया है ? मेरी वेदना के लिये मुझे क्षमा करिये क्योंकि मेरा हृदय उस कफन में सीजर के शव के पास पहुँच गया है । ठहर जाओ ! मुझे फिर से धैर्य धारण करने दो !

एक नागरिक : मेरे विचार से उसकी बातों में तथ्य है ।

दूसरा नागरिक : यदि ठीक तरह से इस पर सोचा जाय तो लगता है कि सीजर के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया गया है ।

तीसरा नागरिक : आइये, यदि ऐसा हुआ है तो इसका अर्थ है कि अब उसकी जगह कोई और बड़ा अत्याचारी आयेगा ।

चौथा नागरिक : उसके शब्दों पर ध्यान दिया ? वह ताज नहीं लेना चाहता था । इससे तो प्रगट है कि वह महत्वाकाक्षी नहीं था ।

एक नागरिक : यदि यह नतथ्य है तो किसी को इसका मंहगा मूल्य चुकाना पड़ेगा ।

दूसरा नागरिक : देखो हम विचारे को । कैसी रो-रोकर आँखें अगारे-सो लाल हो गई हैं ।

तीसरा नागरिक : ऐन्टोनी में बढ कर महान रोम में कोई नहीं !

चौथा नागरिक : सुनो-सुनो । वह फिर दोलने वाला है ।

ऐन्टोनी : कल तक सीजर के मुख से निकला हुआ शब्द सनार को

चुनौती देता था, किंतु आज वह यहाँ पडा हुआ है। आज वह इतना दीन हो गया है कि तुमसे कोई भी उसका सम्मान तक नहीं कर रहा ? मेरे बन्धुओं ! यदि मैं तुम्हारे विवेक और हृदय को क्रोध और विप्लव से विह्वल करने की इच्छा करूँगा तो वह ब्रूटस के साथ अच्छा नहीं होगा, कैंगस के साथ बुराई करने के समान होगा। तुम जानते हो, वे परम आदरणीय और सम्मानित व्यक्ति हैं। मैं उनके साथ अन्याय नहीं करूँगा। मैं ब्रूटस तथा ऐसे अन्य सम्मानित और परमादरणीय व्यक्तियों के विरुद्ध कुछ भी कहने के स्थान पर यही पसन्द करूँगा कि इस मृत शरीर के प्रति अन्याय करूँ, अपने प्रति अन्याय करूँ, आप लोगों के प्रति अन्याय करूँ। किंतु यह देखिये ! सीजर का एक मुद्रांकित पत्र है। इसमें उसकी वसीयत है। इसे मैंने उसके कमरे में पाया है। ओ प्रजाजनो ! मुझे क्षमा करो कि मैं इसे पढ़ कर नहीं सुनाऊँगा क्योंकि मेरे इसे पढ़ते ही आप नोग सीजर के शव के समीप जा कर उसे आदर से चूमने लगोगे, उसके पवित्र रक्त से अपने रुमालों को भिगो लेगे, और प्रार्थना करेंगे कि स्मृति उसी जीवित रखने के लिये आपको उसके सिर का एक बाल ही मिल जायें। आप प्रार्थना करेंगे कि आपके मरते समय आप अपनी वसीयत में यही लिख जायें कि वह बाल आपको सतान को एक पैतृक संपत्ति की भाँति ही उत्तराधिकार में प्राप्त हो।

चौथा नागरिक : हम इस वसीयत को मुनेगे मार्क एन्टोनी, पढ़ कर सुनाओ।

सब . वसीयत पढ़ो ! वसीयत पढ़ो ! हम सीजर की वसीयत को सुनना चाहते हैं !

ऐन्टोनी : धैर्य धारण करो मेरे मित्रो ! मुझे इसे नहीं पढ़ना चाहिये ! तुम्हारे लिये यह उचित नहीं होगा कि तुम अपने प्रति सीजर के प्रेम को जान लो । तुम पत्थर नहीं हो, अचेतन काठ नहीं हो । तुम मनुष्य हो और मनुष्य होने के नाते, सीजर की वसीयत सुनने पर, तुम भडक उठोगे । यह तुम्हें क्रोध से पागल बना देगी । अच्छा यही है कि आप लोग यह जाने ही नहीं कि आप ही सीजर के उत्तराधिकारी हैं । क्योंकि यदि आप इसे जान गये तो पता नहीं क्या परिणाम निकलेगा !

चौथा नागरिक : वसीयत पढो ! हम उसे सुनना चाहते हैं ऐन्टोनी ! तुम्हें वसीयत पढ कर हमें सुनानी ही होगी । सीजर की अन्तिम इच्छा बताओ !

ऐन्टोनी : धैर्य धारण करिये ! शांत रहिये ! रुकिये तो सही ! आपको बताते-बताते मैं बहुत आगे बढ गया हूँ । मुझे डर है कि मैं परम आदरणीय और सम्मानित व्यक्तियों के प्रति अन्याय कर रहा हूँ, उनके विरुद्ध बोल रहा हूँ जिनके छुरो ने सीजर के शरीर को गोद दिया है । मुझे डर लग रहा है ।

चौथा नागरिक . वे देशद्रोही हैं ! सम्मानित और आदरणीय पुरुष ॥ सब वसीयत ! वसीयत पढो ।

दूसरा नागरिक : वे कुटिल नराधम हत्यारे हैं ! वसीयत सुनाओ ! वसीयत पढो !

ऐन्टोनी : आप लोग मुझे वसीयत पढने के लिये विवश करते हैं ! तो सीजर के शव के चारों ओर गोला बनाकर खड़े हो जाओ । और पहले मुझे उसे दिखाने दो जिसने यह वसीयत लिखी है ? क्या मैं मच से उतर सकता हूँ ? आज्ञा है ?

सब नागरिक : आ जाओ !



एक नागरिक . उतर आओ ।

तीसरा नागरिक : तुम्हें पूर्ण स्वतन्त्रता है ।

[ऐन्टोनी उतरता है ।]

चौथा नागरिक : गोला बनाओ । घेर कर खड़े हो ।

एक नागरिक . कफ़न से अलग रहो । शव से हट कर खड़े हो ।

दूसरा नागरिक . ऐन्टोनी के लिये जगह करो । आओ वीर ऐन्टोनी ।

ऐन्टोनी . नहो । आप मुझसे ज़रा हट कर खड़े हो ।

सब : हटो-हटो । पीछे खड़े हो । जगह दो । पीछे हटो ।

ऐन्टोनी . यदि तुम्हारे नयनों में अश्रु शेष हैं, तो आओ, अब अपने हृदयों को द्रवित करने को तत्पर हो जाओ । इस चोंगे को आप सब पहुँचानते हैं ? मुझे याद है सीजर ने इसे जब पहले पहल पहना था । वह ग्रीष्म-काल की एक संध्या थी, वह अपने शिविर में था उस दिन उसने नर्वी<sup>१</sup> को पराजित किया था । देखो ! यह है वह जगह जहाँ कैशस का छुरा घुसा था । देखो ! ईर्ष्यालु कास्का ने कितना गहरा घाव किया है । सीजर के अत्यंत प्रिय पात्र ब्रूटस ने इस जगह लीह फलक घुसेड़ दिया था और जब उसका वह अभिशप्त छुरा बाहर निकला था तब देखो ! सीजर का रक्त कैसा भर-भर कर वह उठा था ! मानो सोता फूट निकला हो ! मानो वह यह जानना चाहता था कि क्या ब्रूटस ने ही वह निर्दय आघात किया था ? जानते हो न ? ब्रूटस ही सीजर का पथ-प्रदर्शक था । वह उसे देवदूत मानता था । ओ देवताओ ! आकाश के स्वामियो ! तुम साक्षी हो कि सीजर ब्रूटस ने कितना प्रेम करता था । यही, हाँ यही आघात सारे आघातों से अधिक निर्मम था, क्योंकि जब महान सीजर ने उसे भी छुरा

---

१ एक जाति — बैल्जिक ।

मारते हुए देखा तब पड्यत्रकारियों की भुजाओं से भी अधिक मर्मन्तिक वेदना-दायिनी उस अकृतज्ञ कृतघ्नता ने सीजर के हृदय को अवसाद में डुबा दिया और उसका विशाल हृदय उस समय आर्त पीडा से खड-खड हो गया । उस समय शोक, भय नहीं, शोक से व्याकुल हो कर उसने अपने चोगे को अपने चेहरे पर लपेट कर अपनी आँखों को छिपा लिया क्योंकि ऐसा दारुण विश्वासघात देखना उसके लिये असह्य हो गया था । और तब पोम्पी की मूर्ति के चरणों के समीप, जब कि उसके शरीर से रक्त की धाराएँ गिर रही थी, सीजर, महान सीजर गिर पड़ा ! मेरे देशवासियों ! आह ! कैसा था वह पतन ! उस समय मानो मैं और तुम और सब ही एक साथ ही गिर पड़े । और रक्त से भीगा हुआ हत्यारा विश्वासघात हमारे ऊपर रौद कर चढ़ गया । क्यों रोते हो ! अब रो कर भी क्या होगा ? क्या करुणा तुम्हारे मर्म को विदीर्ण कर रही है ? रक्त की बूंदें हैं कि कृत-ज्ञता द्रवित हो रही है ? द्रयार्द्र आत्माओं ! क्या तुम सीजर के फटे हुए वस्त्र को देख कर ही इस प्रकार फूट-फूट कर रो रहे हो ? इधर देखो ! यह रहा वह स्वयं ! देखते हो आघातों से विकृत देह ! पड़ा है यहाँ । किसने मारा है इसे ! विश्वास-घाती ! देशद्रोहियों ने ।

एक नागरिक . कितना करुण दृश्य है ।

दूसरा नागरिक : हाय ! सीजर महान !

तीसरा नागरिक हाय रे दुर्दिन !

चौथा नागरिक . अरे धूर्त देशद्रोहियों !

एक नागरिक . कितनी निर्दय हत्या हुई है ।

दूसरा नागरिक हम इसका प्रतिशोध लेगे !

एक नागरिक : उतर आओ ।

तीसरा नागरिक : तुम्हे पूर्ण स्वतन्त्रता है ।

[ऐन्टोनी उतरता है ।]

चौथा नागरिक : गोला बनाओ । घेर कर खड़े हो ।

एक नागरिक : कफन से अलग रहो । शव से हट कर खड़े हो ।

दूसरा नागरिक : ऐन्टोनी के लिये जगह करो । आओ वीर ऐन्टोनी !

ऐन्टोनी : नहीं । आप मुझसे जरा हट कर खड़े हो ।

सब : हटो-हटो । पीछे खड़े हो । जगह दो । पीछे हटो ।

ऐन्टोनी : यदि तुम्हारे नयनों में अश्रु शेष है, तो आओ, अब अपने हृदयों को द्रवित करने को तत्पर हो जाओ । इस चोगे को आप सब पहँचानते हैं ? मुझे याद है सीजर ने इसे जब पहले पहल पहना था । वह ग्रीष्म-काल की एक सध्या थी, वह अपने शिविर में था उस दिन उसने नर्वी<sup>१</sup> को पराजित किया था । देखो ! यह है वह जगह जहाँ कैशस का छुरा घुसा था । देखो ! ईर्ष्यानुकास्का ने कितना गहरा घाव किया है । सीजर के अत्यंत प्रिय पात्र ब्रूटस ने इस जगह लौह फलक घुसेड दिया था और जब उसका वह अभिशप्त छुरा बाहर निकला था तब देखो ! सीजर का रक्त कैसा भर-भर कर वह उठा था । मानो सोता फूट निकला हो । मानो वह यह जानना चाहता था कि क्या ब्रूटस ने ही वह निर्दय आघात किया था ? जानते हो न ? ब्रूटस ही सीजर का पथ-प्रदर्शक था । वह उसे देवदूत मानता था । ओ देवताओ ! आकाश के स्वामियों ! तुम साक्षी हो कि सीजर ब्रूटस ने कितना प्रेम करता था । यही, हाँ यही आघात सारे आघातों ने अधिक निर्मम था, क्योंकि जब महान सीजर ने उसे भी छुरा

मारते हुए देखा तब पड़्यत्रकारियों की भुजाओं से भी अधिक मर्मन्तिक वेदना-दायिनी उस अकृतज्ञ कृतघ्नता ने सीजर के हृदय को अवसाद में डुबा दिया और उसका विशाल हृदय उस समय आर्त पीड़ा से खड़-खड़ हो गया। उस समय शोक, भय नहीं, शोक से व्याकुल हो कर उसने अपने चोगे को अपने चेहरे पर लपेट कर अपनी आँखों को छिपा लिया क्योंकि ऐसा दारुण विश्वासघात देखना उसके लिये असह्य हो गया था ! और तब पोम्पी की मूर्ति के चरणों के समीप, जब कि उसके शरीर से रक्त की धाराएँ गिर रही थी, सीजर, महान सीजर गिर पड़ा ! मेरे देशवासियों ! आह ! कैसा था वह पतन ! उस समय मानो मैं और तुम और सब ही एक साथ ही गिर पड़े। और रक्त से भीगा हुआ हत्यारा विश्वासघात हमारे ऊपर रौद कर चढ़ गया। क्यों रोते हो ! अब रो कर भी क्या होगा ? क्या करुणा तुम्हारे मर्म को विदीर्ण कर रही है ? रक्त की बूंदें हैं कि कृतज्ञता द्रवित हो रही है ? द्रयार्द्र आत्माओं ! क्या तुम सीजर के फटे हुए वस्त्र को देख कर ही इस प्रकार फूट-फूट कर रो रहे हो ? इधर देखो ! यह रहा वह स्वयं ! देखते हो आघातों से विकृत देह ! पड़ा है यहाँ ! किसने मारा है इसे ! विश्वासघाती ! देशद्रोहियों ने !

एक नागरिक : कितना करुण दृश्य है !

दूसरा नागरिक : हाय ! सीजर महान !

तीसरा नागरिक : हाय रे दुर्दिन !

चौथा नागरिक : अरे धूर्त देशद्रोहियों !

एक नागरिक : कितनी निर्दय हत्या हुई है !

दूसरा नागरिक : हम इसका प्रतिशोध लेंगे !

सब : प्रतिगोव ! उठो ! बढो ! जला दो ! भस्म कर दो । मारो !

बध कर दो ! एक भी देशद्रोही जीवित न रहे ।

ऐन्टोनी : ठहरो मेरे देशवासियो !

एक नागरिक : शांत-शांत । बोर ऐन्टोनी को सुनो ।

दूसरा नागरिक . बोलो ! बोलो ! हम इसके साथ चलेगे । हम उसके इशारे पर जान देंगे ।

ऐन्टोनी : मेरे अच्छे मित्रो ! मेरे दयालु मित्रो ! नहीं, मैं तुम्हें इस प्रकार अकस्मात् ही विप्लव की बाढ में बहाना नहीं चाहता । जिन्होंने यह कार्य किया है वे परम आदरणीय और सम्मानित व्यक्ति हैं । मैं नहीं जानता उनका सीजर से क्या व्यक्तिगत विद्वेष था जो उन्होंने ऐसा कार्य किया । वे बुद्धिमान हैं, वे परम आदरणीय और सम्मानित हैं । निश्चय ही वे तुम्हें अपने कृत्य का कारण भी बतायेंगे । मित्रो ! मैं तुम्हें अनुचित रूप से प्रभावित करने नहीं आया हूँ । ब्रूटस की भाँति मैं बलता भी नहीं हूँ । तुम सबको ज्ञात है कि मैं एक सीधा-सादा व्यक्ति हूँ । मैं दुराव नहीं जानता । मैं अपने मित्र से प्रेम करता हूँ । और इसे वे भी जानते हैं, जिन्होंने मुझे प्रजा में बोलने का अधिकार दिया है । न मुझमें बुद्धि है, न चातुर्य ! न मैं शब्दजाल जानना हूँ, न मुझमें वक्तृता की शक्ति ही है । कोई योग्यता रही, कोई मेरे पास कार्य-कुशलता भी नहीं है कि मैं मनुष्यों के लोह को खाला सकूँ ! जिसे आप स्वयं जानते हैं वही मैंने आपके सामने सीधी-सादी भाषा में व्यक्त किया है । मैंने तो आपको केवल प्रिय सीजर के घाव दिखाये हैं जो गूँगे मुखों की भाँति मुझको बोलने के लिये प्रेरित कर रहे हैं । किन्तु यदि मैं ब्रूटस होता या ब्रूटस मेरे स्थान पर खड़ा होता तो मैंने आपको चेतना को

भकभोर कर रख दिया होता कि सीजर का प्रत्येक घाव मुँह खोल कर पुकारने लगता, जिसका आवाहन सुन कर महानगर रोम के हृदयहीन पाषाण तक विक्षुब्ध विद्रोहियों की भाँति विप्लव के लिये सन्नद्ध हो कर गरजने लगते ।

सब : विप्लव ! विद्रोह ! हम विद्रोही हैं !

एक नागरिक : हम ब्रूटस के घर को धू-धू करके जला देंगे ।

तीसरा नागरिक : चलो ! आगे बढ़ो ! षड्यंत्रकारियों को ढूँढ़ो ।

एन्टोनी : मेरे देशवासियों ! सुनो ! अभी मेरी बात समाप्त नहीं हुई ।

सब : शात ! शात ! एन्टोनी बोल रहा है ।

वीर एन्टोनी बोल रहा है ।

एन्टोनी : मेरे मित्रों ! आप ऐसा काम करने चल पड़े हैं कि अभी आप समझ भी नहीं रहे हैं । सीजर ने आपका इतना स्नेह पाने योग्य क्या किया है ? कैसा दुःख है कि आप नहीं जानते । आइये मैं बताऊँ । क्या आप उस वसीयत के बारे में सब कुछ भूल गये हैं ?

नागरिक : अरे हाँ ! वसीयत ! सुनो ! रुको ! पहले वसीयत को तो सुनो ।

एन्टोनी : यह है वह वसीयत ! देखो सीजर की मुद्रा से अंकित है । वह प्रत्येक रोम के नागरिक को देता है—प्रत्येक नागरिक को ७५ मुद्राएँ ।<sup>१</sup> ७५ द्राख्मा ।

दूसरा नागरिक : उदार महान सीजर ! दानी सीजर ! हम उसको हत्या का प्रतिशोध लेंगे !

तीसरा नागरिक : राजराज सीजर !

ऐन्टोनी : शांति से मेरी बात सुनो ।

नागरिक : सुनो-सुनो ।

ऐन्टोनी : इसके अतिरिक्त अपने उद्यान, अपने कुञ्ज, अपने फलो से लदे नये उपवन, जो टाइवर नदी के इस ओर है, वे सब उसने आपको दिये हैं । आपको, आपकी सतान को, सदा के लिये दिये हैं, सार्वजनिक आनन्द के लिये दिये हैं कि आप उनमें विहार कर सकें और हर्ष तथा मंगल मनाया करें । यह था एक सीज़र ! क्या ऐसा दूसरा हो सकेगा ?

एक नागरिक कभी नहीं, कभी नहीं होगा । चलो-चलो ! हम पवित्र स्थान में उसके शव का दाह-संस्कार करें और चिता की धधकती लकड़ियाँ लेकर पड़्यत्रकारियों के घरों को जला दें । चलो, शव को ले चले ।

दूसरा नागरिक : जाओ, अग्नि लाओ !

तीसरा नागरिक : लकड़ियाँ एकत्र करो ।

चौथा नागरिक : चलो हम आसन, कुर्सी, खिड़कियाँ और जो हाथ लगे तोड़ लायें ।

[शव के साथ नागरिकों का प्रस्थान]

ऐन्टोनी . आग फूट निकली है । बढ़ने दो इस विप्लव की ज्वाला को । धधकने दो ।

[एक सेवक का प्रवेश]

कौन ? तू है ? क्या बात है ?

सेवक : श्रीमान् ! ऑक्टेवियस रोम में आ भी गये हैं ।

ऐन्टोनी : कहाँ है वे ?

सेवक : वे और लैपीडस सीज़र के भवन में हैं ।

ऐन्टोनी : मैं भी सीधे वही जा कर उनसे मिलता हूँ । कैसे भीके से

आये है वे । भाग्य अनुकूल है । लगता है हम सफल होंगे ।

सेवक : मैंने उन्हें कहते सुना था कि ब्रूटस और कैशस रोम के नगर-द्वार से पागलो की तरह घोड़ों पर भागे जा रहे थे ।

एन्टोनी : शायद उन्हें पता चल गया है कि मैंने लोगों को कितना उत्तेजित कर दिया है । अब मुझे अक्टेवियस के पास ले चलो ।

[ प्रस्थान ]

दृश्य ३

[ रोम । एक सड़क ]

[ कवि सिन्ना का प्रवेश ]

सिन्ना : मैंने रात को सुपना देखा था कि मैं सीजर के साथ दावत खा रहा था । किंतु अब यह कल्पना मुझे डरा रही है । आज मैं घर के बाहर नहीं जाना चाहता किंतु न जाने क्या मुझे खींचे लिये जा रहा है ?

[ नागरिकों का प्रवेश ]

एक नागरिक : क्या है तुम्हारा नाम ?

दूसरा " : कहाँ जा रहे हो ।

तीसरा " : ऐ, तुम कहँ रहते हो ?

चौथा " : तुम विवाहित हो या कुँवारे ।

दूसरा " : प्रत्येक व्यक्ति को सीधा उत्तर दो ।

एक " : और सक्षेप से ।

चौथा " : और विवेक से ।

तीसरा " : और सच-सच । कुगल इसी में है ।

सिन्ना : क्या है मेरा नाम ? कहाँ जा रहा हूँ मैं ? और रहता कहाँ हूँ ? विवाहित हूँ या कुँवारा ? और तब प्रत्येक व्यक्ति को सीधा,



सक्षिप्त, विवेकपूर्ण और सच-सच उत्तर दूँ ? विवेकपूर्ण मैं कहता हूँ कि मैं कुँवारा हूँ . . .

दूसरा नागरिक : तुम्हारा कहने का मतलब तो यह हुआ कि जो विवाह करते हैं वे मूर्ख हैं ? इसके लिये एक कडी तुम्हें मेरे हाथों भेलनी होगी । और बोलो । सीधे ।

सिन्ना : सीधे ! मैं सीजर के दाह-संस्कार में जा रहा हूँ ।

एक नागरिक : दोस्त की तरह या दुश्मन की तरह ।

सिन्ना : दोस्त की तरह ।

दूसरा नागरिक : यह तो सीधा उत्तर हुआ ।

चौथा नागरिक : अपने निवास के बारे में—संक्षेप में

सिन्ना संक्षेप में मैं राजधानी के पास रहता हूँ ।

तीसरा नागरिक : और जनाव आपका नाम, सच-सच ।

एक नागरिक : इसके टुकड़े-टुकड़े कर दो ! यह पड़्यत्रकारी है ।

सिन्ना : मैं कवि सिन्ना हूँ, मैं कवि सिन्ना हूँ ।

चौथा नागरिक : तब इसे इसकी बुरी कविताओं के लिये टुकड़े-टुकड़े कर दो ।

सिन्ना : मैं पड़्यत्रकारी सिन्ना नहीं हूँ ।

चौथा नागरिक : उससे क्या होता है । उसका नाम तो है । इसके हृदय को फाड़ कर उसका नाम निकाल लो और फिर हम इसे जोड़ देंगे ।

तीसरा नागरिक : मारो ! काट डालो इसे ! जलती लकड़ियाँ ले कर चलो ! ब्रूटस, कैशस, सबको जला दो ! कुछ डेसियस के घर जाओ, कुछ कास्का के, कुछ लिगारियस के । चलो ! आगे बढ़ो !

[ प्रत्यान ]

## चौथा अंक

दृश्य १

[रोम । एन्टोनी के घर का एक कमरा]

[एन्टोनी, आक्टैवियस और लैपीडस एक मेज के चारों ओर बैठे हैं।]

एन्टोनी : तो इन सबको मृत्यु ही देनी होगी । यह है इनके नाम ।  
आक्टैवियस : क्या कहते हो लैपीडस ! तुम्हारे भाई का नाम भी  
इस सूची में है । तुम स्वीकार तो करते हो ?

लैपीडस : करता हूँ ।

आक्टैवियस : लिख लो एन्टोनी, उसका भी नाम ।

लैपीडस : लेकिन शर्त यह है कि पब्लियस को भी मृत्युदण्ड मिलेगा  
मार्क एन्टोनी ! वह तुम्हारा भाज्जा है ?

एन्टोनी : वह तो नहीं ही रहेगा । देखो ! उसका नाम तो मैंने पहले  
ही लिख रखा है । लेकिन लैपीडस ! तुम सीजर के घर जाओ ।  
और उसकी वसीयत ले आओ ताकि उस वसीयतनामे में से दानों  
को कम कर दे ।

लैपीडस : तो क्या आप लोग यही मिलेंगे ?

आक्टैवियस : या तो यही होंगे या फिर राजधानी में ।

[लैपीडस का प्रस्थान]

एन्टोनी : यह एक तुच्छ और व्यर्थ का व्यक्ति है । यह केवल इस  
योग्य है कि इधरसे उधर सदेसे पहुँचाये । क्या यह उचित होगा  
कि रोमन साम्राज्य की विशाल शक्ति को जिन तीन व्यक्तियों  
के हाथ में रखा जायेगा, उनमें से एक यह भी होगा ?

आक्टैवियस : तुमने ही तो उसे इस योग्य समझा है और तुमने ही

उससे यह भी राय ली कि अपने शत्रुओं को मृत्युदण्ड के लिये बनाई जाने वाली गुप्त सूची में किस-किस का नाम लिखा जाये ?

ऐन्टोनी : ऑक्टेवियस ! मैंने तुमसे कही ज्यादा बरसाते देखी है । यद्यपि हम इस व्यक्ति को इसलिये सम्मान दे रहे हैं कि वह हमारे ऊपर होने वाले आक्रमण के भार को बँटा कर हमें हल्का कर सके, लेकिन यह याद रखो कि वह उसे ऐसे ही ढोयेगा जैसे कोई गधा सोने के ढेर को ढोते में पसीने से लथपथ हो जाता है किंतु उसका लाभ नहीं उठा सकता । हम तो नकेल डाल कर उसे चाहे जिधर चलायेगे । जब हम खजाने को अपने गतव्य पर पहुँचा चुकेंगे तब हम उसे कान हिला कर औरों के साथ चरने को छोड़ देंगे ।

ऑक्टेवियस तुम जो चाहो करो लेकिन यह याद रखना कि वह एक तपा हुआ बहादुर सिपाही है ।

ऐन्टोनी : और ऐसा ही मेरा घोड़ा भी है ऑक्टेवियस ! इसी लिये तो मैं उसे भी चारा-पानी देने की मेहनत करता हूँ । वह एक ऐसा जानवर है जिसे मैं लड़ना सिखाता हूँ सिर्फ इसी लिये कि चाहे जिधर वक्त पर मोड़ सकूँ, दौड़ा सकूँ, रोक सकूँ, घुमा सकूँ । और कुछ हद तक यही हाल लैपीडस का है । ऐसे ही उसे भी सिखाना चाहिये ताकि वह हमारा काम कर सके क्योंकि वखुद वह अक्ल का मट्ठा है । उसकी समझ में अपने आप तो कुछ नहीं आता । जिने लोग पुराना कह कर छोड़ देते हैं उसे ही वह फँगन समझ कर स्वीकार कर लेना है । उसके बारे में तो सिवाय इसके कि उसे अपने हाथ का एक पुतला समझ कर बातें की जाये और कोई बात नहीं करनी चाहिये । सुनो ऑक्टेवियस ! अब जरा बड़ी-बड़ी बातों पर गौर करो । ब्रूटस और कैशस मेना एकत्र

कर रहे है, अपनी शक्ति बढ़ा रहे है । हमे अब सीधी करवाई करनी चाहिये । आओ, हम सब अपनी शक्ति को सगठित करे । सारे मित्र एक हो जाये, हमारे सारे सर्वश्रेष्ठ साधन तुरत प्रयोग मे लाये जाने चाहिये । हमे शीघ्र ही इस पर मन्त्रणा करनी चाहिये कि किस तरह छिपे हुए खतरे जाहिर किये जाये और जाहिर खतरो का किस तरह जवाब दिया जाय ।

**आँकटेवियस** हमे यही करना चाहिये क्योंकि हम खूँटे से बँधे हुए उस रीछ की तरह है जिसे उसके दुश्मन कुत्तो की तरह घेर लेते है । मुझे तो डर यह है कि बहुत-से जो बड़े भोले बन कर हमे देख कर मुस्कराते है वे ही लाखो आफते ढालने वाले न सावित हो ।

[ प्रस्थान ]

## दृश्य २

[ सदिस् के निकट सैन्यनिवेश में ब्रूटस के शिविर के सामने ]

[ भेरी-निनाद । ब्रूटस, लूसिलियस लूशियस, तथा अन्य सिपाहियो का प्रवेश ।

टिटोनियस और पिन्डारस उनसे मिलते हुए बढ़ते हैं । ]

**ब्रूटस** : रुक जाओ ।

**लूसिलियस** : खडे होने की आज्ञा दो ।

**ब्रूटस** : लूसिलियस ! क्या कैशस पास ही है ?

**लूसिलियस** : हाँ, निकट ही है । अपने स्वामी की ओर से तुम्हारा अभिवादन करने को पिन्डारस आया है ।

**ब्रूटस** : पिन्डारस ! तुम्हारा स्वामी मुझे सद्भावनाएँ भेज रहा है । या तो उसमे कुछ परिवर्तन आ गया है या निम्न कोटि के पदाधिकारी इसके लिये उत्तरदायी है । जो हो । कुछ बाने हुई है

या नहीं हुई है, कुछ भी हो, लेकिन जब वह आ ही गया है तो मुझे उत्तर मिलना ही चाहिये ।

पिन्डारस : मुझे इसमें रत्तीभर भी शंका नहीं है कि मेरे वीर और उच्चहृदय स्वामी आपके सामने उच्च और वैसे ही निष्कपट सिद्ध होंगे जैसे वे वास्तव में हैं ।

ब्रूटस : इसमें कोई सन्देह नहीं । लूसिलियस, सुनो । मुझे बताया उसने तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जब तुम उससे मिलने गये थे ?

लूसिलियस : उसका व्यवहार था तो बहुत सम्मानपूर्ण और सौजन्योचित था । किंतु उसमें न तो वह स्वतंत्रता थी, न वह मैत्रीभाव ही था जैसा कि वह पहले दिखाया करता था ।

ब्रूटस : लूसिलियस ! तुम्हारे कहने से तो यह लगता है कि पहले का स्नेह अब घटता जा रहा है । जब प्रेम कम होने लगता है तब बाह्याडंबर निश्चित रूप से ऊपर छाने लगता है । गहरे मिन अपने सीधे-सादे व्यवहार में किसी प्रकार की चालबाजी नहीं दिखाते किंतु खोंखले आदमी पहले तो जोगीले घोड़े की तरह लम्बी चौकड़ी भर कर अपना वेग दिखाते हैं किंतु जब उनको ऐड लगाई जाती है तब उनका सिर लटक जाता है और धोखे-बाज घोड़ों की तरह परीक्षा में असफल हो जाते हैं । क्या उनकी सेना भी आ रही है ?

लूसिलियस : आज रात तो वे सर्दिस में ही चिताना चाहते हैं । वैसे अधिकांश सेना, जिसमें अश्वारोही बहुत हैं, कैशस के साथ आ गई है ।

[नेपथ्य में सेना के चलने का शब्द]

ब्रूटस : सुनो ! वह आ गया । नम्रता ने उससे मिलने के लिये नहीं ।

[कैशस और उसकी सेना का प्रवेश]

कैशस : रुक जाओ !

ब्रूटस : रुक जाओ ! श्रीरों से कहो ।

एक सैनिक : रुक जाओ !

दूसरा सैनिक : रुक जाओ !

तीसरा सैनिक : रुक जाओ !

कैशस : परम आदरणीय बधु ! तुमने मेरे साथ अन्याय किया है ।

ब्रूटस : आकाश के देवताओ ! मेरा न्याय करो ! जब मैं अपने शत्रुओ के साथ भी अन्याय नहीं करता, तो अपने एक बधु के प्रति कैसे कर सकता हूँ ?

कैशस : ब्रूटस ! तुम्हारी यह भव्य आकृति तुम्हारे अन्यायो को ढँक लेती है और जब तक उन्हें करते हो

ब्रूटस : कैशस ! गात हो अपनी वेदना को शातिपूर्वक कहो । मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ । हम दोनों की सेनाएँ यहाँ उपस्थित हैं और हमे देख रही हैं । पारस्परिक प्रेम के अतिरिक्त हमे उनके सामने और कोई भाव प्रगट नहीं करना चाहिये । हमे लड़ना नहीं चाहिये । आज्ञा दो कि वे यहाँ से हट जाये । तब मेरे शिविर मे चल कर कैशस ! तुम अपने दुःख को प्रगट करो । मैं तुम्हारी बात वही सुनूँगा ।

कैशस . पिन्डारस ! हमारे सेनानायको को आज्ञा दो कि वे अपने आधीन सैनिको को ले कर दूर हट जाये ।

ब्रूटस : लूसिलियस ! तुम भी यही करो । जब तक हम अपनी मन्त्रणा समाप्त न कर ले तब तक किसी को भी हमारे शिविर मे न आने देना । लूसियस और टिटीनियस मेरे द्वार पर पहरा दे ।

[प्रस्थान]

## दृश्य ३

[ब्रूटस का शिविर]

[ब्रूटस और कॅशस का प्रवेश]

कॅशस : तुमने मेरे साथ जो अन्याय किया है वह इसी से प्रगट हो जायेगा। सर्दियनो से रिश्वत लेने के अपराध पर लूशियस पैला को तुमने अपमानित करके दण्डनीय ठहराया है। उसकी ओर से प्रार्थना करते हुए मैंने तुम्हें कई पत्र लिखे, मैं उस व्यक्ति को जानता था, किंतु तुमने उन पत्रों की उपेक्षा की।

ब्रूटस : ऐसे मामले के बारे में लिख कर तो तुमने अपनी ही बुराई की।

कॅशस : लेकिन ऐसे समय में यह भी ठीक नहीं है कि साधारण से साधारण अपराध पर तुम ऐसी राय दो।

ब्रूटस : कॅशस ! मुझे तुमसे कहना ही पड़ता है कि तुम पर भी रिश्वत लेने के अभियोग हैं। लोग कहते हैं कि तुम ऊँचे और जिम्मेदारी के पदों को ऐसे लोगों को बेच रहे हो जिनमें न कोई विशेष योग्यता है न विशेष गुण ही।

कॅशस : मैं रिश्वत का लालची हूँ ? तुम जानते हो ब्रूटस कि मेरे दोस्त होने के नाते तुम मुझसे नाजायज फायदा उठा रहे हो ? यदि तुम्हारे अतिरिक्त कोई और ऐसी बात कहता तो मैं देवताओं का शपथ खाकर कहता हूँ, यही दो टुकड़े कर देता।

ब्रूटस : केवल तुम्हारे नाम का ही सबंध भ्रष्टाचार से लगा हुआ है इसीलिये अभी तक तुम दण्ड से बचे हुए हो !

कॅशस : तुम दण्ड की बात कर रहे हो ?

ब्रूटस : कॅशस ! १५ मार्च का स्मरण करो और याद करो कि उन दिन क्या हुआ था ? क्या उन दिन न्याय के लिये ही महान जूलियन सीजर का रुधिर नहीं बहा था ? कौन ऐसा नाच था

जिसने नाम के अतिरिक्त किसी अन्य भावना की लिप्सा से उसके शरीर पर आघात किया था । क्या डाकुओ का सहयोगी बन जाने के कारण सारे ससार के एक विख्यात और अग्रणी पुरुष जूलियस सीज़र को जिन लोगो ने मारा था, उन्ही मे से क्या एक ऐसा निकलेगा जिसकी उँगलियाँ रिश्वत के धन से गँदी हो जायेगी ? क्या वह हमारे महान् आत्मसम्मान को, हमारे गौरव को मुट्ठीभर व्यथे का सुवर्ण ले कर बेच देगा ? यदि ऐसा है तो एक रोम का वीर निवासी होने की अपेक्षा मेरे लिये कही अच्छा होता कि मैं एक कुत्ता होता और चद्रमा की ओर भौंका करता ।

कैशस : ब्रूटस ! मुझे उत्तेजित मत करो । मैं इसे नहीं सह सकता । मेरे अधिकारो को सीमावद्ध करते समय तुम अपने आपको भूले जा रहे हो ! मैं एक सिपाही हूँ । मैं एक तुमसे पुराना योद्धा हूँ, समझौता करने के लिये मैं तुमसे अधिक अनुभवी और योग्य हूँ ;

ब्रूटस : नहीं कैशस, तुम नहीं हो । यही काफी है ।

कैशस : हूँ और निश्चय हूँ ।

ब्रूटस : मैं कहता हूँ नहीं हो ।

कैशस : मुझे और आवेश से न भरों । मैं अपने आपको भूल जाऊँगा । अपने जीवन की चिंता करो । मुझे और मत उकसाओ ।

ब्रूटस : चले जाओ ! नीच !

कैशस : क्या यह भी संभव है ?

ब्रूटस : तो सुन लो ! क्या मैं तुम्हारे क्रोध से विचलित हो जाऊँगा ?

क्या कोई पागल मुझे धूरने लगेगा तो मैं डर जाऊँगा ?

कैशस : ओ देवताओ ! वोलो मेरे देवताओ ! क्या यह सब भी मुझे



सहना पड़ेगा ?

ब्रूटस : हाँ कैशस ! यही नहीं, अभी तो बहुत कुछ शेष है ! तब तक सहना होगा जब तक तुम्हारा गर्वीं हृदय खड-खड नहीं हो जाये। जाओ ! अपना यह क्रोध अपने दासों को प्रदर्शित करो कि वे तुम्हारे आश्रित आतंक से थर्रा उठें। क्या मैं भी तुमसे डरूँ ? क्या मैं भी तुम्हारा आदर करूँ ? क्या मैं भी तुम्हारे आक्रोश के सामने अपने घुटने टेक दूँ ? देवताओं की शपथ ! अपना क्रोध, मैं कहता हूँ, तुम्हें ही निगलना पड़ेगा, चाहे उससे तुम्हारा हृदय ही क्यों न विदीर्ण हो जाये ! और यही नहीं, तुम्हारे इस दीन क्रोध को देख कर मैं ठठा कर हँसा करूँगा, आनदविभोर हुआ करूँगा।

कैशस . तो क्या इसका यह नतीजा निकलेगा ? यहाँ तक ?

ब्रूटस : यदि तुम समझते हो कि तुम मुझसे अच्छे योद्धा हो तो फिर इसका भी निर्णय हो जाने दो। अपने दम की सत्य होने दो। मुझे भी इससे प्रसन्नता ही होगी। महान पुरुषों से कुछ सीखने में मुझे सदा ही प्रसन्नता होती है।

कैशस : तुम मेरे साथ अन्याय कर रहे हो ब्रूटस ! तुम मेरे साथ अत्याचार कर रहे हो ! हर प्रकार से अन्याय कर रहे हो ! मैंने अवस्था में बड़ा योद्धा कहा था, न कि तुमसे अच्छा ! क्या मैंने अच्छा कहा था ?

ब्रूटस : यदि तुमने कहा भी था तो भी मुझे कोई चिंता नहीं।

कैशस : जब सीजर जीवित था तब उसमें भी मुझे उस प्रकार उत्तेजित करने का साहस नहीं था।

ब्रूटस : जात ! जात ! किंतु तुममें भी उसे उस प्रकार क्रुद्ध करने का साहस नहीं था।

कैशस : मुझमें साहस नहीं था ?

ब्रूटस : नहीं ।

कैशस : क्या मैं उसे उत्तेजित नहीं कर सकता था ?

ब्रूटस : मैं कहता हूँ सारे जीवन में नहीं, क्योंकि उस समय तुम्हें अपना जीवन प्रिय था ।

कैशस . मेरे प्रेम का आधार ले कर बहुत कुछ अपनी ओर से कल्पना मत कर लो । मैं ऐसा भी कर सकता हूँ जिससे भले ही मुझे बाद में अत्यंत दुःखी होना पड़े ।'

ब्रूटस : तुमने ऐसा काम तो कर भी डाला है कैशस । जिसके लिये तुम्हें दुःखी होना ही चाहिये । मैं तुम्हारी धमकियों से भयभीत नहीं हो सकता । मैं ईमानदारी के हथियारों से इतना सजा हुआ हूँ कि तुम्हारी धमकियाँ धीमी हवा की भाँति मेरे चारों ओर से निकल जाती हैं । मैं उनकी परवाह नहीं करता । मैंने तुमसे कुछ सुवर्ण माँगा था परंतु तुमने देने से मना कर दिया । देवता जानते हैं, मैं किसानों की गाड़ी कमाई छीनने के जघन्य साधन की अपेक्षा अपने हृदय से परिश्रम करके अपने रक्त की एक-एक बूंद टपका कर ही धन एकत्र करना उचित समझता हूँ । मैंने तुमसे धन माँगा था कि अपने सैनिकों का वेतन चुका सकूँ, किंतु तुमने देने से मना कर दिया । क्या यह कैशस के लिये उचित था ? क्या मैं भी कैशस को ऐसा ही उत्तर देता ? यदि मार्क्स ब्रूटस ऐसा लोलुप हो जाये कि अपने मित्रों को देने के स्थान पर वह तुच्छ धन को कृपणता से संचित करने लगे तो आकाश के देवताओं ! उस पर इतने भीषण वज्रपात करो कि वह खंड-खंड हो जाये ।

कैशस : मैंने कभी मना नहीं किया ।

ब्रूटस : तुमने किया था ।

कैशस : कभी नहीं किया । वह व्यक्ति जिसने मेरी ओर से तुम्हें ऐसा उत्तर आ कर सुनाया वह निश्चय ही मूर्ख था । ब्रूटस ! तुमने मेरे हृदय को विदीर्ण कर दिया है । एक मित्र को अपने मित्र के अभाव और दोषों को सहन करना चाहिये, किंतु ब्रूटस ! तुम मेरी निर्वलताओं को इतना बड़ा करके दिखाते हो जितनी वे हैं भी नहीं ।

ब्रूटस : जब तक तुमने स्वयं ही अपनी निर्वलताओं को मेरे समक्ष ला कर उपस्थित नहीं किया, तब तक मैंने तो कुछ भी नहीं कहा ।

कैशस : तुम मुझसे प्रेम नहीं करते ।

ब्रूटस : मैं तुम्हारे अपराधों को पसंद नहीं करता ।

कैशस : मित्र की आँख होती तो वह निर्वलता को देखा भी नहीं पाती ।

ब्रूटस : एक खुगामदी को तो वे दिखाई ही न देती चाहे वे देवताओं के महान और विशाल पर्वत से भी बड़ी क्यों न होती ।

कैशस : आओ एन्टोनी ! तरुण ऑक्टेवियस आओ ! केवल कैशस ने ही अपना प्रतिशोध लो क्योंकि कैशस का दिल इस दुनिया में अब भर गया है । जिनसे वह प्रेम करता है वे ही उससे घृणा करते हैं । उसका बंधु उसको दबा रहा है, मानो वह उसका दाम हो । उसके समस्त अपराधों की सूची बना कर रखी गई है । और उसके बंधु ने उन्हें रट लिया है, बार-बार सुना-सुना कर उसके हृदय को वेव रहा है । आह ! क्या ही अच्छा होता कि रो-रो कर मैं अपनी चैनना को ही घुना-घुला कर बहा देता ! यह मेरा छुरा है, यह मेरी खुली हुई छाती है, इसके अंदर प्लूटो की

समस्त धनराशि से भी अधिक मूल्यवान, सुवर्ण से भी अधिक सपन्न और पूर्ण मेरा हृदय है। यदि तुम रोम के एक वीर निवासी हो तो इसको निकाल लो। मैं, जिसने तुम्हे सोना देना अस्वीकार कर दिया था, तुम्हे अपना हृदय देता हूँ। मारो। जैसे तुमने सोजर को मारा था, क्योंकि मैं जानता हूँ कि जब तुम उससे अत्यंत घृणा करते थे तब भी उसके प्रति तुम्हारे हृदय में कैशस के प्रति होने वाले प्रेम की अपेक्षा कहीं अधिक प्रेम था।

ब्रूटस : अपने छुरे को म्यान में रखो ! जब तुम्हारी इच्छा होती है तभी तुम क्रुद्ध हो लेते हो। मनमानी करने की आदत तो तुम्हारे स्वभाव के कारण है, यह मैं जानता हूँ। मैं सब कुछ सह लूंगा, भले ही तुम मुझे अपमानित कर लो। मैं एक भेड़ के मेमने की तरह नम्र हूँ। जो ऐसे ही क्रोध को ले कर चलता है जो हृदय में छिपा रहता है परंतु कभी-कभी चमक उठता है और वह भी तब जब चकमक की तरह रगड़ कर उसे बाहर निकलने को विवश किया जाता है। क्षणभर में ही वह शांत हो जाता है।

कैशस . क्या दुःखी और क्रुद्ध होने पर कैशस केवल ब्रूटस के उपहास और विनोद का ही साधन बन कर जीवित रह सकता है ?

ब्रूटस : जब मैंने वह सब कहा था तब मैं भी क्रुद्ध हो गया था।

कैशस . क्या तुम इतना भर स्वीकार करते हो ? तो मुझे अपना हाथ दो।

ब्रूटस . और मेरा हृदय भी।

कैशस . आह ब्रूटस !

ब्रूटस : क्यों क्या हुआ ?

कैशस . क्या तुम मुझे इतना भी प्यार नहीं करते कि मेरे इस क्रोध को ही सह लिया करो, और जानते हो कि ऐसा स्वभाव मैंने

कैशस : आह मृत्युञ्जय देवताओ !

[लूशियस का मदिरा तथा मोमवत्तियों के साथ प्रवेश]

ब्रूटस : उसके वारे मे और बाते न करो—मुझे मदिरा का चपक दो...कैशस ..मैं इसमे सारी कटुता को डुबा देना चाहता हूँ ।

[पीता है।]

कैशस : मेरा हृदय भी उस महान प्रतिज्ञा के लिये प्यासा है । ढाल ! लूशियस ! इतनी ढाल कि प्याला ऊपर तक उफन आये और मदिरा बहने लगे । मैं जितनी पियूंगा उतना ब्रूटस का प्रेम तो मुझे नहीं मिलेगा ।

[पीता है।]

ब्रूटस : भीतर आ जाओ टिटोनियस !

[लूशियस का प्रस्थान । टिटोनियस और मेसाला का प्रवेश]

ब्रूटस : स्वागत प्रिय मेसाला ! अब हम लोग इस वक्ती के पास बैठे और अपनी जरूरत के सवालो पर विचार करे ।

कैशस : पोशिया ! क्या तू चली गई ।

ब्रूटस : मैं तुमसे अनुनय करता हूँ कि पोशिया के वारे मे और याद न दिलाओ । मेमाला ! मुझे यहाँ पत्र मिले है कि मार्क ऐन्टोनी और तरुण ऑक्टेवियस एक विशाल सेना ले कर हम पर आक्रमण के लिये आ रहे है । वे लोग फिलिपी की ओर बढ़ रहे है ।

मेसाला : यही भाव लिये कुछ पत्र मुझे भी मिले हैं ।

ब्रूटस : और क्या लिखा है ?

मेसाला : ऑक्टेवियस, ऐन्टोनी और लैपीडस ने राज्य के अपराधी घोषित करके सिनेट के १०० सदस्यों को मरवा डाला है ।

ब्रूटस : तो हमारे पत्र परस्पर नहीं मिलते ? मेरे मे तो सिनेट के ७० सदस्य लिखे हैं और वे अपराधी घोषित किये गये थे । उनमे

सिसरो भी एक है ।

कैशस : सिसरो भी एक है ।

मेसाला : उस दण्ड की आज्ञा मे सिसरो भी मारा गया है । मेरे प्रभु !

क्या आप अपनी पत्नी से पत्र प्राप्त करते रहे है ?

ब्रूटस नहीं मेसाला ।

मेसाला : क्या आपके पत्रो मे उसके विषय मे कुछ भी नहीं लिखा है ?

ब्रूटस : कुछ भी नहीं मेसाला ।

मेसाला . क्या अजीब बात है ।

ब्रूटस : क्यों पूछते हो ? क्या उसके बारे मे तुम्हारे पत्र मे कुछ लिखा है ?

मेसाला . नहीं मेरे प्रभु ।

ब्रूटस : तुम रोम के निवासी हो मेसाला । सच बताओ ।

मेसाला तो फिर एक रोम-निवासी की भाँति ही यह सत्य सुनने को तत्पर हो जाये । वह निश्चय ही मर गई है और वह भी आश्चर्य-जनक रीति से ।

ब्रूटस : पोशिया ! विदा ! मेसाला ! हमे भी तो मरना है । यह सोच कर कि पोशिया को एक दिन मरना ही था, मैं उसकी मृत्यु के दुःख को धैर्य के साथ सहन किये लेता हूँ ।

मेसाला : महान व्यक्ति महान हानियो को इसी प्रकार सहन कर लेते है ।

कैशस : मेरा भी विचार इस विषय मे ऐसा ही है किंतु मेरी प्रकृति तो मुझे इसे सहने नहीं देती ?

ब्रूटस : जीवितो के विषय मे विचार करे । क्या सोचते हो ? क्या तुरंत फिलिपी की ओर बढ़ना चाहिये ?

कैशस : मैं इसे अच्छा नहीं समझता ।

ब्रूटस : तुम्हारा कारण ?

कैशस : वह यह है—अच्छा होगा कि शत्रु हमें ढूँढ़े । उसके साधन इसमें नष्ट होंगे, सेना थकेगी, उसका अपना नाश होगा । और हम पड़े-पड़े चुपचाप यही शक्ति एकत्र करेंगे, और जागरूक रहेंगे ।

ब्रूटस : जरूर ही अच्छे वजूहातो को अपने से बेहतर को जगह देनी होगी । इस जगह और फिलिपी के बीच के लोग मजबूर हो कर ही हमारा साथ दे रहे हैं क्योंकि वे अपनी इच्छा से फौज में भर्ती नहीं हुए हैं । अगर दुश्मन बढ़ता हुआ आ गया तो वह इन लोगों को ले कर अपनी फौजी ताकत बढ़ा लेगा और बहुत-से लड़ने के साधन भी जुटा लेगा । इन सब बातों से दुश्मन की हिम्मत बढ़ेगी ही । अगर हम हमला करेंगे तो बीच में ही उसकी यह मदद कट जायेगी क्योंकि अगर फिलिपी में हमने उससे मुठभेड़ की तो यह लोग तो पीछे रह जायेंगे ।

कैशस : परंतु वधु ! मेरी भी तो सुनो.....

ब्रूटस : क्षमा करना, यह भी तो सोचो कि हमें अपने दोस्तों से जितनी मदद मिल सकती थी वह मिल चुकी है । हमारी सेनाएँ पर्याप्त हैं । हमारे कारण भी उचित हैं । शत्रु प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, इधर हम इतने चढ़ कर अब उतार की ओर हैं । मनुष्यों के कार्यों में एक बार बाढ़ आती है जिसे यदि उचित समय पर पहचान लिया गया तो मनुष्य भाग्यशाली बन जाता है और यदि आया हुआ अवसर चूक गया तो उसके जीवन की यात्रा दुःख और आपत्तियों से भर जाती है । आज हम लोग ऐसे ही समुद्र पर बह रहे हैं अतः जैसे ही हमें सुयोग मिले हमें उसका लाभ उठाना चाहिये और नहीं तो अपने इस साहसिक कार्य का ही त्याग कर देना चाहिये ।

कैशस : तब जैसी तुम्हारी इच्छा हो वही सही । हम लोग फिलिपी चल कर ही उनका सामना करेंगे ।

ब्रूटस : हमारी बातों में बहुत रात बीत गई है और प्रकृति की आज्ञा मानना भी आवश्यक ही है । थोड़ी देर हम आराम कर ले । और कोई बात तो नहीं कहनी है ?

कैशस और कुछ नहीं कहना है । अच्छा नमस्कार ! कल प्रातःकाल ही हम लोग शीघ्र ही चल देंगे ।

ब्रूटस : लूशियस ! (लूशियस का पुनः प्रवेश) मेरा चोगा !

[लूशियस का प्रस्थान]

विदा मेरे अच्छे मेसाला ! नमस्कार टिटोनीयस ! वीर, कुलीन, कैशस । आपकी रात अच्छी कटे । आराम मिले ।

कैशस : आह प्रिय वधु ! यह रात्रि बड़ी दुःखद घटना से प्रारंभ हुई थी । हमारी आत्माओं में कभी भी भगवान न करे ऐसा विरोध खड़ा हो । ब्रूटस ! ऐसी रात कभी भी न आये ।

ब्रूटस : सब ठीक है ।

कैशस : नमस्कार मेरे प्रभु !

ब्रूटस : नमस्कार मेरे प्रिय और श्रेष्ठवधु !

टिटोनीयस और मेसाला : नमस्कार श्रीमन्त ब्रूटस !

ब्रूटस : विदा ! मित्रो विदा ।

[सबका प्रस्थान]

[लूशियस का गाउन के साथ प्रवेश]

ब्रूटस : ला मुझे चोगा दे । तेरा वाजा कहाँ है ?

लूशियस : शिविर में है ।

ब्रूटस : बड़ी ऊनीदी आवाज में बोल रहा है तू ? बड़ा शैतान है ।

फिर तेरा भी क्या कसूर है ? चौकसी भी कब तक करनी पड़ती



है ! क्लॉडियस तथा मेरे कुछ और आदमियों को बुला ताकि ये मेरे शिविर में गद्दों पर सोवें ।

लूशियस वारो और क्लॉडियस !

[वारो और क्लॉडियस का प्रवेश]

वारो : क्या स्वामी बुलाते हैं ?

ब्रूटस : मैं चाहता हूँ कि आप लोग मेरे ही डेरे में सो रहें । हो सकता है कि किसी काम के लिये मुझे तुम्हें अपने बंधु कैंगस के पास भेजने के लिये शीघ्र जगाना पड़े !

वारो : बहुत अच्छा । हम सेवा में उपस्थित हैं । जब आज्ञा देगे प्रतीक्षा करेंगे ।

ब्रूटस : नहीं मित्रो । यह ठीक नहीं होगा । आप लोग सोवें । हो सकता है, मुझे किसी को जगाने की जरूरत ही न पड़े । देख लूशियस ! जिस किताब की मुझे जरूरत थी न ? वह यहाँ है । मैंने इसे चोगे की जेब में रख दिया था ।

[वारो और क्लॉडियस लेटते हैं ।]

लूशियस . श्रीमान् मुझे तो पूरा विश्वास था कि आपने उसे मुझे नहीं दिया था ।

ब्रूटस : हाँ मुझसे ही भूल हुई । मेरे अच्छे लडके, मैं बड़ा भुलकण्ड हूँ । क्या तू थोड़ी देर अपनी उनीदी पलकों का झपकना किसी तरह रोक कर मुझे अपना बाजा बजा कर सुना सकता है ?

लूशियस . जिसमें मेरे स्वामी को प्रसन्नता मिले !

ब्रूटस . मुझे सुख मिलता है रे बालक ! कष्ट दे रहा हूँ तुझे, पर तुझे भी तो यह अच्छा लगता है ।

लूशियस : यह तो मेरा कर्त्तव्य है श्रीमान् ।

ब्रूटस : तेरी शक्ति से अधिक कार्य मैं तुझसे नहीं लेना चाहता ।

मै जानता हूँ नवयुवको की आवश्यकता होती है ।

लूशियस : मेरे स्वामो । मै तो सो चुका हूँ ।

ब्रूटस : यह अच्छा किया । और तू फिर भी तो सोयेगा, मै अब तुझसे अधिक प्रतीक्षा नहीं कराऊँगा, यदि मै जीवित रहा तो सदैव तेरे लिये कृपालु रहूँगा ।

[संगीत और गान]

कैसी उनीदी तान है ! ओ हत्यारी नीद ! तूने अपना भारी दण्ड लूशियस के सिर पर रख दिया है ? वह तुझे गीत सुना रहा था । अच्छी बात है । शैतान सो जा । मै तुझे इतनी देर जगा कर और कष्ट न दूँगा । कहीं हिलने में तू बाजे को न तोड़ डाले । ला मै ले लूँ तुझसे । मेरे अच्छे बालक ! सो जा । देखूँ, देखूँ तो, जहाँ मैने पढ़ना छोड़ा था, कहीं पृष्ठ तो नहीं पलट गया ? अरे यह रहा ।

[बैठता है । सीजर के प्रेत का प्रवेश]

अरे यह वत्ती कितनी धुंधली है ! अरे ! यह कौन आ रहा है ? शायद यह मेरे नेत्रों की निर्बलता है कि मुझे यह भयानक आकृति दिखाई दे रही है । यह तो मेरी ओर ही आ रही है । क्या है तू...सचमुच कुछ है...तू कोई देवता है या देवदूत... या कोई शैतान...कि मेरा लहू जमा जा रहा है...और रोगटे खड़े हो रहे हैं...कौन है तू...बोल...

प्रेत : ब्रूटस, मै तेरी दुरात्मा हूँ ।

ब्रूटस : क्या चाहते हो तुम.....

प्रेत : तुझे यह बताना कि तू मुझे फिलिपी में मिलेगा ।

ब्रूटस : अच्छा ! तब तो मै फिर तुझे देखूँगा ?

प्रेत : हाँ फिलिपी में ।

ब्रूटस : अच्छी बात है, मैं तुझसे फिलिपी में फिर मिलूँगा...

[प्रेत अतर्धान होता है।]

जब मुझे साहस आया वह लुप्त हो गयी ! ओ दुष्ट आत्मा !  
मैं तुझसे और बात करना चाहता हूँ । लड़के ! लूशियस ! वारो !  
क्लॉडियस ! अरे ! जागो ! क्लॉडियस !

लूशियस : मेरे स्वामी, बाजे के तार बिगड़ गये हैं ।

ब्रूटस : वह समझ रहा है कि अब भी वह अपना बाजा बजा रहा है ।

जाग लूशियस ! जाग !

लूशियस : प्रभु !

ब्रूटस : लूशियस ! क्या तूने सुपना देखा था कि तू इस तरह चिल्ला  
उठा !

लूशियस . पता नहीं स्वामी, मैं क्यों पुकार उठा था ! क्या मैं  
चिल्लाया था ?

ब्रूटस . हाँ ! क्या तूने कुछ देखा था ?

लूशियस : नहीं प्रभु ! कुछ नहीं ।

ब्रूटस . तो सो जा फिर ! लूशियस सो जा । क्लॉडियस ! वारो !

जाग ! जाग !

वारो मेरे प्रभु !

क्लॉडियस : स्वामी !

ब्रूटस . तुम लोग नींद में इस तरह क्यों चिल्ला उठे थे ?

वारो-क्लॉडियस . श्रोमान् ! हम क्या चिल्लाये थे ?

ब्रूटस : हाँ । क्या तुमने कुछ देखा था ?

वारो : नहीं स्वामी, मैंने कुछ नहीं देखा ।

क्लॉडियस : न मैंने ही कुछ देखा ।

ब्रूटस : जाओ ! अब केंगस को सवाद दो कि अपनी सेना लेकर वह

मेरी सेना के चलने के पहले ही प्रातःकाल चल पड़े । हम पीछे  
आयेगे ।

वारो-क्लाँडियस जो आज्ञा स्वामी !

[प्रस्थान]

दाँत निकालते हुए, कुत्तो की तरह जीभ लटकाते हुए, गुलामों की तरह भुक्तते हुए, सीजर के पाँव चूम रहे थे तुम जब उस कुत्ते, कमीने कास्का ने पीछे से सीजर की गर्दन पर छुरा मारा था। नीच ! खुशामदियो !

कैशस : खुशामदियो ! देखो ब्रूटस ! धन्य हो तुम, यदि आज कैशस का अधिकार चलता तो इस जीभ ने आज इतनी हिम्मत नहीं की होती ।

आँक्टेदियस : आओ ! मतलब की बात करो । अगर बातें करने से पसीना आता हो तो शीघ्र ही यह रक्त को बूढ़े वन जायेगा । मैं पड़्यत्रकारियो के विरुद्ध खड्ग उठाता हूँ ! जानते हो यह म्यान मे कब लौटेगा ? तब तक नहीं जब तक सीजर के तेतीस मे से हर एक घाव का बदला नहीं ले लिया जाता ! तब तक नहीं जब तक फिर एक नया सीजर नहीं खडा हो जाता जिसे काटने के लिये फिर देशद्रोहियो के खड्ग रुधिर से भीग जायेंगे ! !

ब्रूटस : सीजर ! यदि तुम्हे देशद्रोहियो के हाथो से ही मरना वदा था तो तुम्हे उन्हे अपने साथ ही लाना होगा ।

आँक्टेदियस : मैं भी यही आशा करता हूँ । मैं ब्रूटस की तलवार से मरने को पैदा नहीं हुआ हूँ ।

ब्रूटस : अरे ! तू अपने कुल मे सर्वोत्तम है किंतु मेरे खड्ग से मृत्यु प्राप्त करने से अधिक सम्माननीय तेरे लिये और कुछ नहीं है ।

कैशस : मूर्ख लडका है यह । इस सम्मान के लिये उपयुक्त नहीं क्योंकि यह तो एक विलामी और नर्त्तक<sup>१</sup> से मिल गया है ।

एन्टोनी : कैशस वंसा ही कुटिल है !

१. Masker—मुख पर नकली चेहरा चटाने वाला । जैसे रासधारो होता है । अपमानजनक शब्द ।

आँक्टेवियस : बढो ऐन्टोनी । आओ ! देशद्रोहियो ! हम तुम्हें चुनौती देते हैं । यदि तुममे आज लडने का साहस है तो युद्धभूमि मे आओ ! आज नही तो जब चाहो तब आ सकते हो ।

[आँक्टेवियस, ऐन्टोनी तथा उनकी सेना का प्रस्थान]

कैशस : तूफान ! टूट पड ! लहरो ! प्रचंड स्पर्धा से उठो ! सकट आ गया है । नाव को तूफान मे खेना है ।

ब्रूटस : लूसिलियस ! सुनो !

लूसिलियस . (निकट आ कर) प्रभु !

[अलग परस्पर बातें करते हैं ।]

कैशस : मेसाला !

मेसाला . (बढ़ कर) आज्ञा मेरे सेनापति !

कैशस मेसाला ! आज मेरा जन्मदिन है । आज ही मैं पैदा हुआ था । मुझे अपना हाथ दो मेसाला ! और मेरे साक्षी बनो कि अपनी इच्छा के विरुद्ध पोम्पी की भाँति मुझे भी अपनी स्वतंत्रता को युद्ध मे भोकना पड रहा है । तुम जानते हो कि मैं तो ऐपोक्यूरस के दार्शनिक सिद्धांतों को मानता हूँ, किंतु मुझे अब अपने विचार बदलने पड रहे हैं । कुछ-कुछ गकुन-अपगकुनों में विश्वास होने लगा है । जब हम सर्दिस से चले थे तब हमारे चलते ही दो विशाल ईगल पक्षी झपटे थे और हमारे सैनिकों के हाथों को कुरेद-कुरेद कर खाने लगे थे । फिलिपी तक तो वे हमारे साथ थे पर न जाने यहाँ से कहाँ चले गये ! उनके बदले कौए, गिद्ध, और चीले हमारे ऊपर मँडरा रही हैं, हमे झुक-झुक कर देख रही हैं, मानो हम उनके शिकार हो । उनकी दयाया कैसी भयानक चँदोवे-सी दिख रही है जिसके नीचे हमारी सेना ऐसी पडी है जैसे हम सबका अवश्यम्भावी नाश हो जायेगा !

मेसाला : ऐसा विश्वास मत करो ।

कैशस : मैं कुछ-कुछ ही ऐसा मानता हूँ क्योंकि वैसे मेरी आत्मा स्वस्थ है और हर तरह के सकट भेलने के लिये सतत तत्पर हूँ ।

ब्रूटस : लूसिलियस ! यही लगता है ।

कैशस : वीर और महान ब्रूटस ! देवता करे कि हम जितने मित्र हैं उतने ही वृद्ध होने पर शांतिकाल में भी एक दूसरे के प्रेमी बने रहे । किंतु मनुष्य के भविष्य के कार्य-कलाप सदैव अज्ञात होते हैं, अतः यदि कहीं हमारा सर्वनाश हो जाये तो हम क्या करे ? उस हालत में क्या यह हमारी अंतिम बातचीत है ? वताओ तब तुम क्या करोगे ?

ब्रूटस : उन विचारों के नियमानुसार जिनसे कि मैंने आत्महत्या कर लेने पर क्रेटो को दोषी ठहराया था, मैं उन्हीं महान शक्तियों के कार्यों की धैर्य से प्रतीक्षा करूँगा जो कि ऊपर से हम पर शासन कर रही हैं । भविष्य में क्या होने वाला है इस भय से मैं आत्मघात नहीं करूँगा, क्योंकि ऐसा करना तो कायरता है ।

कैशस : यदि हम इस युद्ध में पराजित हो जायें तो क्या तुम इससे संतुष्ट हो जाओगे कि वे लोग विजयोन्मत्त हो कर तुम्हें रोम की सड़को पर बंदी के रूप में घुमावें ?

ब्रूटस : नहीं कैशस नहीं ! रोम के वीर निवासी ! ऐसा मत सोचो ! कि ब्रूटस एक दास की भाँति बँध कर रोम जायेगा । वह कहीं अधिक विशाल हृदयवाला है । किंतु यही आज का दिन यह निश्चित करेगा कि १५ मार्च को जो कार्य प्रारंभ किया गया था वह चलता है कि समाप्त होता है । यह भी निश्चय हो जायेगा कि हम फिर मिल सकेंगे या नहीं । अतः आज विदाई स्वीकार करो । कैशस ! सदा के लिये विदा है । यदि हम फिर

मिल सकेंगे तो आनदोत्सव मनायेंगे और यदि नहीं तो फिर यह विदाई ही अल है ।

कैशस : ब्रूटस ! विदा ! सदा के लिये विदा ! यदि हम फिर मिलेंगे तो प्रसन्नता से हँसेंगे और यदि नहीं मिले तो कोई बात नहीं । यह विदाई ही श्लाघ्य है ।

ब्रूटस : तो आओ, बड़े चलो । कितना अच्छा होता यदि युद्ध के पूर्व ही इसका परिणाम ज्ञात हो जाता । किंतु यही सोचना पर्याप्त है कि दिन भी समाप्त होगा और परिणाम भी विदित ही होगा । आओ, आओ ! आगे बढ़ो !

[प्रस्थान]

दृश्य २

[फिलिपी के मैदान]

[युद्धस्थल]

[युद्धनाद । ब्रूटस और मेसाला का प्रवेश]

ब्रूटस . तुरत अश्वारूढ हो जाओ मेसाला ! और इन पत्रों को सेना में दूसरी ओर दे आओ !

[युद्धनाद बढ़ता है ।]

उनसे कहो तुरत आक्रमण कर दे क्योंकि अँक्टेवियस के सैन्यपक्ष में मुझे उतना उत्साह दिखाई नहीं देता । एक जोर का धक्का उन्हें उखाड़ देगा । घोड़ा दौड़ाओ मेसाला । तुरत जाओ । उनसे कहो एकदम टूट पड़ें ।

[प्रस्थान]



## दृश्य ३

[युद्धभूमि का अन्य भाग]

[ युद्धनाद । कैशस और टिटोनीयस का प्रवेश ]

कैशस : अरे देखो टिटोनीयस ! देखो मेरे कायर सैनिक कैसे भाग रहे हैं । मैं अपने ही आदमियों का दुश्मन हो गया हूँ ? मेरा ध्वजवाह ही भाग रहा था । मैंने कायर को मार डाला और उससे ध्वज ले लिया ।

टिटोनीयस : अरे कैशस ! ब्रूटस ने बहुत जल्दी कर दी । उसने ज्योंही आँकटेवियस को जरा दवाया, बहुत प्रसन्न हो उठा । उसके सैनिक लूटने में लग गये और डघर हमें ऐन्टोनी ने घेर लिया है ।

[पिन्डारस का प्रवेश]

पिन्डारस : मेरे स्वामी ! भागिये ! तुरत भागिये ! मार्क ऐन्टोनी आपके गिविर में घुस गया है । वीर कैशस, जितनी जल्दी भागा जा सके भागिये !

कैशस : यह पहाड़ी बहुत दूर है । क्या वही मेरे तम्बू हैं जिनमें आग लग रही है !

टिटोनीयस : हाँ श्रीमान् । वही हैं ।

कैशस : टिटोनीयस यदि तुम मुझे चाहते हो तो मेरे घोड़े पर चढ़ कर वायु-वेग से जाओ और मूचना लाओ कि वे सैनिक हमारे मित्र हैं या शत्रु !

टिटोनीयस : अभी लीजिये स्वामी ! तुरत आता हूँ ।

[प्रस्थान]

कैशस : पिन्डारस, तुम इस पहाड़ी पर ऊँचे चढ़ जाओ । मेरी आँखें कुछ कमजोर हैं । तुम टिटोनीयस को देखो और बताओ युद्ध-स्थल में क्या हो रहा है ।

[उसका पर्वतारोहण]

आज ही के दिन मेरा जन्म हुआ था और अब समय भी आ गया। आज ही मेरे जीवन का अंत होगा। कहो ! क्या समाचार है ?

पिन्डारस : (ऊपर से) आह मेरे स्वामी !

कैशस : क्या बात है ?

पिन्डारस : टिटोनियस घिर गया है और घुड़सवार उसका तेजी से पीछा कर रहे हैं। वह भी भाग रहा है। वे उसके पास पहुँच गये। कुछ घोड़ों से उतर रहे हैं। वह भी घोड़े से कूद पड़ा है। वह पकड़ा गया ! (कोलाहल) हाय ! सुनिये ! वे जय-ध्वनि कर रहे हैं।

कैशस और मत देखो ! नीचे आ जाओ। हाय मैं कितना कायर हूँ कि अभी तक जीवित हूँ कि मेरा इतना अच्छा मित्र भी पकड़ लिया गया।

[पिन्डारस उतरता है।]

कैशस : इधर आओ पिन्डारस ! पार्थिया में मैंने तुम्हे बंदी बनाया था। और तुम्हे जीवन-दान देते समय तुमसे शपथ ली थी कि जो भी काम मैं कहूँगा तुम वही करोगे ! आओ ! और अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करो ! अब से तुम एक स्वतंत्र नागरिक हो। यह अच्छी तलवार लो जो एक दिन सीज़र के शरीर में घुसी थी। इसे लो। मुझमें तर्क मत करो। पकड़ो, इसकी मूँठ पकड़ो। और जब तुम अपनी आँखें ढँक लो, जैसे मैंने ढँक ली है, इसे मेरे वक्ष में घुसा दो।

[पिन्डारस उसके तलवार मारता है।]

कैशस : सीज़र ! जिस तलवार से तू मारा गया था, उसी से तेरा

• प्रतिशोध ले लिया गया ।

[मृत्यु]

पिन्डारस : तो मैं अब स्वतन्त्र हूँ । यदि मैं चाहता तो भी स्वेच्छा से तो यह कार्य नहीं कर पाता । कैशस ! इस देश में पिन्डारस अब इतनी दूर भाग जायेगा कि कभी भी रोम-निवासी उसका पता नहीं लगा पायेंगे ।

[प्रत्यान]

[टिटीनियस और मेसाला का प्रवेश]

मेसाला : कैसा परिवर्तन हो रहा है । उधर वीर ब्रूटस ने ऑक्टवियस को हराया है, इधर ऐन्टोनी ने कैशस को पराजित कर दिया है ।

टिटीनियस : इस समाचार से कैशस को बड़ी सात्वना मिलेगी ।

मेसाला : तुमने उन्हें कहाँ छोड़ा था ।

टिटीनियस : इस पहाड़ी पर मैंने उन्हें बहुत ही निराश अवस्था में उनके पास पिन्डारस के साथ वहाँ छोड़ा था ।

मेसाला : क्या वे ही तो पृथ्वी पर नहीं लेटे हैं ?

टिटीनियस : हाय मेरे देवताओं ! वे तो जीवित-से नहीं लगते ।

मेसाला : क्या वे वही हैं ?

टिटीनियस : नहीं हैं नहीं, ये कहो ! अब कैशस नहीं रहे मेसाला ।

ओ झूठे हुए सूरज ! जैसे तू आज सध्या में अपनी आरक्त किरणों में खोया जा रहा है, ऐसे ही अपने ही रक्त में कैशस का दिन भी छिप गया है । रोम का सूर्य अस्त हो गया है । हमारा अवसर गया । मेघ घिरे है, ओस गिर रही है । सक्क झूल रहे हैं । हमारा नव कुछ चला गया । मुझमें अविश्वास होने के कारण ही ऐसा हुआ है ।

मेसाला : किंतु यह तो अपनी सफलता के अविश्वास के कारण ही हुआ है । वेदना की सतान ओ घृणित त्रुटि ! तू क्यो मनुष्यो को वही दिखाती है जो कि उसमे होता नहीं ! ओ त्रुटि ! जन्म से अत तक तू कभी सुखी जीवन व्यतीत नहीं करने देती ! तू तो अपनी जन्मदात्री माता को ही नष्ट कर देती है ।

टिटोनियस : लेकिन पिन्डारस कहाँ है ? पिन्डारस ! पिन्डारस !

मेसाला : उसे ढूँढो टिटोनियस, मैं वीर ब्रूटस से मिलने जा रहा हूँ । उसे यह सवाद दे दूँ । आह ! लोहे के भालो की तरह यह बात उसके हृदय को वेध डालेगी । विषवुभे तीर से भी उसे इतनी आपत्ति नहीं होगी जितनी इस समाचार से ।

टिटोनियस : जल्दी करो मेसाला ! तब तक मैं पिन्डारस को खोजता हूँ ।

[मेसाला का प्रस्थान]

वीर कैशस ! तूने मुझे क्यो भेज दिया ? वहाँ तो मुझे तेरे मित्र मिले थे ! क्या उन्ही ने मेरे सिर पर यह पुष्पमाल नहीं डाली ? उन्होने कहा था कि यह माला तुम्हे दे दूँ ! क्या तूने उनका जयनाद नहीं सुना था ? हाय ! तूने सब कुछ गलत समझा ! ले ! अब इस माला को पहन ले ! तेरे ब्रूटस ने कहा था कि इसे तुम्हे दे दूँ । मैं तो उसकी आज्ञा का पालन करूँगा । आओ ब्रूटस ! इधर आ कर देखो । मैने कैस कैशस को कैसा सम्मान दिया है ! देवनाओ ! आज्ञा दो ! यह रोम-निवासी का कर्त्तव्य है ! आ ! कैशस के खड्ग ! और टिटोनियस के हृदय को टटोल उठ !

[आत्मघात करता है ।]

[युद्धनाद । मेसाला का ब्रूटस, तरुण केटो, स्ट्रूटो, वोल्मनियस और लूसिलियस के साथ प्रवेश]

ब्रूटस : कहाँ है मेसाला ! कहाँ है उसका शरीर !

मेसाला : वह रहा । टिटीनियस दुःख मना रहा है ।

ब्रूटस : टिटीनियस का मुख ऊपर की ओर है ।

केटो : वह तो कत्ल हो गया है ।

ब्रूटस : ओ जूलियस सीजर ! तू अभी तक इतना शक्तिवान है ! तेरी आत्मा सर्वत्र विचरण कर रही है और हमारे खड्गों को हमारे ही शरीरों में घुसेड रही है ।

[मंद युद्धनाद]

केटो : वीर टिटीनियस ! देखो ! इसने मृत कैशस को विजयहार पहनाया है ।

ब्रूटस . क्या ऐसे दो रोम-निवासी और भी जीवित हैं ? ओ अंतिम रोम-निवासियों ! तुम्हें विदा ! यह असंभव है कि अब रोम में तुम जैसी संतान जन्म ले । मित्रो, जो आंसू में बहा रहा हूँ, इस मृत व्यक्ति के लिये तो मुझे उनसे कहीं अधिक बहाने होंगे । किंतु उसके लिये तो मुझे समय निकालना होगा । आओ, अब इसके शव को धैसोस भेज दे । इसका दाह-संस्कार हमारे शिविरो में उचित न होगा क्योंकि उससे हमें असुविधा होगी । आओ लूसिलियस, आओ तरुण केटो, हम युद्धभूमि में चलें । लेवियो और प्लेवियस युद्ध जारी रखो ! इस समय तीन वजे हैं और रात्रि से पूर्व ही हमें दुवारा लउ कर भाग्य की परीक्षा करनी चाहिये ।

[प्रत्यान]

## दृश्य ४

[युद्धभूमि का अन्तस्थल]

[युद्धनाद । दोनों ओर के लड़ते हुए योद्धाओं का प्रवेश । फिर ब्रूटस, तरुण केटो, लूसिलियस तथा अन्यो का प्रवेश]

ब्रूटस : स्वदेशवासियो ! साहस रखो । गर्व से सिर उठाओ ।

केटो : कौन ऐसा नीच है जो ऐसा नहीं करता ! मेरे साथ कौन चलेगा ? मैं अपना नाम युद्धभूमि में घोषित करूँगा । सुनो ! मैं मार्क्स केटो का पुत्र हूँ । मैं अत्याचारियों का शत्रु हूँ, मैं अपने देश का हितचिंतक हूँ । सुनो ! मैं मार्क्स केटो का पुत्र हूँ ।

[शत्रु पर आक्रमण करता है ।]

ब्रूटस : ओर मैं ब्रूटस हूँ । मार्क्स ब्रूटस । मैं ब्रूटस ! स्वदेश-मित्र हूँ, मुझे, ब्रूटस को, पहचानो ।

[शत्रु पर आक्रमण करते हुए प्रस्थान । केटो घिर जाता है । गिरता है ।]

लूसिलियस : ओ तरुण और वीर केटो ! तुम युद्धभूमि में गिर गये हो । तुम भी टिटोनीयस की भाँति वीरता से मरे हो और अपने पिता केटो के सच्चे आदरणीय और योग्य पुत्र हो !

एक सैनिक : या तो आयुध डाल दो या मार दूँगा ।

लूसिलियस : मैं यह ही समर्पण करता हूँ । मैं तुम्हें मुझे शीघ्र मार डालने के लिये यह धन देता हूँ । (देता है) मैं ब्रूटस हूँ और मुझे मार कर गौरव के पात्र बनो ।

एक सैनिक : नहीं-नहीं । यह एक वीर वदी है ।

दूसरा सैनिक : मारो मत । हटो-हटो ! जा कर ऐन्टोनी को सूचना दो कि ब्रूटस पकड़ा गया ।

एक सैनिक : मैं जाता हूँ । लो सेनापति ही आ गये ।

[ऐन्टोनी का प्रवेश]

ब्रूटस पकड़ा गया। मेरे स्वामी, ब्रूटस पकड़ा गया।

ऐन्टोनी : कहाँ है वह।

लूसिलियस : ब्रूटस सुरक्षित है ऐन्टोनी ! मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि ऐसा कोई शत्रु नहीं जो महान ब्रूटस को जीवित पकड़ सके। इस महान अपमान से स्वयं देवता उसकी रक्षा करते हैं। जब भी तुम उसे जीवित या मृत पाओगे वह वैसा ही मिलेगा जैसा कि ब्रूटस को होना चाहिये।

ऐन्टोनी : नहीं मित्रो ! यह ब्रूटस नहीं है, किंतु मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि इसे पकड़ लेना भी कम मूल्य नहीं रखता। इसे सुरक्षित रखो। इससे भद्र और दयापूर्ण व्यवहार करना। ऐसे मनुष्यों का शत्रु की अपेक्षा मित्र होना मैं अधिक पसंद करता। आगे बढ़ो और जा कर देखो कि 'ब्रूटस जीवित है या मर गया है। ऑक्टेवियस के निजिर में मुझे सूचना दो कि क्या परिस्थिति है।

[प्रन्थान]

दृश्य ५

[ब्रूटस की एक अन्य भाग]

[ब्रूटस, जार्जेनियस, क्लीटस, स्टैटीलियस और वोल्तुर्नियस का प्रवेश]

ब्रूटस : आओ मेरे थोड़े-से बचे हुए मित्रो ! इस चढ़ान पर आराम करो।

क्लीटस : स्टैटीलियस ने प्रकाश विक्षेप किया था परंतु वह लौट कर नहीं आया स्वामी ! या तो वह पकड़ा गया, या मारा गया।

ब्रूटस : बैठ जाओ क्लीटस। मारना तो सहज है। एक रिक्काब बन गया है। सुनो क्लीटस।

[कान में कुछ कहता है।]

क्लीटस : कौन मैं ! स्वामी ! नहीं ससार में किसी मोल पर भी नहीं कर सकता मैं ऐसा ।

ब्रूटस : तो चुप रहो । बोलो मत ।

क्लीटस : इससे तो मैं अपने को ही मार डालूँगा !

ब्रूटस . सुनो ! डार्डेनियस !

[कान में कहता है ।]

डार्डेनियस : क्या मैं ऐसा काम करूँगा ?

क्लीटस : क्यों डार्डेनियस !

डार्डेनियस : हाँ क्लीटस ।

क्लीटस ब्रूटस ने ऐसी क्या कटु बात तुझसे कही ?

डार्डेनियस : उसने कहा कि उसे मैं मार डालूँ । देखो । वह कुछ सोच रहा है ।

क्लीटस : आह ! वह गौरवान्वित पात्र कितनी वेदना से भर गया है कि आँखों से पानी उमड़ कर निकल रहा है ।

ब्रूटस : मेरे अच्छे वोलम्नियस ! यहाँ आ मेरी बात सुन ।

वोलम्नियस आज्ञा मेरे स्वामी !

ब्रूटस : बात यह है वोलम्नियस, कि सीजर का प्रेत मुझे रात में दो बार दिख चुका है । एक बार सर्दिस में, और एक बार कल फिलिपी की युद्धभूमि में । मुझे लगता है मेरा समय आ गया है ।

वोलम्नियस : नहीं स्वामी ! मुझे तो नहीं लगता ।

ब्रूटस : नहीं वोलम्नियस ! मुझे निश्चय है कि मेरा अंत निकट आ गया है । तू तो देख ही रहा है कि क्या परिस्थिति है । हमारे शत्रुओं ने हमें पूर्ण रूप से हरा दिया है ।

[युद्धनाद, मर्दम]



अब हम गड्ढे के किनारे हैं। उसमें स्वयं ही कूद पड़ना हमारे लिये श्रेयस्कर है न कि हम इसकी प्रतीक्षा में बैठे रहे कि शत्रु आये और हमें उसमें धक्का दे। भोले वोलम्नियस ! तुझे याद है। हम तुम साथ-साथ पाठशाला में पढ़ने जाया करते थे। उसी पुरातन स्नेह का स्मरण करके, मैं प्रार्थना करता हूँ, तू मेरी तलवार की मूँठ पकड़ कर रुका रह। मैं दौड़ कर इसकी धार पर उतरना चाहता हूँ।

वोलम्नियस : मेरे स्वामी ! यह तो कोई मित्र का कर्त्तव्य नहीं है।

[ युद्धनाद कम होता है। ]

क्लोटस : भागिये स्वामी ! भागिये ! यहाँ ठहरना उचित नहीं।

ब्रूटस : तुम सबको विदा। तुमको, सबको। तुम्हें भी वोलम्नियस ! स्ट्रूटो ! तू अभी तक सोता ही रहा। तुझे भी विदा ! देगवुओ ! मेरे हृदय में इसकी बड़ी प्रसन्नता है कि मेरे सारे जीवन में कोई भी मुझे ऐसा साथी नहीं मिला, जिसने मुझे धोखा दिया हो। ऑन्टेवियस और मार्क एन्टोनी को इस कुटिल विजय ने जो गौरव मिलेगा, उससे कहीं अधिक मुझे अपनी पराजय से मिल रहा है। अब तुम सबको विदा ! ब्रूटस ने अपने प्रतिम शब्द कह दिये हैं। अधिकार मेरी पल्लकी पर झूल रहा है, मेरे अस्त्रिपिंजर ने जिस विश्राम-बेला को लाने के लिये इतना श्रम किया है, अब वह अनंत विश्राम के उसी क्षण के निवृत्त आ गया है।

[ युद्धनाद। नेपथ्य में : भागो ! भागो ! भागो ! ]

क्लोटस : भागिये, स्वामी ! भागिये !

ब्रूटस : तू चल। मैं आता हूँ।

[क्लोटस, डाट्रेनियस, और वोलम्नियस का प्रस्थान]

स्ट्रेटो, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू अपने स्वामी का साथ न छोड़ना। तू सदैव ही मानवोचित वीरता से सपन्न रहा है। तूने सदैव जीवन में सम्मान ही प्राप्त किया है। ले मेरी तलवार पकड़ ले कि मैं इस पर झपट पड़ूँ। अपना मुँह उधर कर ले। स्ट्रेटो ! कर सकेगा ऐसा ?

स्ट्रेटो : पहले मुझे अपना हाथ पकड़ाओ। यह हमारी विदा है।

ब्रूटस : विदा मेरे अच्छे स्ट्रेटो।

[उसकी तलवार से कटता है।]

सीज़र ! अब गात हो जा। जितनी इच्छा से मैं अपने को मार रहा हूँ, तुझे मारने की मुझे उससे आधी भी इच्छा नहीं थी।

[मरता है।]

[युद्धनाद। पीछे लौटना। ऑक्टेवियस, एन्टोनी, मेसाला, लूसिलियस और उनकी सेना का प्रस्थान।]

ऑक्टेवियस : वह कौन आदमी है ?

मेसाला : मेरे स्वामी का आदमी है स्ट्रेटो ! तेरा स्वामी कहाँ है ?

स्ट्रेटो : वह उस वधन से मुक्त हो गया है मेसाला, जिसमें तुम बँधे हुए हो।

विजेता केवल उसे जला सकते हैं, क्योंकि ब्रूटस ने अपने आपको मिटा दिया। उसकी मृत्यु का गौरव किसी और को नहीं मिल सकता।

लूसिलियस : किंतु ब्रूटस का शव मिलना चाहिये। ऐसा करके तुमने अच्छा ही किया ब्रूटस ! मैं तुम्हारा अभिवादन करता हूँ कि तुमने अपने लूसिलियस के शब्दों को सत्य प्रमाणित कर दिया।

ऑक्टेवियस : जो ब्रूटस के सेवक थे मैं उन सबको अपनी सेवा में ले

सकता हूँ । (स्ट्रूटो से) क्या तू अपना शेष जीवन मेरी सेवा में व्यतीत करेगा !

स्ट्रूटो : हाँ, यदि मेसाला चाहेंगे कि मैं आपके यहाँ सेवा करूँ ।

आँक्टेवियस : अच्छे मेसाला ! यही करो ।

मेसाला : स्ट्रूटो ! मेरे स्वामी का निघन किस प्रकार हुआ ?

स्ट्रूटो . मैंने तलवार पकड़ी और वे इस पर उतर गये ।

मेसाला : आँक्टेवियस ! तो तुम इसे अपनी सेवा में ले जाओ । इसी ने अत तक मेरे स्वामी की सेवा की है ।

एन्टोनी : उन सबमें यही सबसे वीर और गौरवमय रोम-निवासी था । इसके अतिरिक्त सारे पद्ध्यन्त्रकारी महान सीज़र के प्रति ईर्ष्या रखते थे, एक यही था जो ईमानदारी से यह मानता था कि इसी में सार्वजनिक लाभ था । इसी से यह उनसे मिला था । इसका जीवन सादा था और उसमें प्रकृति ने इस प्रकार तत्वों का सम्मिलन किया था कि वह सारे ससार से कह सकती है कि . यह एक मनुष्य था !

आँक्टेवियस : इसके गुणों का ध्यान रगते हुए इसकी दाह-क्रिया का संस्कार सम्मान सहित करना चाहिये । एक वीरसैनिक की भाँति आज इसका शरीर मेरे ही शिविर में रहेगा, और उसका सम्मान होगा । समस्त सेना को आज्ञा दो कि ग्रय विश्राम किया जाय । चलो, तब तक हम विजय-श्री से प्राप्त गौरव को परस्पर वितरित करें और आनन्दोत्सव मनायें ।

[प्रस्थान]